ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष: 67 | अंक: 11 | नवंबर 2016

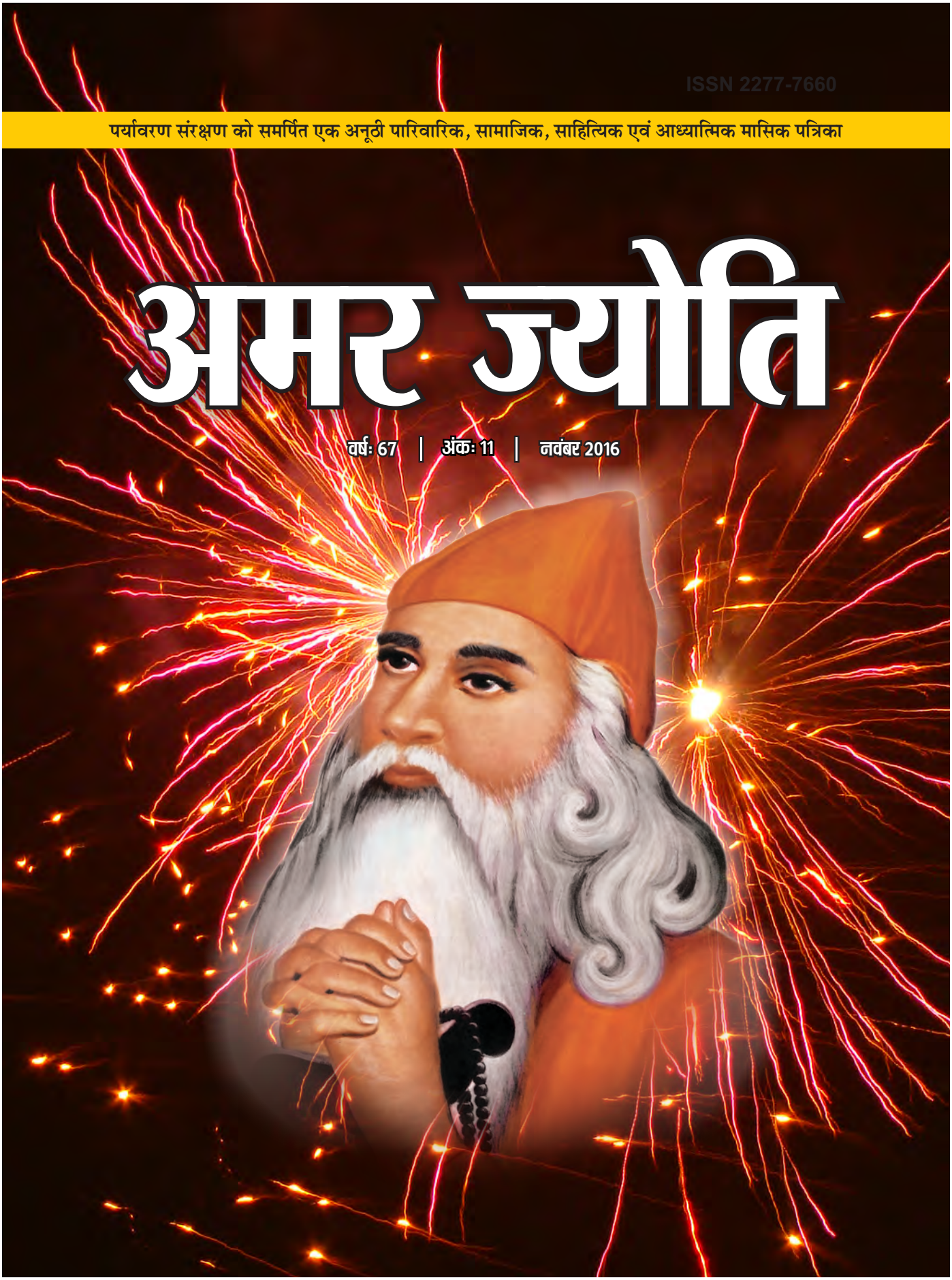

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2073 मार्गशीर्ष की अमावस्या

लगेगी-28.11.2016 सोमवार दिन 3.20 बजे

उतरेगी-29.11.2016 मंगलवार सायं 5.47 बजे

सम्वत् 2073 पौष की अमावस्या

लगेगी-28.12.2016 बुधवार प्रात: 10.36 बजे

उतरेगी-29.12.2016 गुरुवार दिन 12.22 बजे

सम्वत् 2073 माघ की अमावस्या

लगेगी-26.1.2017 गुरुवार रात 5.01 बजे

अर्थात् 27.1.17 शुक्र. को सूर्योदय से पहले

उतरेगी-27.1.2017 शुक्रवार रात 5.36 बजे

अर्थात् 28.1.17 शनि. को सूर्योदय से पहले

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 100
आजीवन सदस्यता : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-57	4
सम्पादकीय	5
साखी	6
जाम्भाणी भक्तिधारा के परिप्रेक्ष्य में भक्ति-आंदोलन....	8
जांभाणी हरजस: राग खंभावची, राग धनांसी	14
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	15
अश्वघोष के महाकाव्यों में जीवन-मूल्य	16
सुखी जीवन का आधार	18
आधुनिक युग में जम्भेश्वर वचनों की पालना अति आवश्यक	19
बधाई सन्देश	21
फतेहाबाद में हर्षोल्लास से मनाया बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस	22
दिल्ली में धूमधाम से मनाया गया बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस	23
आसोज मेला मुक्तिधाम मुकाम : एक झलक	24
मुक्तिधाम मुकाम में मनाया 532वां धर्म स्थापना दिवस	26
अथाह समुद्र की तली कब मिलेगी?	27
भारतीय संस्कृति और बिश्नोई समाज	28
जम्भकथा	29
जांभाणी साहित्य के विकास में आलमजी का योगदान	31
मुलतान से मुरादाबाद और सिरसा से सांचौर तक-वैदिक भूमि	35
रेवाड़ी विश्वविद्यालय में वील्हो जी पर संगोष्ठी आयोजित	39
समाचार (विविध)	40-42

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद 57

"दोहा"

सैसों सतगुरु सूं कहै, सुणिये सतगुरु भेव।
सामों बोहता म्हे कियो, सुरगा तणों ज देव।

नाथुसर गांव का सैंसा गुरु जम्भेश्वर जी का परम भक्त था। यदा कदा सम्भराथल पर आया करता था। जब दान की चर्चा चली तो सैंसा भक्त कहने लगा- हे देव! मैने स्वर्ग प्राप्ति के लिये बहुत ही दान पुण्य किया है। सैंसा भक्त तो था किन्तु धनी होने से धन दान का अभिमान भी बहुत ही ज्यादा था। उस अभिमान को तोड़ने के लिये गुरु जाम्भोजी रूप बदलकर उसके घर से भिक्षा भी मांगी थी। सैंसे की धर्मपत्नी ने भिक्षा तो नहीं दी किन्तु भिक्षापात्र चिंपी को अवश्य ही खण्डित कर दिया। जो अब भी जांगलू के मन्दिर में विद्यमान है। श्री देवजी ने सबद सुनाया।

सबद-57

ओ३म् अति बल दानों सब स्नानों, गऊ कोट जे तीरथ दानों, बहुत करै आचारूं।

भावार्थ- "अति सर्वत्र वर्जयेत" अत्यधिक दिया हुआ दान भी फलीभूत नहीं होता क्योंकि उसमें सुपात्र कुपात्र का विचार किये बिना ही दिया जाता है तथा वह दान केवल इह लोक में यश बढ़ाने के लिये ही दिया जाता है सभी तीर्थों में स्नान कर लिया जाय और वहां करोड़ों गऊवें भी दान में दे दी जाय अन्य भी सभी तीर्थों के आचार-विचार पूर्ण कर लिया जाय तो भी दान का अन्तपार नहीं पाया जा सकता।

ते पण जोय जोय पार नहीं पायो, भाग परापति सारूं।
घट ऊंधे बरषत बहु मेहा, नीर थयो पण ठालूं।

केवल अति दान के बल पर तो पार नहीं पाया जा सकता अर्थात् सर्वोच्च पद को प्राप्त नहीं कर सकते। मिलेगा तो उतना ही जितना तुमने दिया है। पूर्व जन्म का कर्म ही दूसरे जन्म में भाग्य बनकर आता है। उस सर्वोच्च पद के लिये तो दान के साथ ही साथ अन्य उपासना, ध्यान आदि क्रियाओं की भी आवश्यकता है। किन्तु तुमने शरीर रूपी घड़ा तो धारण कर लिया है, शरीर रूपी घट तो तुझे दान के प्रभाव से प्राप्त हो गया है, किन्तु इसको तुमने उल्टा कर रखा है। अब चाहे इस पर कितनी ही ज्ञान रूपी वर्षा हो इसमें एक बूंद भी जल-ज्ञान नहीं गिरेगा तथा जब तक इसमें अमृतमय जल-ज्ञान नहीं भरेगा, तब तक सुख की आशा कदापि नहीं करनी चाहिए।

को होयसी राजा दुर्योधन सो, विष्णु सभा महलाणो।
तिण ही तो जोय जोय पार नहीं पायो, अधविच रहीयो ठालूं।

राजा दुर्योधन अति अभिमानी था क्योंकि मद के साधन सभी उसके पास उपलब्ध थे। उस दुर्योधन ने भगवान कृष्ण-विष्णु को अपनी सभा में बुलाया था। श्री कृष्ण को अति निकट से दुर्योधन ने देखा था तथा सुना था किन्तु वह पार नहीं पा सका। कृष्ण को अच्छी तरह से जान नहीं सका था क्योंकि राज मद में मस्त जो था, कैसे जान पाता? इसलिये दुर्योधन बीच में ही रह गया, न तो उपर जा सका और न ही नीचे ही पूर्णतया गिर सका। न तो परमात्म तत्व को प्राप्त कर सका और न ही राज्य ही भोग सका बीच में ही मृत्यु का ग्रास बन गया।

जपिया तपिया पोह बिन खपिया, खप खप गया इवाणी।
तेऊ पार पहुंता नाही, ताकी धोती रही अस्मानी।

तथा अन्य भी जप करने वाले, तप करने वाले, तपस्वी इन्होंने भी बिना मार्ग जाने वैसे ही जीवन बर्बाद कर दिया। उन्हें जप-तप का अभिमान था, तो कैसे सद्मार्ग को ग्रहण करते, बिना सद्मार्ग पार भी कैसे पहुंचते। पार तो वे भी नहीं पहुंचे जिनकी धोती आकाश में सूखा करती थी, अर्थात् वे लोग अपने को सिद्ध मानते थे किन्तु सिद्धि भी तो मुक्ति के लिये बाधा ही है। इसलिए अभिमान वृद्धि कारक सभी कार्य सफलता को प्राप्त नहीं करवा सकते।

साभार- जम्भ सागर

सम्पादकीय

खिमां रूप तप कीजै

एक अंग्रेजी कहावत है- 'To error is human and to forgive is divine' अर्थात् मनुष्य गलती का पुतला है और क्षमा करना देवत्व है। हम सभी जाने अनजाने में प्रतिदिन अगणित गलतियां करते हैं और स्वभाववश सॉरी 'Sorry' भी कहते हैं परन्तु जब अपने प्रति अपराध करने वाले के प्रति क्षमा करने का प्रश्न आता है तो हम अपना आपा खोने लगते हैं। अपने प्रति किए गये अपराध को भूलकर सामने वाले को क्षमा करना एक वीरतापूर्ण कार्य है, जिसे करना कठिन अवश्य है परन्तु इसका परिणाम अत्यन्त सुखद होता है। कुछ क्षमा न कर सकने वाले सज्जन इसे कायरता मानते हैं परन्तु वास्तव में यह वीरों का आभूषण हैं- 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'। एक समर्थ व सक्षम व्यक्ति ही दूसरे को क्षमा कर सकता है क्योंकि इसमें क्रोध को शान्ति से जीता जाता है जो हर किसी के वश की बात नहीं है।

'क्षमा' मानवता का वह आभूषण है जिसे धारण करने से प्रतिरोध, प्रतिशोध, प्रतिकार, निर्दयता, वाद-विवाद, झगड़े और हिंसा से छुटकारा मिलता है तथा दया, सहानुभूति, उदारता, प्रेम, संतोष एवं वैराग्य की भावना का विकास होता है। किसी को उसकी भूल के लिए क्षमा करके उसको आत्मग्लानि से मुक्त करना एक बहुत बड़ा उपकार है। इसके विपरीत किसी को उसकी भूल के लिए क्षमा न करके दण्ड देना सामने वाले के जीवन में तो विष घोलता ही है साथ ही दण्ड देने वाले को भी मानसिक सुख नहीं मिलता है। किसी को क्षमा न करके सुख खोजना ऐसा ही है जैसे स्वयं विषपान करना और आशा करना कि उसका प्रभाव दूसरों पर पड़े।

क्षमा केवल प्रदर्शन की वस्तु नहीं होती अपितु अंत:करण की निधि होती है। क्षमा करने से हृदय निर्मल होता है और उसमें शांति की बेल पनपती है। क्षमा से अहिंसा को नया आयाम मिलता है। क्षमा जीवन जीने की निर्दोष प्रक्रिया है जिससे मनोबल बढ़ता है। क्षमा ऐसा रत्न है जिसे मनीषियों ने सदैव सराहा है तथा उनकी आत्मा ने पहना है। यह समता का आधार तथा सामाजिक शिष्टता का अलंकरण होती है। क्षमा को धारण किए बिना पशुभाव से छुटकारा संभव नहीं है। अपराध या भूल करने वाला तो जाने अनजाने में गलती कर चुका होता है और वह अपराधबोध से ग्रस्त होकर ही क्षमा मांगता है, क्षमा मांगने से उसका अपराधबोध तो समाप्त हो जाता है फिर यदि हम उसे क्षमा नहीं करते तो कालांतर में उस बोध से हमें ग्रस्त होना पड़ता है, जो मानसिक पीड़ा का कारण बनता है।

वस्तुत: क्षमा करने से अहंकार गलता है, सुसस्कार पलता है। क्षमा-शीलवान का शस्त्र है, प्रेम का परिधान है, विश्वास का विधान है, सृजन का सम्मान है, नफरत का निदान है, पवित्रता का प्रवाह है, नैतिकता का निर्वाह है, सद्गुण का संवाद है, अहिंसा का अनुवाद है, दया की ज्योति है, मानवता का मोती है। इससे प्रतिशोध की भावना का नाश और मैत्रीभाव का विकास होता है।

क्षमा को मानवता का उच्चभाव मानते हुए ही परम गुरु जम्भेश्वर जी भगवान ने इसे अपनी 29 धर्म नियमों की आचार संहिता में स्थान दिया है। इतना ही नहीं गुरु महाराज ने क्षमा करने को एक बहुत बड़ी तपस्या मानते हुए अपनी 'सबदवाणी' में कहा है- 'खिमां रूप तप कीजै'। हमें चाहिए कि हम गुरु महाराज के वचनों की पालना करते हुए क्षमा रूपी तप करके दूसरों को सुख दें व स्वयं पुण्य के भागी बनें।

अज्ञात कवि कृत साखी

तारण हार थलासिर आयो, जे कोई तिरै सो तिरियो जीवने।टेक।
जे जीवड़ै रो भलपण चाहो, सेवा विसन जी री करियो।1।
मिनखा देही पड़ै पुराणी, भले न लाभै पुरियो।2।
मत खीण्य जुण्य पड़ पुंणेरी, वले नै लहिस्यो परीयो।3।
अड़सठ तीर्थ एक सुभ्यागत, घर आये आदरियो।4।
देवजी री आस विसन जी री संपत, कूड़ी मेर न करियो।5।
उनथ नाथ अनवी निवाया, भारथ ही अण करियो।6।
रावां सुं रंक रंके राजिन्दर, हस्ती करै गाडरियो।7।
उजड़ बासा बसै उजाड़ा, शहर करै दोय घरियो।8।
रीता छालै छला रीतावै, समंद करै छिलरियो।9।
पाणी सूं घृत कुड़ी सूं कुरड़ा, सो घीता बाजरियो।10।

भावार्थ- जन साधारण को सचेत करते हुए कवि कहता है कि संसार सागर से पार उतारने के लिये सम्भराथल पर स्वयं विष्णु अवतार धारण करके आये है। उनका यहां आने का मात्र प्रयोजन यही है। यदि कोई संसार सागर से मुक्ति चाहता है तो सम्भराथल पहुंचे और जाम्भोजी की शरण ग्रहण करें।1। यदि जीवात्मा का उद्धार चाहते हैं तो सम्भराथल पहुंचें और वहां जाकर स्वयं विष्णु की सेवा करें। श्रद्धा से नम्र होकर उनके सबद श्रवण करें, यही उनकी सेवा होगी।2। यह मानव देह मिली है किन्तु इस बार अवसर चूक गये तो फिर बार-बार मौका नहीं मिलेगा क्योंकि **'विरखे पान झड़े झड़ जायेला ते पण तई न लागूं'** (सबद) यह शरीर ही एक नगरी है, इसमें बैठा हुआ जीवात्मा सुख सुविधा सम्पन्न है दूसरे शरीरों में ऐसी सम्पन्नता कहां है? इसलिए महत्वपूर्ण है। कहा भी है- **काया कोट पवन कुटवाली कुकर्म कुलफ बणायो।3।** हिन्दू शास्त्रों में अड़सठ तीर्थ प्रसिद्ध है, जहां पर भी संत महापुरुष ने तपस्या की है उस भूमि तथा जल को पवित्र किया है उस जल में स्नान करने को ही तीर्थ कहते हैं।

कंचन पालट करै कथिरो, खल नारेलो गिरियो।11।
पांचा कोड़्या गुरु प्रहलादो, करणी सीधो तिरियो।12।
हरिचन्द राव तारा दे राणी, सत सूं कारज सरियो।13।
काशी नगरी मां करण कमायो, साह घर पाणी भरियो।14।
पांचू पाण्डू कुंतादे माता, अजर घणे रो जरियो।15।
सत के कारण छोड़ी हथनापुर, जाय हिमालय गरियो।16।
कलियुग दोय बड़ा राजिन्दर, गोपीचन्द भरथरियो।17।
गुरु वचने जो गूंटो लियो, चूको जामण मरियो।18।
भगवी टोपी भगवी कंथा, घर-घर भिखीया नै फिरियो।19।
खांडी खपरी लै नीसरियो, धोल उजीणी नगरियो।20।
भगवी टोपी थलसिर आयो, ओ गुरु कह सो करियो।21।

इन तीर्थों में स्नान करना जो बहुकष्ट तथा धन साध्य है। जहां तक बराबरी का सवाल है वह अड़सठ तीर्थों में चाहे स्नान कर आओ, चाहे घर आये हुए सुभ्यागत का आदर सत्कार करें, ये दोनों ही बराबर हैं। श्रम, कष्ट तथा धन से सुभ्यागत का सत्कार करना सरल है और तीर्थों में स्नान करना दुष्कर है किन्तु पुण्य में बराबर है। कहा भी है- **अड़सठ तीर्थ हिरदा भीतर बाहर लोका चारूं। तथा कोई कोई गुरु मुखी बिरला न्हायो।4।** जो कुछ भी संसार में दृष्टिगोचर होता है वह सभी कुछ विष्णु परमात्मा की ही संपत्ति है। यदि धन संपत्ति चाहते हैं तो प्राप्ति की आशा केवल विष्णु से ही रखें, वही दाता है, दुनिया तो सभी भिखारी है तथा जो कुछ भी प्राप्त हो चुका है उसमें झूठा मेरापन न रखें, अन्यथा फंस जायेंगे।5। जिन्होंने झूठी मेर की है उन्हें परमात्मा ने झुकाया है, उन्हें धर्म के मार्ग पर बैलों को हल चलाने की भांति नाथ डालकर चलाया है। उदाहरण स्वरूप महाभारत जैसा युद्ध दुर्योधन की अहं भावना का ही परिणाम था। कहा भी है- **तउवा माण दुर्योधन माण्या अवर भी माणत माणूं।6।** समय परिवर्तनशील है। जो कभी राजा थे, उन्हें तो रंक

बनते हुए देखा है और रंक से राजा बनते हुए देखा गया है।

गुरुदेव ने कृष्णचरित्र से मुहमदखां नागौरी के हाथी को भेड़ का बच्चा बना दिया था। यही सभी कुछ विष्णु के चरित्र से संभव हो जाता है।7। जहां पर कहीं उजाड़ था यानि मानव का नामोनिशान नहीं था वहां पर तो विष्णु की माया से बड़े-बड़े शहर बस गये और जहां पर शहर थे वहां पर उजाड़ हो गया है। जहां पर मात्र दो ही घर थे वहां पर नगरी तथा जहां पर नगरी थी वहां पर केवल दो घर ही देखने में आते हैं। विष्णु की माया से असंभव को भी संभव होता देखा गया है।8। जहां पर खाली था वहां तो भर दिया जाता है और भरे हुए को खाली कर देते हैं। जहां पर समुद्र था वहां पर तो बालुकामय क्षण भर में हो जाता है। कहीं समुद्र का छिलरिया बना दिया गया है तो कहीं समुद्र लहरा रहा है। यही सभी कुछ विष्णु की माया से सम्भव हो सकता है।9।

जल का घृत, तोड़ी गयी बाजरी पर पुनः सिटा लगा देना यह कोई जादूगर का खेल नहीं है। यह अनहोनी भी होनी कर देना विष्णु की ही करामात है। ऐसा चरित्र गुरुदेव ने रतने को दिखाया था।10। स्वर्ण को पलट करके कथीर कर देना और खलि को नारियल कर देना यह भी विष्णु चरित्र के अतिरिक्त होना असंभव है। ऐसा चरित्र गुरुदेव ने ऊदोजी नेण तथा गंगापार के बिश्नोइयों को दिखाया था।11। उन्हीं तारने वाले विष्णु परमात्मा की शरण ग्रहण करके जिन लोगों ने अपना तथा अपने साथ अपनी आज्ञाकारिणी प्रजा का उद्धार किया है उन्हें बतला रहे हैं।

सर्वप्रथम सतयुग में प्रह्लादजी ने कर्त्तव्य कर्म का पालन करते हुए अपने साथ पांच करोड़ जीवों का उद्धार किया और आगामी युगों में भी अपने बिछुड़े हुए साथियों के उद्धार का वरदान नृसिंह भगवान से मांगा था। उसी कड़ी में त्रेता में हरिश्चन्द्र एवं उनकी धर्म पत्नी तारा एवं रोहितास ये तीनों प्राणी सत्य की रक्षा करते हुए अपनी नगरी राज को छोड़कर काशी में जाकर कालू स्याह के घर बिक गये थे। नीच के घर चाकरी करना स्वीकार किया किन्तु सत्य को नहीं छोड़ा, उसी सत्य के बल पर अपने साथ अपनी प्रजा तथा त्रेतायुग का नेतृत्व करते हुए सात करोड़ का उद्धार किया यह भी विष्णु के वरदान से ही संभव हुआ था।13-14।

द्वापर युग में पांच पांडव तथा द्रोपती एवं कुन्ती माता ने धर्म रक्षार्थ जरणा करी। वन-वन खाक छानते फिरे परन्तु धर्म को नहीं छोड़ा, अन्त में राज्य प्राप्त होने पर भी राज्य को छोड़कर हिमालय में जाकर शरीर को त्याग दिया किन्तु धर्म पर अटल रहे। इसी कारण से नौ करोड़ का उद्धार कर सके। द्वापर का नेतृत्व इन्होंने ही किया था।16।

इस कलयुग में दो बड़े राजा हुए उन्हें गोपीचन्द और भरथरी के नाम से जानते है। इन दोनों ने राज-पाट छोड़कर अपने जीव की भलाई के लिये गुरु की शरण ग्रहण की तथा चतुर्थ आश्रम संन्यास स्वेच्छा से ग्रहण किया। कहां तो राज-पाट सुख भोग थे और कहां गुरु द्वारा भगवी टोपी और भगवां चोला पहनकर हाथ में खण्डित खपरी लेकर अपनी ही नगरी धोल तथा उज्जैनी में घर-घर जाकर भिक्षा मांगी, स्वकीय कल्याणार्थ स्वाभिमान गिराना होगा तभी कल्याण का रास्ता खुल पाता है। कहा भी है- **'क्रोड़ निनाणवै राजा भोगी गुरु के आखर कारण जोगी, माया राणी राज तजीलो गुरु भेंटीलो जोग संझीलौ।'** वही भगवान विष्णु ही गोरख गुरु की भांति भगवी टोपी धारण करके सौभाग्य से सम्भराथल पर आये हुए है तो अवश्य ही सम्भराथल पर पहुंचकर शरण ग्रहण करें।21।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

जाम्भाणी भक्तिधारा के परिप्रेक्ष्य में भक्ति-आंदोलनः एक पुनर्मूल्यांकन

कोई आंदोलन हो या काव्य-प्रवृत्ति सबके उद्‌भव के कुछ प्रेरणा-स्रोत होते हैं, ऐतिहासिक सामाजिक पृष्ठभूमि होती है। अंग्रेज विद्वान जार्ज ग्रियर्सन ने तो उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन के बारे में कहा कि "बौद्ध-आंदोलन के बाद मध्यकाल में अचानक बिजली की चमक की तरह भक्ति-आंदोलन का उदय हो गया, जिसके बारे में कोई नहीं जानता कि उसका कारण क्या था। ग्रियर्सन की विद्वत्ता भी इसका कारण नहीं बता सकी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देने की कोशिश की -'देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया। उसके सामने ही देव मंदिर गिराए जाते थे, देवमूर्तियाँ तोड़ी जाती थी और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। ...अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की भक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?' एक तो आचार्य शुक्ल के द्वारा बताई गई मनोदशा ऐतिहासिक नहीं है, दूसरे, तर्कसंगत भी नहीं है। यदि मंदिर तोड़े जा रहे थे और देव-मूर्तियाँ तोड़ी जा रही थी, तो मंदिर में रहने वाले ईश्वर और मूर्तियों में प्रतिष्ठित देवगण क्यों नहीं कुछ कर रहे थे, आक्रमणकारियों को ध्वस्त क्यों नहीं कर रहे थे। यदि वे अपनी ही रक्षा नहीं कर पा रहे थे, तो जनता का ध्यान उनकी ओर कैसे जाएगा? आचार्य शुक्ल और प्रेमचंद समकालीन थे। 'प्रेमाश्रम' में सरकारी अधिकारी और जमींदार के कारिंदा लगान वसूलने गाँव गए हैं और उन्होंने वहाँ अड्‌डा जमा दिया। उनके खाने-पीने आदि का सारा प्रबंध गाँव वालों को करना था। खेलने के लिए टेनिस- कोर्ट बनवाया, खेत को छील-छाल कर चौरस कराया किसानों से। किसानों ने इसे अपना अपमान समझा। इसकी दो प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती हैं। सक्खू चौधरी घर गया और जिस शालिग्राम शिला को ईश्वर मानकर वह रोज पूजता था, उसे कुएँ में फेंक दिया क्योंकि वह जब उपासक की इज्जत नहीं बचा सका तो किस काम का? उसके बाद सुक्खू चौधरी घर छोड़कर कहीं चला गया। दूसरी प्रतिक्रिया मनोहर और उसके बेटे बलराज की है। उन्होंने जमींदार के कारिंदा कादिर खाँ की हत्या कर दी। आचार्य शुक्ल जो प्रतिक्रिया बताती है, वह इतिहास से प्रमाणित नहीं है और वह स्वाभाविक भी नहीं है। आचार्य शुक्ल ने भक्ति-काल का आरंभ विक्रम संवत 1375 यानी सन् 1318 माना है। यों इतिहास में कोई प्रवृत्ति किसी साल पैदा होती है, यह मानना सही नहीं है, फिर भी युग का प्रारंभ तो कहीं से मानना पड़ेगा। यह प्रायः लोदीवंश का शासनकाल था। इस प्रसंग में प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता सतीशचंद्र ने 'मध्यकालीन भारत' नाम की अपनी चर्चित पुस्तक में लिखा है- 'उत्तर भारत में जब तुर्कों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया, तब इस्लाम भारत के लिए नया नहीं था। पंजाब और सिंध में इस्लाम की स्थापना नवीं-दसवीं शताब्दी में ही हो गई थी। अरब यात्री भी उससे पहले केरल में बस गए थे। उस काल में अरब यात्री और सूफी सारे देश में भ्रमण करते थे। इस्लाम पर बौद्ध दर्शन और वेदांत का प्रभाव विद्वानों के लिए वाद-विवाद का विषय रहा है। इन विचारों ने सूफी मत के विकास की पृष्ठभूमि तैयार की। बारहवीं शताब्दी के बाद भारत में पाँव जमाने के पश्चात् सूफी मत ने हिंदू और मुसलमानों के लिए सामान्य मंच उपलब्ध किया। (पृ.117) इस्लाम में रहस्यवाद के उदय से सूफी मत का उदय माना जाता है। यह ठीक है कि सूफी मत में मूल धारणा-इस्लाम की ही रही, लेकिन वह उससे कुछ भिन्न भी हो गया। एक किंवदंती प्रसिद्ध है। हजरत मुहम्मद जब बहिश्त में प्रवेश के लिए दरवाजे पर खड़े थे और उनके पीछे उनके शिष्यों की कतार थी, तभी उन्होंने देखा कि कुछ लोग उनकी कतार से हटकर खड़े थे। पैगंबर ने अपने एक शिष्य से पूछा- 'वे कौन लोग हैं। तो शिष्य ने बताया- 'वे सूफी हैं।' फिर पैगंबर ने पूछा- 'वे वहाँ क्या कर रहे हैं?' तो उन्हें बताया गया कि वे भी बहिश्त में जाने के लिए खड़े हैं।' इस पर पैगंबर ने कहा- 'मेरे बिना।' यानी वे खुदा के पास परमात्मा के पास सीधे जाने की साधना करते थे। आत्मा-परमात्मा का संबंध सीधे था, बीच में किसी की भी जरूरत नहीं थी। ऐसे सूफी संत 1192 में पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद भारत आए थे और बाद में अजमेर जाकर बस गए थे, जिनमें ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का बड़ा नाम रहा है। आज भी अजमेर शरीफ मशहूर है। सतीश चंद्र लिखते हैं -'तुर्कों के भारत आगमन से काफी पहले से ही यहाँ एक भक्ति आंदोलन चल रहा था, जिसने व्यक्ति और ईश्वर के बीच रहस्यवादी संबंध को बल देने का प्रयत्न किया था।' (मध्यकालीन भारत, पृ.-120)। यह दक्षिण भारत में

उत्पन्न और प्रसारित भक्ति आंदोलन था। बौद्ध आंदोलन के समानांतर बहुत हद तक उसके प्रसार का विरोध करते हुए यह भक्ति-आंदोलन फैला। इस प्रसंग में उल्लेखनीय है कि उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का उद्‌भव और प्रसार प्राय: चार-पाँच सौ वर्ष बाद में हुआ इसका ऐतिहासिक और सामाजिक कारण यह है कि उत्तर में बौद्ध-प्रभाव के कारण दलितों पर अत्याचार दक्षिण की तुलना में कम था। बौद्ध-आंदोलन भी भक्ति का मार्ग बना नहीं रह सका, बल्कि बुद्ध की भी अवलोकितेश्वर के रूप में पूजा शुरू कर दी, तो लोगों ने शिव और विष्णु के प्रति समर्पण को भी मोक्ष और भक्ति के मार्ग के रूप में देखा। दक्षिण के भक्ति-आंदोलन का उत्तर में प्रसार उनकी भाषागत सीमा के कारण भी हुआ। नायनार और आलवार भक्तों ने अपनी भाषा में लिखा, यह तो स्वाभाविक था, लेकिन उनकी चेतना उत्तर तक आने में देर हुई। अक्सर कहा गया है कि भक्ति की चेतना को दक्षिण से उत्तर लाने वाले रामानंद थे। गौर करें महाराष्ट्र के संत कवि नामदेव चौदहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हुए माने जाते हैं।

रामानंद का समय सतीशचंद्र के अनुसार चौदहवीं का उत्तरार्द्ध और पंद्रहवीं सदी का पूर्वार्द्ध था। अत: स्पष्ट है कि रामानंद से पहले ही नामदेव की भूमिका है और उनसे पहले सूफी संतों की। रामानंद के विचार इस भक्ति-आंदोलन को बल पहुँचाते हैं। वे जन्म आधारित भेदभाव और अस्पृश्यता के खिलाफ थे। सभी वर्णों और जातियों के एक साथ उठने-बैठने, खाने-पीने के पक्ष में थे। भक्ति का मार्ग सबके लिए खोल देने का पक्ष मजबूत हुआ। लेकिन रामानंद ने शैव-वैष्णव मत के स्थान पर राम- भक्ति का प्रसार करने की कोशिश की। लेकिन भक्ति- काव्य पर गौर करें, उसमें व्यक्त चेतना तथा संतों और भक्तों के जीवन पर गौर करें तो हम देखते हैं कि भक्ति आंदोलन की प्रथम सीढ़ी पर निर्गुण भक्त हैं, दूसरी सीढ़ी पर अष्टछाप के कवि हैं, जो कृष्ण भक्त थे और तब आते हैं राम भक्त, जिनकी परंपरा भक्ति-काव्य में बहुत प्रचलित तो है, लेकिन कृष्ण-काव्य की तरह समृद्ध नहीं है। यह ठीक है कि कृष्ण-चेतना और राम-चेतना में बहुत फर्क नहीं है। चेतना में फर्क नहीं होते हुए भी उद्देश्य और स्वरूप में तो बहुत फर्क है। तुलसीदास के जीवन का एक प्रसंग है। एक मित्र उन्हें वृंदावन ले गया, राधा कृष्ण के मंदिर में। राधा-कृष्ण की मूर्ति के सामने तुलसी खड़े थे, प्रणाम नहीं किया। मित्र ने प्रणाम करने को कहा तो तुलसी ने यह दोहा लिखा- '**कहा कहौं छवि आपकी, भले बने हो नाथ, तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष बान लेहु हाथ।**' क्या बात है? बाँसुरी बजाने वाला नहीं, तीर छोड़ने वाला चाहिए, अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए।

भक्ति-आंदोलन के उदय के बारे में एक बात और ध्यान देने लायक है। अनेक विद्वानों ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि इस्लाम में समानता का भाव था, जिससे हिंदू-समाज में अपमानित और दलित लोग भक्ति की ओर आकृष्ट हुए। सतीशचंद्र भी कुछ हद तक यह बात मानते हैं, लेकिन इरफान हबीब कहते हैं कि मुस्लिम समाज में सामाजिक समानता की बात कतई नहीं थी भले इबादत की समानता थी। इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कहना सही है कि इस्लाम नहीं आता, तब भी भक्ति-आंदोलन का अस्सी प्रतिशत ऐसा ही होता, जैसा है। बीस प्रतिशत प्रभाव क्या है? इसे द्विवेदीजी ने स्पष्ट नहीं किया है। मुझे लगता है कि सतीशचंद्र का यह कथन युक्तिसंगत है। 'राजपूत राजाओं की पराजय और तुर्कों की सल्तनत स्थापित हो जाने के बाद ब्राह्मणों का आदर और उनकी भक्ति कम हो गई थी।' (पृ.-120)

लेकिन इस बात की भी अभिव्यक्ति पहले नाथपंथी आंदोलन में हुई। नवीं सदी में हुए आचार्य रूद्रट ने लिखा है कि कभी-कभी कविगण आकर कहते थे राजाओं में संघर्ष होता रहता है और राजा बदल भी जाते हैं, राजनीतिक अस्थिरता के कारण राजाओं को नायक बनाने में दिक्कत होती है, तो रूद्रट ने कहा - देवताओं पर काव्य लिखो। इस प्रकार भक्ति की ओर कवियों के मुड़ने का एक कारण यह भी हो सकता है।

यह कहें कि भक्ति आन्दोलन एक जन आन्दोलन था तो भी उपयुक्त ही होगा। भक्ति आन्दोलन के जन आन्दोलन बनने का कारण यह भी था की इसके संवाहक संत भक्त कवि स्वतंत्र चिन्तक थे किसी प्रकार का प्रलोभन या भय इनके पास भी नही फटकता था। डॉ. वासुदेव सिंह ने लिखा है, "भक्ति काव्य वर्ग, जाति अथवा क्षेत्र तक सीमित नही रहा है अपितु समस्त भारतीय जीवन का प्रतिनिधि काव्य है" (हिंदी भक्ति काव्यधारा और जाम्भाणी साहित्य, पृष्ठ 15) जाम्भोजी महाराज द्वारा प्रणीत बिश्नोई पन्थ उत्तर भारत का प्रथम संत मत है इस पन्थ में सैंकड़ों कवि हुए जिन्होंने भक्ति काव्यधारा को आप्लावित किया इस काव्यधारा को ही जाम्भाणी काव्यधारा के नाम से जाना जाता है।

जाम्भाणी साहित्य गुण व परिमाण दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत समृद्ध है यह धारा हवा के साथ बहने वाली नहीं है।

भक्ति में डूबी यह धारा लोक से कतई विमुख नहीं है। आमजन की इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा, सुख-दु:ख के साथ युगीन परिवेश की जीवंत झलक इसमें दृष्टिगोचर होती है 'इस साहित्य का एक-एक शब्द ईश्वर भक्ति, सदाचार व नैतिक उत्थान को समर्पित है' डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई लिखते हैं, "निर्गुण व सगुण का अद्‌भुत समन्वय इसकी निजी विशेषता है.... भगवान विष्णु की भक्ति इन्हें अत्यंत प्रिय है परन्तु विरोध किसी का नहीं।"

भक्ति आंदोलन का नारा था-

जात-पांत पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई॥

जाहिर है कि हिंदू समाज की जाति प्रथा के खिलाफ विद्रोह का स्वर था भक्ति-आंदोलन। इस नारे और विद्रोह ने मुख्यत: ब्राह्मण वर्चस्व को चुनौती दी।

भक्ति आंदोलन के संतों और भक्तों का निर्गुण-सगुण में बँटवारा जितना विचारधारा पर आधारित है, उससे कई गुना ज्यादा सामाजिक आधार पर था। याद करें नामदेव दर्जी, नानक बनिया, जाम्भोजी राजपूत वील्होजी बढ़ई, कबीर जुलाहा, रैदास चमार, दादू दयाल धुनिया, सेना नाई, सदना कसाई थे। इनमें नानक और जाम्भोजी को छोड़कर सभी समाज में प्राय: निचले पायदान पर थे, उन्हें मंदिर में प्रवेश करके ईश्वर से अपना दुखड़ा सुनाने का, प्रार्थना करने का भी अधिकार नहीं था। यह तो हाल तक रहा है। अब भी ऐसी पाबंदी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। सभी जानते हैं कि 1933 में महात्मा गांधी जब अपने 'हरिजनों' को लेकर वैद्यनाथ मंदिर (देवघर) में प्रवेश कर रहे थे, तो उन्हें पंडों का प्रहार झेलना पड़ा। इसी घटना या दुर्घटना के बाद दिनकर ने 'बोधिसत्व से' शीर्षक कविता लिखी थी। इस कविता की पहली पंक्ति इस प्रकार हैं- 'दौड़ो-दौड़ो हे बोधिसत्व भारत में मानवता, अस्पृश्य हुई।'

दिनकर ईश्वर को नहीं पुकार रहे, व्यग्रता से बुद्ध के एक रूप बोधिसत्व को पुकार रहे हैं। मानवता का अभाव हो गया है। मंदिरों में बहरे पाषाण स्थापित हैं और कविता के अंत में कहते हैं -

'कैसे बचें दीन हाय, प्रभु भी धनियों के गृह में बंद हुए।'

मध्यकाल में तो यह पाबंदी और भी कठिन थी। इसीलिए सभी तरह-तरह के कारीगर, जो आत्मसम्मान का भाव तो मन में अर्जित कर चुके थे, लेकिन समाज ने उनको सम्मान नहीं दिया, तो उन्होंने यह विचारधारा विकसित की कि ईश्वर तो निर्गुण या उससे भी परे है। 'गुण' तो प्रकृति में होते हैं, ईश्वर प्रकृति से भी ऊपर है, इसलिए वह मंदिरों में या मूर्तियों में कैसे हो सकता है। वह कहाँ नहीं है। भक्ति आन्दोलन के प्रतिनिधि कवि कबीर ने कहा -

'जाके मुख माथा नहीं, नाही रूप-कुरूप।
पुहुप वासतें पातरा, ऐसा तत्त अनूप॥'

उसका कोई आकार नहीं है, रूप-कुरूप कुछ नहीं। वह ऐसा अनुपम तत्व है, जो फूल 'पुहुप' की खुशबू से भी सूक्ष्म है। जाम्भाणी साहित्य में कहा गया है, **"मोरै छाया न माया, लोही न मांसू** (शब्द 1) **आदि-अनादि तो हमी रचिलो हमें सिरजीलो** (शब्द 8)

जाहिर है सगुण भक्त वे लोग थे, जो एक तो कारीगर नहीं थे, दूसरे जाति-व्यवस्था में ऊपरी सीढ़ी पर थे, मंदिरों में जाकर भजन-भाजन तो करते ही रहते थे। वे यह भी मानते थे कि ईश्वर या परमात्मा साकार रूप में आते हैं। आते हैं या नहीं यह तो विवाद का विषय है, लेकिन सगुण भक्तों की यह कोशिश रही है कि वे आम लोगों को यह दिखा सकें कि कभी ईश्वर विभिन्न रूप धारण करके संकट के दिनों में लोगों की मदद करने आते थे और आदमी की तरह आदमी की मदद करते दिखते थे।

मीराबाई, सूरदास, तुलसीदास आदि सगुण भक्त कवियों में अग्रणी हैं। मीरा ने कृष्ण को अपने पति के रूप में अपना लेने की भावना अपने गीतों में व्यक्त की है। भक्ति का आवेश उनमें तर्क से परे है, अनुभव से भी परे है। भक्ति-काव्य में अकेले उनके गीत हैं जो कवयित्री के निजी जीवन की व्यथा व्यक्त करते हैं।

सूरदास ने कृष्ण के बाल-जीवन का वर्णन करते हुए कृषि-कर्म के पशुपालन से संबंधित अनुभवों को व्यक्त किया है। कृष्ण गाय चराते हैं, चरवाहों के साथ रहते, उठते-बैठते हैं। इसके साथ यशोदा का वात्सल्य इस तरह मर्मस्पर्शी ढंग से व्यक्त हुआ है कि सूर-काव्य के अध्येताओं को सूर की कला पर अचरज होता है। अचरज होता है इसलिए कि बाल-वर्णन एकदम अभिधा-शैली में स्वभावोक्ति के रूप में किया गया है। अभिधा और स्वाभावोक्ति में कवित्व व्यंजित करना कठिन कवि-कर्म है। खैर, यहाँ मुख्य बात यह है कि सगुण-भक्ति भक्तों को गाँवों की ओर किसानों और पशुपालकों की ओर ले जाती है। इस प्रसंग में तुलसीदास और आगे बढ़े हैं। सूर और तुलसी भी मानते रहे हैं कि ईश्वर, अनिर्वचनीय है। सूर उसे गूँगे का गुड़ कहते हैं और तुलसी कहते हैं- 'प्रकृति पार प्रभु सब उरवासी।' यह कथन तो कबीर के करीब है। जाम्भोजी कहते है, **"विष्णु विष्णु तूं भण रे प्राणी, विष्णु भणता अनंत गुणु"**

सगुण-निर्गुण के प्रसंग में यह भी ध्यान में लाने की जरूरत है कि समाज में जो सगुण-समर्थक थे, वे अस्पृश्यता और भेद-भाव के भी समर्थक थे और जो निर्गुण पंथ को मानते थे वे स्वयं पीड़ा झेल रहे थे। इसलिए निर्गुण संतों ने समाज में समानता कायम करने की आवाज उठाई। जन्म के आधार पर किसी को छोटा-बड़ा समझना गलत है, क्योंकि जन्म की प्रक्रिया में भेद कहाँ है? भेद तो जन्म के बाद पैदा किया जाता है। नानक ने कहा- एक नूर ते सब जग उपज्या कौन भले कौन है मंदे।'

एक ईश्वरीय नूर (प्रकाश) से यह पूरा संसार पैदा हुआ है, सभी उसी में के बंदे हैं, इसलिए यह भेद करना गलत है कि कौन भला है और कौन बुरा है।

जाम्भोजी सबदवाणी में कहते हैं- **'ओ३म् रूप अरूप रमुं पिंडे ब्रह्मांडे, घट घट अघट रहायो'**

अनंत जुगां में अग्र भणजूं,ना मेरे पिता न मायो (शब्द 19)

कबीर ने कहा-

'जो बामन बामनि जाया और राह काहे न आया, जो तुरकहिं तुर्कनि जाया पेटहिं खतना क्यों न कराया।

यदि ब्राह्मण श्रेष्ठ गर्भ (ब्राह्मणी) से पैदा हुआ है, तो उसी राह से क्यों पैदा हुआ, जिस राह से सभी पैदा हुए। उसी तरह तुर्क यदि तुर्कानी के गर्भ से पैदा हुआ है तो पेट में ही खतना क्यों कराया? कहने का अर्थ यह कि जो भेद लोगों में, समाज में दिखाई पड़ते हैं, वे मनुष्य-कृत हैं, जन्म के बाद मनुष्य को भेद-भाव से जोड़ा जाता है। रैदास ने इसी बात को यों कहा है -

'चमरठा गाँठ न जनई, लोग गठावैं पनही।'

मैं चमरौंधा जूता बाँधकर या लेकर नहीं पैदा हुआ, लोगों ने मुझसे जूते बनवाए और फिर मुझे चमार कहकर छोटा बनाया। जूता बनाने का कर्म उसे समाज ने सौंपा और वह समाज की जरूरत पूरी कर रहा है।

'गीता' में एक जगह कहा गया -

'जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारात् द्विजुच्यतेम'

जन्म से सभी शूद्र होते हैं, संस्कार से द्विज कहे जाते हैं। यहाँ दो बातें एकदम साफ हैं - जन्म के आधार पर कोई भेद-भाव नहीं किया जाना चाहिए। और दूसरी बात यह कि संस्कार इसी जीवन में अर्जित किए जाते हैं। जब सत्ताधारी और संपत्तिधारी वर्गों ने श्रम करने वालों को संस्कार अर्जित करने के अधिकार से वंचित कर दिया, तो शूद्र और द्विज का भेद पैदा हुआ। द्विजों में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य रहे।

जाम्भोजी कहते हैं- **'भरमी भूला वाद विवाद आचार विचार न जाणत स्वाद'**

वे आगे कहते है, "वाद-विवाद फिटा कर प्राणी छाड़ो मन हठ का भाण'

श्रम को जन्म से जोड़ देने से सामाजिक गति में अवरोध पैदा हो गया। पेशा या व्यवसाय चलने की स्वतंत्रता उनको नहीं मिल सकी, जो प्रतिष्ठापूर्ण पेशा चुनना चाहते थे। जाति-प्रथा में खान-पान, शादी ब्याह आदि के मामले में शुद्धता की दृष्टि से रीति-रिवाज विकसित किए गए, जिससे समाज से मनुष्यता का लोप हो गया। इसी पृष्ठभूमि में भक्ति-आंदोलन का विकास हुआ और भक्ति काव्य रचा गया। यह रचने का अधिकार उन्होंने किसी से माँगा नहीं, अपनी भाषा में उन्होंने अपने भाव-विचार व्यक्त किए, तो एक नए जन-जागरण का उदय हुआ।

जम्भवाणी में समरसता की इस भावना को यूं वर्णित किया गया है-

'ओ३म् तइया सासूं, तइया मासूं, तइया देह दमोई उत्तम मध्यम क्यूँ जाणीजै, बिबरस देखो लोई'

भक्ति-आंदोलन की सीमा

भक्ति-आंदोलन ने शोषित-पीड़ित, उपेक्षित और अपमानित जनता को जगाया और सामाजिक समानता की आवाज मुखरित की। जन्मजात समानता है, तो जीवन में भी समानता हो। इस महान उद्देश्य को साधने के लिए जनता को जगाना भी भारतीय इतिहास में महात्मा बुद्ध के बाद ही हुआ। उल्लेखनीय है कि इन संत और भक्त कवियों ने जनता में प्रतिष्ठा भी हासिल कर ली थी। वे अपना श्रम करते हुए यानी जुलाहा और दर्जी या धुनिया बने रहकर भी जनता में संत के रूप में प्रतिष्ठित थे। रैदास को मीराबाई ने अपना गुरु बना लिया था। कबीरदास अपने विचारों को लेकर इब्राहिम लोदी से भिड़ गए थे और कबीर के समर्थकों की तादाद देखकर दिल्ली सल्तनत के बादशाह भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सके। तुलसीदास को बादशाह अकबर ने प्रवचन देने के लिए अपने दरबार में बुलाया था, वे नहीं गए, एक दोहा लिखकर भेज दिया -

'हम चाकर रघुवीर के पटौ लिखौ दरबार
तुलसी अब का होइहैं नर के मनसबदार'

बादशाह को उन्होंने नर कहा और उसकी हैसियत नारायण (राम) के सामने क्या है? तुलसीदास कबीर से प्रभावित थे, तभी तो उनकी राम-कथा में शंबूक-वध नहीं

है। यह निर्गुण पंथ का प्रभाव है। इससे तुलसी की ही मर्यादा बढ़ी। इस प्रभाव ने राम के व्यक्तित्व को गढ़ने में भी तुलसी की मदद की।

भक्ति-काव्य की भाषा भी ध्यान देने लायक है। जन-जागरण के लिए जन-भाषा या लोक भाषा की जरूरत थी। भक्त कवियों ने लोक-भाषा को काव्य-भाषा बना दिया। इससे जन-चेतना के विकास की प्रक्रिया भी आगे बढ़ी। अंधविश्वासों और रूढ़ियों पर धार्मिक आडंबर पर जमकर चोट की गई। इन सबके बावजूद यह विचारणीय है कि भक्ति आंदोलन अपने उद्देश्य में सफल क्यों नहीं हुआ। इतना ही नहीं कि वह सफल नहीं हुआ, बल्कि यह भी हुआ कि अनेक प्रहार और जागरण से सामंतवाद कमजोर होता, वह नहीं हुआ। सामंतवादी शक्तियों ने अपने को आगे चलकर सुदृढ़ कर लिया। इस हद तक कि कविता की धारा ही बदल गई। भक्ति आंदोलन के कवि राज्याश्रम में नहीं थे, बल्कि उसके खिलाफ थे। तुलसी ने तो कहा ही कि हम नर के मनसबदार नहीं बन सकते, कुम्भनदास ने भी कहा- 'संतन को कहाँ सीकरी सो काम' और कबीर ने कहा -

'प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय
राजा-परजा जेहि रुचौ सीस देई लै जायम'

रैदास ने कहा -

'पराधीनता पाप है जानि लेहु रे मीत।
रविदास पराधीन सो कौन करे है प्रीत'

भक्ति-आंदोलन के बाद कवि और कविता दोनों राज्याश्रित हो गए। इन सबके पीछे एक बड़ी बात यह थी कि भक्त कवि अपने आंदोलन के उद्देश्य के अनुकूल विचारधारा नहीं पा सके।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में 'सामाजिक न्याय' की जो भावना उभरी, वह पूँजीवादी विचारधारा के नीचे दबकर रह गई और भ्रष्ट नेतृत्व ने सामाजिक न्याय को सामाजिक अन्याय का रुप दे दिया।

मध्यकाल में तुलसीदास ने अपनी मानवीय संवेदनशीलता को राम की संघर्ष-शीलता से बल पहुँचाया, लेकिन राम-काव्य आखिर कथा ही तो है। वह कथा लोगों को प्रेरणा देती है, लेकिन राम भी लीला-पुरुष बनकर रह गए। तुलसीदास ने अपने समय के लिए आवश्यक अनेक आदर्श तय किए और उन्हें राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, केवट, शबरी, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि के व्यक्तित्वों और चरित्रों में मूर्त कर अपने काव्य में प्रस्तुत कर दिए। वे आदर्श भी काव्यात्मक ही बने रह गए।

आज के युग में हम पीछे उलटकर साहित्य को देखते हैं तो यह मानते हुए कि रचना को उसकी पृष्ठभूमि में रखकर देखना चाहिए, हम अपने समय के तकाजे की उपेक्षा नहीं कर सकते। जब भारत में भक्ति-आंदोलन चल रहा था और किसी अदृश्य सत्ता की प्रणति में काव्य रचा जा रहा था, तब यूरोप में कॉपरनिकस (सोलहवीं सदी) बता रहे थे कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है। इस सत्य की अभिव्यक्ति ने दुनिया और मनुष्य के बारे में सोचने-समझने का नजरिया भी बदलने की कोशिश की। रूढ़िवादी समाज और शासन ने कॉपरनिकस को मृत्यु दंड दे दिया लेकिन वैज्ञानिक बात धीरे-धीरे फैलती रही। आगे चलकर गैलिलियो ने भी वही बात कही, तो उसे आजीवन कारावास दिया गया। यह सब धर्म की रक्षा के लिए या बेहतर होगा यह कहना कि सत्ता और यथास्थिति की रक्षा के लिए धर्म का सहारा लिया गया। हमारे यहाँ भक्त कवियों के लिए वैज्ञानिक रुख अपनाना संभव नहीं था, हालांकि जीवन में न्याय के लिए उन्होंने तर्क करने वैचारिक लड़ाई करने की कोशिश की। रीतिकाव्य ने तो भक्ति आंदोलन की आवाज को ऐतिहासिक नेपथ्य में ठेल दिया। जनता को ऐसा लगा कि ईश्वर की तरह ही भक्ति अदृश्य हो गई। हालत ऐसी हो गई कि कविता जीवन की धड़कन से दूर जाकर हास्यास्पद तक हो गई। यद्यपि रीति-काव्य संपूर्ण ऐसा नहीं है, उसमें घनानंद, भूषण, मतिराम, रसखान आदि अपवाद हैं, जो जीवन और कविता का भिन्न स्वाद देते हैं।

सब कुछ के बावजूद जीवन-मूल्य, संघर्ष और आदर्शों से भरे काव्य-सृजन के जरिए आज तक हमें आकृष्ट करने और समय-समय पर झकझोरने वाला भक्ति-काव्य हमारे लिए गर्व का विषय तो है ही लेकिन यहीं पर और एक बात की ओर ध्यान खींचना चाहता हूँ।

डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं 'इहलोकवाद और परलोकवाद का द्वंद्व यूरोप के पैमाने पर यहाँ कभी नहीं फैला। वास्तविक मोक्ष इस जीवन में है, जीवन के उपरांत नहीं। भक्त कवियों ने प्रेम के मंत्र से कर्म के बंधन काट दिए, पुरोहितों के रचे हुए स्वर्ग और नरक के सुहावने और डरावने चित्र मिटा दिए। उन्होंने सांस्कृतिक धरोहर को लोक संस्कृति से जोड़कर उसे नया रूप दिया। उन्होंने लोक-जीवन से अभिन्न रहकर साहित्य में यथार्थवाद का विकास किया। (हिन्दी जाति का साहित्य)

भक्ति काव्य का अध्ययन करने से यह बात प्रमाणित नहीं होती कि उसमें इहलोकवाद और परलोकवाद का द्वंद्व नहीं है या कम है। यथार्थवाद का अंश भक्ति-काव्य में

इतना ही है कि कवियों ने जन्मगत भेद और जातीय उत्पीड़न के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई। इसका जिक्र इस लेख में अन्यत्र हुआ है। निर्गुण, संतों की विश्व-दृष्टि परलोकवादी ही है। इसका भी जिक्र किया गया है। शंकराचार्य के नियतवाद पर आधारित है उनकी विश्व-दृष्टि। यह परलोकवाद इहलोक के यथार्थ की अभिव्यक्ति को दबा देता है। तुलसी जैसे कवि जब अदृश्य सत्ता के अवतार को मानते हैं, तो परलोकवाद के प्रभाव को ही स्वीकार करते हैं। द्वंद्व यह है कि मानवीय संवेदनशीलता इहलोकवाद की ओर ले जाती है और अवतारवाद परलोकवाद की ओर। स्वयं भक्ति अदृश्य सत्ता के प्रति प्रणति ही तो है। सूरदास जब लिखते हैं कि 'जाकी कृपा पंगु गिरि चढ़ै अंधे को सब कुछ दरसाई।' तो परलौकिक भक्ति की ही महिमा गा रहे हैं न! यों यह एक संस्कृत-कथन का अनुवाद भी है। सहजो बाई कहती है -

'बड़ा न जाने पाइहैं साहिब के दरबार
द्वारे ही सो लागिहैं सहजो मोटी मार'

सबको एक दिन साहिब के दरबार में जाना ही है, भक्त कविगण समानता के पक्ष में, विषमता के खिलाफ थे, इसीलिए साहिब के दरबार में अमीरों के जाने का निषेध करते हैं। कबीर तो यहाँ तक कहते हैं कि 'चींटी के पग नेवर बाजै सो भी मेरा साहब सुनता है।' मैं कह चुका हूँ कि जन-जागरण जैसे ऐतिहासिक कर्म को परलौकिक भक्ति के सामने ले जा कर खड़ा कर देने के कारण ही मध्यकाल का महान आंदोलन विफल हो गया। अचरज की बात मेरे लिए यह है कि सामाजिक विषमता और धार्मिक पाखंड का विरोध करते हुए भी संत-भक्त कवियों ने चार्वाक या बौद्धमत को क्यों नहीं अपनाया। मुझे इस बात पर अचरज हो रहा है कि पारलौकिकता के स्पष्ट होने पर भी डॉ. रामविलास शर्मा कैसे कह जाते हैं कि भक्ति-काव्य में इहलोक और परलोक का द्वंद्व कम है।

भक्ति-आंदोलन और भक्ति-काव्य हमारी विरासत है। हम उस महान जागरण और सृजन के वारिस हैं। विरासत एक ऐतिहासिक जवाबदेही है। हमारे उन पुरखों ने जिस सत्य और न्याय के लिए संघर्ष किया और अपना दायित्व अधूरा छोड़ गए, उसे अपने आज के संघर्ष से जोड़कर उसे पूरा करने की जवाबदेही कबूल करना ही विरासत को स्वीकार करना है। हम उसे हू-ब-हू नहीं कबूल करते, उसकी समीक्षा करके उसकी सीमाओं से बचकर, आज की अपेक्षाओं को विकसित करके ही हम विरासत को मंजिल तक ले चलने में सफलता हासिल कर सकते हैं। हमें अपनी विरासत पर नाज है। इस विरासत को आधुनिक युग में प्रगतिशील आंदोलन ने ग्रहण किया है।

भक्ति-काव्य की विरासत को कबूल करते हुए हमें इतना ध्यान में रखना होगा कि आज हमारी लड़ाई पूंजीवाद या विश्व पूंजीवाद के खिलाफ लड़ना है। आज का पूंजीवाद वित्तीय पूंजीवाद है, मनुष्यता का सबसे बड़ा दुश्मन, इस दुश्मन को पराजित किए बिना हम अपनी विरासत और उद्देश्य को चरितार्थ नहीं कर सकते। कबीर का यह कथन आज भी हमारे सामने है और सफलता के संघर्ष के स्वरूप एक कठिनाई का बोध देता है। वे कहते हैं-

'सूर संग्राम ते भागै नहीं, भागै सो तो सूर नाहीं
काम-क्रोध मद-लोभ मोह ते जूझना
मचा घमसान तन खेत माहीं'

अपने उद्देश्य और विरासत की लड़ाई जीतने के लिए अपने को योग्य कैसे बनाएँ, यही कबीर हमें बता रहे हैं। पहली लड़ाई तो अपने भीतर लड़नी है, उसे जीतकर ही हम अपने प्रतिपक्ष से लड़ने के लिए मैदान में उतर सकते हैं। चलिए, जीत-हार को अपनी लड़ाई के स्वरूप पर छोड़ दें। बीसवीं सदी के क्रांतिकारी फैज अहमद फैज कहते हैं-

'यूँ ही हमेशा उलझती रही है जुल्म से खल्क
न उनकी रस्म नई है न अपनी रीत नई
यूँ ही हमेशा खिलाए हैं हमने आग में फूल
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई।'

मुख्य बात यह है कि लड़ाई जारी रहे, विरासत पर विरासत बनती रहे, इस तरह हमारी परंपरा बनती और बढ़ती चले। कबीर का वंश बढ़े नहीं। प्रगतिशील आंदोलन ने समानता की लड़ाई को समाज को बदलने का रूप दिया और धार्मिक पाखंड के खिलाफ लड़ाई को वैज्ञानिक नजरिए से जोड़ा। अत: यह कहा कि इतिहास से जानकारी ही न लें, इतिहास बनाते समय भी जीवन, समाज, इतिहास आदि को बदलने की लड़ाई मुश्किल होती है, वह कुर्बानी माँगती है। हम फिर फैज को याद करते हुए इन पंक्तियों से यह लेख समाप्त करते हैं -

'जिस धज से कोई मकतल में गया, तो मान सलामत रहती है,
ये जान तो आनी जानी है, इस जान की कोई बात नहीं।

- डॉ. राजाराम अग्रवाल
सहायक आचार्य (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय, भट्टू कलां (फतेहाबाद)

आलमजी कृत हरजस (राग खंभावची)

अहनिस कोड हे मोरी सहियां, सहियां हे मोरी श्रीरंग सुजाण ॥1 ।टेक ॥
जाकै बदन की सोभा, रीव चद छिब कोड़ि ।
मेरो मन लागो कान्ह सूं, भगत बछल रिण छोड़ि ॥2 ॥

चत्रभुज चिंता नै विसरै, जासूं म्हारो जीव ।
योही विनोदी वीठलौ, प्यारौ लागै पीव ॥3 ॥

जाणौं जे श्रीरंग मिलै, मन उपनुं स लभो ।
निरखि-निरखि दरस करूं, जद मैं पाऊं सोभ ॥4 ॥

मेरो मन लागो लाल सूं, गूढौ-गूढौ रंग ।
जाऊं जो माहे वै मिलै, सदा सुहावै संग ॥5 ॥

मगन व्रंभ तो रथ मिल रहौ, करि सुन्दरि स्यांम सूं प्यार ।
दरसण देख्या जीवीये, आलम को प्राण आधार ॥6 ॥

1. हे मेरी सखियो, मुझे रात-दिन सर्वज्ञानी भगवान श्री से प्रेम है।
2. जिनके शरीर की शोभा करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा के समान हैं, ऐसे भक्तों की रक्षा करने वाले रणछोड़ भगवान श्रीकृष्ण से मेरा मन लग गया है।
3. चिंता को समाप्त करने वाले चतुर्भुज रूप कृष्ण विष्णु भगवान में मेरा मन लगा हुआ है। यही विनोदी कृष्ण (विष्णु) मेरा स्वामी मुझे प्यारा है।
4. मेरे मन में यह लोभ पैदा हुआ है कि मैं श्रीकृष्ण से मिलूं और बार-बार उनके दर्शन करने से ही मेरी शोभा बढ़ेगी।
5. मेरा मन श्रीकृष्ण के रंग में रंगा हुआ है। अन्दर जाने से मुझे वे मिलेंगे और उनका संग मुझे बहुत सुहावना लगेगा।
6. मैं उस पार ब्रह्म से मिलकर मस्त रहूंगा और कृष्ण भगवान के प्रेमपूर्वक दर्शन करूंगा। आलमजी कहते हैं वे ही मेरे प्राणों के आधार हैं।

हरजस (राग धनांसी)

अंसी प्रीति रे मेरे मन करि, माधोजी सूं प्रीति रे ॥1 ॥ टेक ॥
नुंवि खुंवि चालौ बोलौ मुखि मीठा, हरि भगतन कीयो रीठ रे ॥2 ॥
धन-धन भाग बडो भगतन कौ, चत्रभुज बसियो जांकै चित रे ॥3 ॥
थळी कौ पांणी डोलत जिण राख्यौ, बुध्य दीन्ही आदि अतीत रे ॥4 ॥
अपणां सखा कूं संग करि लीजै, बाळापन को मीत रे ॥5 ॥
आलम के सुन गुन गाय बिंद कूं, तेरे जन चले जम कूं जीत रे ॥6 ॥

1. हे मेरे मन कृष्ण जी से ऐसा प्रेम कर।
2. नम्र होकर चलो और मुख से मीठे वचनों का उच्चारण करो। भगवान के भक्तों को देखकर नाराज मत होओ, उनसे प्रसन्न रहो।
3. जिनके चित में विष्णु भगवान निवास करते हैं वे भक्त धन्य हैं।
4. इस मन को थाली के पानी के समान मत डोलने दो, आदि विष्णु ने तुम्हें सद्बुद्धि दी है।
5. जो तुम्हारे बचपन का साथी है, उसको अपने साथ कर लो।
6. कवि आलमजी कहते हैं- विष्णु भगवान के स्मरण से ही यमदूतों को जीता जा सकता है।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

विवाह के गीत (प्रथम दिन)

घोड़ला लायज्यो थे भल आयज्यो,
थारै घोड़ला री हींस हजारी ओ राज।
इण बनड़ै गै हर के कोडे,
बनी म्हारी निरणी थावर न्हाई ओ राज।
करवा लायज्यो, थे भल आयज्यो,
थारै करवा री लूंब हजारी ओ राज।
इण बनड़ी गै हर के कोडे,
बनै म्हारै अजड़ा टोड पलाण्या ओ राज।
पडळो लायज्यो, थे भल आयज्यो,
थारै पडळै री पाट हजारी ओ राज।
इण बनड़ै गै हर के कोडे,
बनी म्हारी निरणी गंवर जंवारी ओ राज।
गहणो लायज्यो, थे भल आयज्यो,
थारी तिलड़ी री मोज हजारी ओ राज।
इण बनड़ी गै हर के कोडे,
बनै म्हारै रूठा गौत मनाया ओ राज।
भाइड़ा लायज्यो, थे भल आयज्यो,
थारै भाइड़ा गी मोज हजारी ओ राज।
इण बनड़ी गै हर के कोडे,
बनै म्हारै रस्ते में चरू चढ़ायो ओ राज।
पड़ळो लायज्यो, थे भल आयज्यो,
थारै चूड़लै गी चूम्प हजारी ओ राज।
इण बनड़ी गै हर के कोडे,
बनै म्हारै उजड़ मारग डाल्या ओ राज॥

---❊❊❊---

गुवाड़ बिचाळी पीपळी, जां पर बैठो मोर जी।
ओ मोर बिचारो के कर जी हरमल चुगली खोर जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़ै गै भदवाणै में, नगरी मे बाजा बाजै जी।
रामू चढ़ग्यो डागलै, कांदा रोटी खावै जी।
रामू गी गोरड़ी छाछळी, गधा चरावण जावै जी।
गधे ठोकी लात गी, आ सात गळेटा खावै जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़े गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
थूणै लारै नदी बगै, छाणों तिरीयो जावै जी।
आ रामी जाणै खोपरो, लारै नाठी जावै जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़े गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
धोय धाय दाळ रान्दी, दाळ रहगी काच्ची जी।
थारी लाला गोरड़ी, लीलगरा गी बच्ची जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारे कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़ै गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
म्हारै सेयो खीचड़ो, सगा गै सेयो सिरो जी।
थारी मदन जी गोरड़ी, मौत्या बीच लो हीरो जी।
म्हारै बनड़ै गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
रामू गै ब्याव में रामी बाई गो, सारो जी।
कोई सारो नी कोई बारो नी, आ बैठी माक्खा मारो जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़े गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
रामी रामी मती करो, रामी बड़ी पलीत जी।
काने बान्दो खुसड़ा, गलिया में गावो गीत जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़ै गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
ओरे मायली औरड़ी, जकै में चूल्हा चार जी।
थारी लाल गोरड़ी, आ न्यारी हवण नै तैयार जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़े गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
ओरे मायली औरड़ी, जकै में पड़ियो मांचो जी।
थारी राजू गोरड़ी, आ पाणी ढोवण गो ढांचो जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़ै गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी।
ओरे मायली औरड़ी, जकै में पड़ियो आटो जी।
थारी लाला गोरड़ी, आ पग धौवण गो भाटो जी।
म्हारै हरखे बनड़ो परणी जै, म्हारै कोडे बनड़ो परणी जै।
म्हारै बनड़ै गै भदवाणै में, नगरी में बाजा बाजै जी॥

साभार- बिश्नोई लोकगीत

अश्वघोष के महाकाव्यों में जीवन-मूल्य

मनुष्य जाति का जीवन सोद्देश्य है, यह पशु की तरह प्रायः निरुद्देश्य जीवन वाली जाति नहीं है। पशु और मनुष्य में विवेकशीलता का अन्तर है। इस बुद्धिता से प्राप्त ज्ञान तत्व ही यथार्थ मूल्य रूप से अभिभूत है।

अभ्युदय और निःश्रेयस् मनुष्य जाति के उद्देश्यों की पराकाष्ठा है। जब कभी मनुष्य ने सुखमय जीवन जीने की कल्पना को मूर्त रूप देना शुरू किया वहीं से मूल्यों का इतिहास प्रारम्भ हो गया। सुखमय जीवन ऐसा कि जिसमें एक व्यक्ति के सुखों की प्राप्ति में दूसरे का अहित न हो। वह मानव न केवल अधिकारों की कल्पना साकार करे बल्कि स्वकर्त्तव्यों का पालन भी करता रहे। व्यक्ति एकल था, चाहे जोड़े में था, परिवार, कबीले, समाज, जन, महाजनपद अथवा राष्ट्र की कल्पना ज्यों-ज्यों आगे बढ़ाने लगा, वह सात्विक, व्यावहारिक, नैतिक मूल्यों को बढ़ाता गया। जब मानव जाति के जीवन विकास में जीवन मूल्यों का चिन्तन प्रारम्भ हुआ वहीं से उचित-अनुचित, अच्छा-खराब, भले-बुरे की अवधारणा विकसित हुई और जीवन मूल्यों के निर्धारण में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों दृष्टिकोणों की भूमिका स्पष्ट हुई। भले ही व्युत्पत्तिपरक अथवा व्याख्यापरक अर्थों की दृष्टि से भारतीय और पाश्चात्य साहित्य परम्परा में जीवन मूल्य के अर्थों की दृष्टि से भारतीय और पाश्चात्य साहित्य परम्परा में मूल्य निरूपण दृष्टिकोण का अन्तःकरणवाद मुख्य आधार रहा है-

सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/19)

नासतोविद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः

(श्रीमद् भगवद् गीता 2/16)

देश, काल एवं सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, भौगोलिक इत्यादि परिस्थितियों के कारण हो सकता है कि जीवन-मूल्यों में आंशिक भिन्नता दृष्टिगोचर होती हो किन्तु वास्तविक रूप से जीवन मूल्यों का लक्ष्य संपूर्ण मानव जाति का कल्याण है। इसलिए जीवन-मूल्य का अध्ययन करते समय इसे एक विषय समझने के बजाय संपूर्ण मानव जाति के परिपेक्ष्य में इनका अनुशीलन होना चाहिए।

ज्ञान-विज्ञान की परम्परा से अद्यवधि कई विचारकों एवं ज्ञान राशियों द्वारा मानवीय जीवन मूल्यों को पुष्टि प्रदान की गयी है जिनमें वेद, उपनिषद्, पुराण, दर्शन, काव्य, गद्य, नाटक आदि ज्ञान राशियाँ एवं कालिदास, भारवी, हर्ष, वेदव्यास, वाल्मिकी, बाणभट्ट, विवेकानन्द, डॉ. राधाकृष्णन, महात्मा गाँधी, अरस्तु, प्लूटो, दांते, पैट्रार्क, बोकेसियों, रेबेला, मान्टेन, चौसर, टॉमस-मूर, स्पेन्सर, शेक्सपीयर, सर्वाण्टेज, इरैस्मस इत्यादि विचारक प्रमुख रूप से शामिल किए जा सकते हैं। उपर्युक्त चिन्तकों में ही अग्रगण्य दार्शनिक विचारधारा के मूर्धन्य चिन्तक, मानवीय-मूल्यों के प्रतिष्ठापक कविश्रेष्ठ अश्वघोष का जीवन-चरित तथा काव्यस्पन्दन प्रत्येक के लिए अध्ययन करने योग्य है।

बौद्ध-संस्कृति के अनुसार ताम्रयुग की सिन्धु उपत्यका संस्कृति वाले घूमन्तु आर्यों का समागम और वैदिक कर्मकाण्ड से होते हुए उसका परिव्राजकों के समय तक पहुँचना, उन ढ़ाई हजार सालों में भिन्न-भिन्न जातियों के सम्पर्क से होते हुए भारत भूमि में एक संस्कृति तैयार हो गयी। यही वह संस्कृति थी जिसमें सिद्धार्थ गौतम पैदा हुए। इस संस्कृति के सुरभित सुमन संस्कृत बौद्ध वाङ्मय के प्रारंभिक विद्वानों में उत्कृष्ट महाकवि अश्वघोष थे।

जीवन-मूल्यों की भारतीय परम्परा में चिन्तनशील मनुष्य जाति की सर्वश्रेष्ठता, सर्वजनहिताय की दृष्टि, लोकतांत्रिक जीवन-मूल्यों की स्थापना, जीवन यापन का व्यावहारिक, नैतिक दृष्टिकोण, पुरुषार्थ-चतुष्टय श्रेयस्-प्रेयस की व्यवस्था, रामादिवत् धर्मानुकूल आदर्श समाज की मान्यता, अतिथि-सत्कार, सदाचार, शिष्टाचार, संस्कारों की परम्परा, शासन में लोकाराधना

की प्रतिष्ठा के क्रम की सरिता को अश्वघोष ने न केवल आगे बढ़ाकर परिपुष्ट किया बल्कि कहीं-कहीं तो जीवन मूल्यों का मूर्त रूप इनके महाकाव्यों में साक्षात् खड़ा कर दिया गया है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमने इन मूर्तरूपों को इन महाकाव्यों में जल लेते, हँसते-खेलते और रोते देखा हैं जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डालकर हमारे मृतप्राय शरीर में न केवल नए प्राण फूंके बल्कि मुरझाए हुए दिलों में सौरभयुक्त सुन्दर-सुमन खिला दिया है। यह सौरभ- सुमन है सम्यक्-ज्ञान, सत्य, अहिंसा, प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव का, जो केवल इसी देश के लिए नहीं बल्कि प्राणी मात्र के जीवन के लिए आज भी उसी अनुपात में अत्यंत आवश्यक है-

अतः परं तत्व परीक्षणेन मनोदधात्यास्रवसङ्क्षयाय।
ततो हि दुःख प्रभृतीनि सम्यक्चत्वारिसत्यानि पदान्यवैति॥

-सौन्दरानन्द 3-26

बाधात्मंक दुःखमिंद प्रसक्तंदुःखस्य हेतुः प्रभवात्मकोऽयम्।
दुःखक्षयोनिः सरणात्मकोऽयंत्राणात्मकोऽयंप्रशमाय मार्गः॥

-सौन्दरानन्द 4-26

भगवान बुद्ध ने नैतिक चेतना को इस देश के नर-नारियों के सामने रखा था। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम एवं योगेश्वर कृष्ण के अवतारों के कई वर्ष बीत जाने के बाद वास्तविक धर्म के प्रति अरुचि बढ़ने लगी। पाखण्ड युक्त अधर्म को ही धर्म माना जाने लगा। हजारों पशुओं के नरसंहार होने के साथ-साथ जनता में प्राणी-हिंसा, चोरी कामव्यसनी, मद्य और अंधविश्वास इस कदर बढ़ गया कि जातिवाद के विषवमन ने घर-घर में संकट उद्धत कर दिया गया। धर्म प्राण जनता अल्प संख्या में रह गई तथा अधर्म और दुष्कृत्यों से त्रस्त हो उठी। ऐसी स्थिति में जीवन-मूल्यों की रक्षा करने वाले महापुरुष गौतम बुद्ध थे-

कृष्टादिभिः कर्मभिरर्दितानां कामात्मकानां च निशम्यदुःखम्।
स्वास्थ्यं च कामेष्वकुतूहलानां कामान्विहातुंक्षममात्मवद्भिः॥

-बुद्धिचरितम् 11.20

महात्मा-बुद्ध के इस संरक्षण को आम जन तक पहुँचाने का कार्य महाकवि-अश्वघोष ने किया है। बुद्ध की वास्तविक पीड़ा समझाने में अश्वघोष सर्वाधिक सफल सिद्ध हुए-

सद्वाप्यसद्वा विषमिश्रमन्नं यथा विनाशय न धारणाय।
लोके तथा तिर्यगुपर्यधो वा दुःखाय सर्वं न सुखाय जन्म॥

-सौन्दरानन्द -9-16

अश्वघोष द्वारा बुद्धचरित और सौन्दरानन्द महाकाव्यों में जीवन-मूल्यों की व्याख्या पदे-पदे न केवल मानवाद की दृष्टि से बल्कि भौतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक और आर्थिक जीवन में जहाँ नैतिकता को गौतम बुद्ध ने प्राथमिकता दी वहीं नैतिक दृष्टि से धर्म को ही मानव-जीवन का जीवन-मूल्य माना।

भारतीय मनीषियों ने भी नैतिकता को तत्त्वत्रय के परिप्रेक्ष्य में निरूपित करते हुए आत्मा, मन और शरीर को प्राथमिकता दी है।

"शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम्।"

अश्वघोष के महाकाव्यों में बुद्धपूर्व की सामाजिक-व्यवस्था, विशेष रूप से नारी विषयक प्रतिपाद्य पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही व्यवहार एवं मन के मूलभूत तत्वों पर आधारित जीवन-मूल्यों का उद्घाटन किया गया है। मानसिक एकाग्रता से व्यक्ति किस प्रकार अभिज्ञा प्राप्त कर सकता है। सौन्दरानन्द का एक पद्य उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा सकता है-

"एवं मनोधारणयाक्रमेण, व्यपोह्यकिञ्चत् समुपोह्यकिञ्चत्।
ध्यानानि चत्वार्यधिगम्य योगी, प्राप्नोत्यभिज्ञा नियमेन पञ्च॥"

-सौन्दरानन्द- 01- 16

मानसिक एकाग्रता से योगी कुछ छोड़कर और कुछ लेकर चार ध्यानों प्राप्त कर निश्चय ही पांच अभिज्ञाओं से प्राप्ति करता है।

इसी तरह अश्वघोष के महाकाव्यों में गौतम बुद्ध द्वारा प्रदत्त जीवन-मूल्यों से संबंधित विस्तृत ज्ञान का विमर्श करते हुए विशेष रूप से सत्य, दुःख के प्रतिकार पक्ष, अध्यात्म, योग, शील, राग-शून्यता, परमाशान्ति और परम-कल्याणकारी धर्म पर प्रकाश डाला गया है। जीवन के न केवल भौतिक पक्ष बल्कि प्रज्ञा, विवेकादि अध्यात्म के विशिष्ट तत्वों का भी यथार्थ वर्णन किया गया है।

गौतम बुद्ध द्वारा कुशीनगर के शालवन में मल्लों के दिए उपदेश को बुद्धचरित में अश्वघोष इस प्रकार लिखते हैं:-

"सर्वेषा हि ध्रुवो मृत्योर्युगान्तस्थायिनामपि
शोकं व्यक्त्वाऽप्रमत्ताः स्युरितिमेह्यन्तिमं वचः"

-बुद्धचरित...26-63

इस प्रकार अश्वघोष के महाकाव्यों में वर्णित जीवन-मूल्यों के विमर्श की सिद्धि का प्रमाण यही है कि भारतीय संस्कृति की उक्त बौद्ध परम्परा का प्रचार-प्रसार न केवल प्राचीनकाल से चीन, अफगानिस्तान, मध्य- एशिया, खेतान, कूची, कंबोडिया, म्यांमार, थाईलैण्ड, जापान, ताईवान, तिब्बत, सिंगापुर, हांगकांग सुमात्रा, जावा वियतनाम सहित वृहत्तर भारत में हुआ बल्कि वर्तमान में भी वृहत्तर भारतीय देशों द्वारा मिलकर विभिन्न आर्थिक, समाजिक संगठनों, सांस्कृतिक संस्थाओं यथा (नालन्दा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना) इत्यादि की जा रही है।

निस्सन्देह अश्वघोष की काव्य परम्परा के जीवन मूल्य आधुनिक भारत की प्रतिष्ठा भी बढ़ाते रहेंगे बशर्ते कि इनका अनुशीलन होता रहे। आज विश्व अशांति के सबसे विकराल दंश पर खड़ा है और शांति की प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग भारतीय संस्कृति की बौद्ध-अश्वघोष परम्परा में स्पष्ट है। उस परमशांति की प्राप्ति से विश्व कल्याण सम्भव है।

"इत्यार्थसत्यान्यवबुध्य बुद्ध्या, चत्वारि सम्यक्
प्रतिविध्यचैव।
सर्वास्रवान् भावनयाऽमिभूय, न जायते
क्षान्तिमवाप्यभूयः॥

-सौन्दरानन्द..5-26

- भँवरलाल (उमरलाई)
शोधार्थी, संस्कृत-विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
मो.: 9587653744, 8696929363

सुखी जीवन का आधार

संसार में कोई भी व्यक्ति अपने लिए अशुभ नहीं चाहता, लेकिन दूसरों के प्रति अशुभ अवश्य सोच लेता है। विज्ञान का नियम है क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती है। दूसरों के प्रति अशुभ सोचकर लोग अपने जीवन को स्वयं दु:खी, अशान्त बनाते जा रहे हैं। जब हम नकारात्मक सोचते हैं तो विश्व के समस्त नकारात्मक ऊर्जा समूह से जुड़ जाते हैं और हमारे नकारात्मक संकल्प कई गुणा शक्तिशाली होकर हमारे पास ही लौट आते हैं तथा हमें दु:खी व परेशान करते रहते हैं। इसी प्रकार जब हम शुभ संकल्प करते हैं तो विश्व की समस्त सकारात्मक ऊर्जा समूह से जुड़ जाते हैं और हमारी शुभकामनाएं कई गुणा होकर हमारे पास आती हैं तथा हमें आंतरिक खुशी व शान्ति की अनुभूति कराती हैं।

शुभकामना में सबके प्रति कल्याण की, रहम की, स्नेह व सहयोग की भावनाएं अंतर्निहित होती हैं। अध्यात्म पथ पर शुभकामनाएं आगे बढ़ने की सहज लिफ्ट है। इनसे अन्य में भी परिवर्तन लाने के हम निमित बन जाते हैं। वास्तव में शुभ व शक्तिशाली संकल्प से वृत्ति, वृत्ति से प्रकम्पन, प्रकम्पन से सशक्त वायुमंडल का निर्माण होता है। जो उपस्थित आत्मा में परिवर्तन ला देता है। शुभ और शक्तिशाली संकल्प पैदा करने के लिए परमात्मा को याद रखना अति आवश्यक है। शुभ संकल्प की शक्ति से स्थूल कार्य किए और कराये जा सकते हैं।

हमारी शुभकामनाएं दूसरों में श्रेष्ठ भावना जगाती हैं। तो आइये हम सभी, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, निन्दा आदि नकारात्मक भावनाओं को समाप्त कर सदा शुभ भावनाओं के भण्डार बन सबको सुख-शान्ति की अनुभूति कराकर, परमात्मा के लिए सुखों का अधिकारी बनें व बनाएं। यदि सदा शुभ संकल्प करने की धुन लगा दें और नकारात्मक को पास भी न फटकने दें, तो कैसी भी परिस्थितियां आएं वह पानी पर लकीर जैसी हो जाएगी और हम स्वयं को सदा शक्तिशाली होने का अनुभव करेंगे तथा सुखी जीवन का आनन्द उठाते रहेंगे।

अत: शुभकामनाओं का भण्डार ही सुखी जीवन का सच्चा आधार है।

-ऋषिराम बिश्नोई
पुलिस उपनिरीक्षक (से.नि.)
मुरादाबाद (उ.प्र.) मो. 7351092457

आधुनिक युग में जम्भेश्वर वचनों की पालना अति आवश्यक

धर्म परायण भारत देश आदिकाल में विश्वगुरु की उपाधि धारण किये रहा है तथा प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति, भारतीय जीवन, विचार, शैली, विश्व में प्रेरणादायी रहे हैं। इसी प्रकार राजस्थान प्रदेश भी शूरवीरों, सतवीरों की योगियों की पावन भूमि रहा है। प्राचीनकाल से ही राजस्थान का जीवन संस्कृति, शैली, आचार-विचार आदि लोगों के लिए प्रेरणादायी रहे हैं। यहाँ के जीवन-यापन में सरलता, सहजता, धैर्य आदि गुण प्रमुखता से दिखाई पड़ते हैं और इन्हीं सब गुणों को लेकर प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक परंपरा का निर्वाह निर्विघ्न रूप से चल रहा है।

मध्यकाल में बहुत से महापुरुषों, साधु-संतों द्वारा लोगों को सरल-सहज जीवन जीने की प्रेरणा मिलती रही है। गुरु जाम्भोजी ने भी अपने वचनों में लोगों को आदर्श पूर्ण, सरल, सहज जीवन जीने की प्रेरणा दी है। गुरु जाम्भोजी ने अपने 29 नियमों में भी सत्संग, निर्मलवाणी, हवन, स्नान, सतकर्म, गुरुनिष्ठा, विनम्रता, क्षमा, सत्य, शील, तप, संतोष, दया, संयम, परोपकार आदि पर जोर दिया है। इसके साथ ही नशे से दूर रहकर सादा जीवन जीने की प्रेरणा दी है।

आज के समय में नशाखोरी और मदिरापान विश्वव्यापी समस्या बनती जा रही है। जिसके फलस्वरूप समाज में तनाव और अपराधों की वृद्धि हो रही है तथा युवाओं का नैतिक पतन भी हो रहा है।

एक सरकारी सर्वेक्षण के मुताबिक नशे से भारत में प्रतिवर्ष एक लाख मौतें हो जाती हैं और एक लाख परिवार नशे के कारण बर्बाद हो जाते हैं। इसी प्रकार सब समाजों की भांति बिश्नोई समाज भी इन बुराइयों से अछूता नहीं रहा है। आज लगभग हर दिन अखबार में किसी न किसी युवा बिश्नोई का नाम अवश्य आता है। कभी चोरी, कभी डाका, कभी अमल, तम्बाकू तो कभी शराब, इन सब बुरी आदतों के कारण तथा आधुनिक जीवन शैली में शार्टकट तरीके से बहुत ज्यादा सुख सुविधा प्राप्त करने के चक्कर में युवा तेजी से इस नशाखोरी के मायाजाल में फंसता जा रहा है। नशाखोरी तथा अपराध जगत में अन्य समाजों के युवाओं के साथ-2 गुरु जम्भेश्वर द्वारा प्रतिपादित बिश्नोई समाज के युवा भी इस गलत संगति में पड़कर अपना, समाज का और राष्ट्र का नुकसान कर रहे हैं और इस कड़ी में कुछ युवाओं के भ्रमित होने के कारण और शार्टकट तरीके से धन की लालसा लिये दूसरे युवा भी भविष्य की परवाह किये बगैर इन गलत रास्तों पर चलने की कोशिश में लगे हुए हैं। आजकल प्राय: दैनिक अखबारों मे बिश्नोई युवा का नाम आता है। जिससे पूरे समाज का नाम खराब होता है। कुछ बिश्नोइयों के कारण पूरे समाज का नाम भी अपराध श्रेणी में बढ़ता जा रहा है। लोगों की मानसिकता बिश्नोई समाज के प्रति नकारात्मक बनती जा रही है। पुरुषों के साथ-2 महिलाओं की भागीदारी के कुछ नमूने भी आजकल अखबारों में छप रहे हैं और धीरे -2 ये युवा अपराध की श्रेणी में धंसते ही चले जा रहे हैं। आधुनिक युग में गुरु जी के वचनों की पालना की अत्याधिक आवश्यक है।

गुरुजी ने सबदवाणी (76) के प्रसंग में कहा है कि-

"तन मन धोइये संयम हुइये, हरख न खोइये।
ज्यूं ज्यूं दुनियां करे खुवारी, त्यूं त्यूं किरिया पुरी॥"

अर्थात् शरीर और मन को पवित्र कीजिये संयमशील बनिये।

अमल, तम्बाकू, भांग तथा मदिरा जैसे समस्त नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली हानियां सर्वविदित हैं। नशा धर्म, नियम, कानून तथा स्वास्थ्य हर दृष्टि से वर्जित है, नशा शरीर आत्मा दोनों के लिए नाशकारी है। शरीर तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी नवीन वैज्ञानिक अन्वेषणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि नशाकारी पदार्थों में किसी प्रकार के पोषक तत्व नहीं पाये जाते। इनमें पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के जहर शरीर एवं मन को क्षति पहुचाने वाले होते हैं। यही कारण है कि नशा करने वाले व्यक्ति की रोग-निरोधक क्षमता कम होकर नष्ट हो जाती है। नशा करने वाला दमा, तपेदिक, कैंसर, खासी, रक्तचाप

तथा हृदय जैसी जानलेवा बीमारियों का शिकार हो जाता है। नशा विवेक की शक्ति का हरण करता है। अविवेक की स्थिति में व्यक्ति घर परिवार ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए घातक सिद्ध होता है। समाजिक दृष्टि से नशा-खोर का सम्मान घटता है। आर्थिक दृष्टि से धन बर्बाद होता है। धन की बर्बादी से दरिद्रता आती है और दरिद्रता ही सब संकटों की जड़ है। नशेबाज लोगों का परिवारिक जीवन अशान्ति एवं मानसिक पीड़ाओं का शिकार होकर उनके बाल बच्चों के जीवन को भी दुष्प्रभावित करते हैं। ऐसे घरों का वातावरण नरक तुल्य बन जाता है।

पांच सौ वर्ष पूर्व जम्भेश्वर भगवान ने जिन नशीले पदार्थों को वर्जित किया वर्तमान सरकार तथा विश्व समाज में उनका सेवन कानूनी अपराध घोषित किया है। भारत सरकार ने नशीले पदार्थों को रखने तथा व्यापार करने वालों का आजीवन कारावास तक देने के नियम बनाये हैं। काफी राज्यों में नशे पर प्रतिबंध लगाया गया है जिसमें बिहार में शराबबंदी, गुजरात में शराबबंदी, राजस्थान में गुटखा पर रोक आदि राज्यों में सरकारी प्रयास जारी है। पर पूर्ण रूप से नशाखोरी पर रोक सामाजिक चेतना द्वारा ही संभव है। अपराधीकरण की होड़ से बचने के लिये बिश्नोई समाज के युवाओं के साथ-साथ अन्य समाजों के युवाओं को भी गुरु महाराज के वचनों की पालना करनी अति आवश्यक है। इस प्रकार संसार में सुख, शान्ति और समृद्धि तभी संभव होगी जब आज की युवा पीढ़ी गुरु महाराज के सनातन संदेश पर आचरण करेगी। इससे यह लौकिक जीवन सुखमय रहेगा तथा परलोक भी सुधर जायेगा। इसीलिए गुरु जांभोजी की यह सूक्ति बड़ी सार्थक है।

"जीया ने जुगती अर मुवां नै मुक्ति"

संदर्भ ग्रंथः

1. उतरी भारत की संत परम्परा
2. जाभोजी की वाणी
3. गुरु जाभोजी का जीवन दर्शन
4. राजस्थान का संत साहित्य
5. बिश्नोई धर्म संस्कार

-हरिराम बिश्नोई
शोधार्थी, राजस्थानी विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

देह दान महादान

बिश्नोई नर्सिंग होम, सिरसा के संचालक डॉ. भागीरथ बिश्नोई सुपुत्र स्व. श्री बस्तीराम, निवासी रायपुर, अबोहर ने मरणोपरान्त देह दान करके एक सराहनीय कार्य किया है। उनकी इच्छा अनुसार मरणोपरान्त उनकी देह बीकानेर के सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज में मेडिकल रिसर्च हेतु दान की गई। डॉ. भागीरथ जी का 75 वर्ष की आयु में 9 अक्तूबर, 2016 को आकस्मिक देहांत हो गया। डॉ. बिश्नोई एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक होने के साथ-साथ उच्च दर्जे के समाज सेवी भी थे। जरूरतमंदों की मदद करना उनके स्वभाव में था।

श्रीमती शंकरी देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय चौ. हेतराम बैनीवाल (गांव भुर्जभंगु) निवासी राम कॉलोनी, बरनाला रोड, सिरसा ने मरणोपरान्त नेत्रदान करके दो व्यक्तिओं के जीवन में नई रोशनी प्रदान की। आपका देहांत 87 वर्ष की आयु में दिनांक 04 सितम्बर, 2016 को हो गया। उनकी इच्छा अनुसार मरणोपरान्त नेत्रदान किया, उन्होंने नेत्रदान कर एक अनुकरणीय प्रेरणा प्रस्तुत की है। वे धर्मिक विचारों से ओत-प्रोत थी। उनका स्वाभाव बड़ा ही मिलानसार था।

गुरु जम्भेश्वर भगवान दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें व उनके परिजनों को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

बधाई सन्देश

शिव कुमार बिश्नोई सुपुत्र श्री रामप्रताप धतरवाल, निवासी रावतसर, जिला हनुमागनढ़ की पदोन्नति दिल्ली पुलिस में सहायक आयुक्त (Asstt. Commissioner of Police) के पद पर हुई है। आप एक कर्मठ व ईमानदारी अधिकारी होने के साथ-साथ समर्पित समाज सेवी भी हैं।

डॉ. सोफिया राज सुपुत्री श्री राजेन्द्र गोदारा, निवासी सेक्टर 15, हिसार का प्रवेश मास्टर ऑफ साईंस हेतु Health Economics and Pharmacoeconomics फैंकफर्ट, जर्मनी (Frankfurt, Germany) में हुआ है।

रमेश गोदारा सुपुत्र स्व. श्री शंकर लाल गोदारा, निवासी गांव साहू, हाल निवासी सैक्टर 14, जिला हिसार की पदोन्नति हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड में क्षेत्रीय विपणन प्रवर्तन अधिकारी के पद पर हुई है।

डॉ. ज्योत्स्ना सुपुत्री श्री कुलदीप सिंह सहू, निवासी गांव गंगवा की नियुक्ति NIMS, जयपुर से एम. बी.बी.एस. करने के बाद दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल, दिल्ली में चिकित्सक के पद पर हुई है।

अनमोल बिश्नोई सुपुत्री श्री सुरेन्द्र मांझू, गांव चिन्दड़, जिला फतेहाबाद (हरियाणा) हाल निवासी भट्टू मण्डी ने मात्र 9 वर्ष की आयु में 13 सितम्बर को मोती लाल नेहरू स्टेडियम, राई में आयोजित 3rd State Olympic Games (Triple Jump) में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। आपने 11-13 अक्तूबर, 2016 को बडोदरा में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जगह बना ली है।

लाल चंद बिश्नोई, निवासी बीकानेर ने उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय, देहरादून से कम्प्यूटर साईंस एण्ड इंजीनियरिंग क्षेत्र में पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त की है। आपने इस हेतु 'A Novel Method for Video Transmission Over Wireless Networks' विषय में शोधपत्र प्रस्तुत किया।

बनवारी लाल पूनियां सुपुत्र श्री चुन्नीलाल पूनियां निवासी देसलसर, तह. नोखा का राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड में अधिशासी अभियन्ता के पद पर पदोन्नति हुई है।

मदनलाल बिश्नोई, एडवोकेट सुपुत्र श्री इन्द्रजीत बैनीवाल निवासी बुर्जभंगू, सिरसा को बार काउंसिल, पंजाब एण्ड हरियाणा की अनुशासन व सतर्कता समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

फतेहाबाद में हर्षोल्लास से मनाया बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस

बिश्नोई मन्दिर फतेहाबाद में बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस की 531वीं वर्षगांठ अत्यन्त ही धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर 17 अक्तूबर से 23 अक्तूबर तक साप्ताहिक जांभाणी हरिकथा का आयोजन किया गया। कथा का प्रारम्भ 17 अक्तूबर को दोपहर 12.15 बजे यज्ञ व ज्योति प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस साप्ताहिक कथा के व्यास स्वामी राजेन्द्रानन्द जी हरिद्वार थे। कथा का शुभारम्भ स्वामी रामानन्द जी आचार्य, पीठाधीश्वर, मुक्तिधाम मुकाम द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए स्वामी रामानन्द जी ने बिश्नोई पंथ की स्थापना से लेकर अब तक की यात्रा और वर्तमान स्थिति और चुनौतियों पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला। कथा के प्रारम्भ में चौ. दुड़ाराम जी पूर्व संसदीय सचिव, हरियाणा सरकार डॉ. सुरेन्द्र खिचड़, सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार, स्वामी राजेन्द्रानन्द जी, महंत लालासर साथरी ने अपना शुभ संदेश दिया। इस साप्ताहिक कथा में कथावाचक स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने गुरु जम्भेश्वर भगवान के अवतार, बाललीला, गौचारण से लेकर बिश्नोई पंथ की स्थापना, 29 धर्म नियम, सबदवाणी, पंथ के विस्तार व वर्तमान स्वरूप पर बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रकाश डाला। इस संगीतमयी जाम्भाणी हरिकथा में संगीत सम्राट स्वामी सुखदेव मुनि ने जांभाणी साखियों, भजनों व आरतियों के माध्यम से सभी का मन आह्लादित किया। इस हरिकथा में 19 अक्तूबर को स्वामी सच्चिदानन्द जी आचार्य (लालासर साथरी) व 21 अक्तूबर को स्वामी भागीरथदास जी आचार्य (जाजीवाल धोरा) ने उपस्थित होकर आशीर्वचन दिए। बिश्नोई धर्म स्थापना की पूर्व रात्रि 22 अक्तूबर, 2016 को भव्य व विशाल जागरण स्वामी राजेन्द्रानन्द जी के सान्निध्य में लगाया गया। जागरण में स्वामी सुखदेव मुनी, गायणाचार्यों व कलाकारों द्वारा साखियों, आरतियों व सबदवाणी के माध्यम से गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया।

23 अक्तूबर को वह पवित्र दिन आ गया जिसके स्वागत में यह आयोजन रखा गया- यानि बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस। इस शुभ दिन की प्रातः वेला में मन्दिर में यज्ञ प्रारम्भ हुआ और देखते ही देखते मन्दिर का चौक हाथ में सबदवाणी, घी-खोपरे लिए नर-नारियों से भर गया। यज्ञ की ज्वाला आसमान से बातें करने लगी। संतों के सान्निध्य में 120 सबदों का सस्वर पाठ कर यज्ञ किया गया तथा पाहल बनाया। ज्योति दर्शन व पाहल ग्रहण के उपरान्त 11.00 बजे धर्म सभा प्रारम्भ हुई। इस धर्म सभा के मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक, अखिल भारतीय महासभा थे तथा अध्यक्षता चौ. दुड़ाराम, पूर्व संसदीय सचिव हरियाणा सरकार ने की। धर्मसभा के प्रारंभ में आदर्श विद्या मन्दिर, धांगड़ की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् बिश्नोई सभा, फतेहाबाद की ओर से कार्यकारिणी सदस्य श्री मक्खन सिंह डूडी ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए

कथा को संबोधित करते स्वामी राजेन्द्रानन्दजी, स्वामी रामानन्दजी आचार्य एवं स्वामी भागीरथदास जी आचार्य।

हवन में सम्मिलित श्रद्धालुगण।

समारोह में उपस्थित अतिथिगण व श्रद्धालु।

बिश्नोई सभा, डबवाली के सचिव की इन्द्रजीत धारणियां ने जांभाणी पर्वों के साथ-साथ पर्यावरण से जुड़े दिवसों- पर्यावरण दिवस, ओजोन दिवस, पृथ्वी दिवस आदि को भी मनाने का सुझाव दिया। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा जिला शाखा, हिसार के प्रधान सहदेव कालीराणा ने अपने संबोधन में सामाजिक बुराइयों को त्यागने का आह्वान किया। बिश्नोई सभा, सिरसा के सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई ने कहा कि हमें स्थापना दिवस गांव व घर-घर मनाना चाहिए ताकि समाज में चेतना आ सके। बिश्नोई सभा, कुरुक्षेत्र के प्रधान श्री रामसिंह बिश्नोई पूर्व I.P.S. ने शिक्षा के प्रचार व कोचिंग सैंटर खोलने पर बल दिया। अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामसिंह कस्वां ने स्थापना दिवस की बधाई देते हुए बताया कि आगामी 9, 10, 11 फरवरी, 2017 को सेवकदल के 70वें स्थापना दिवस पर मुकाम में

अधिवेशन किया जायेगा। बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल ने अपने संबोधन में स्थापना दिवस को बिश्नोई समाज के लिए सबसे बड़ा त्योहार बताया तथा इसे धूमधाम से मनाने के लिए बिश्नोई सभा, फतेहाबाद को बधाई दी। श्री बैनीवाल ने कहा कि आज पूरे विश्व को गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धान्तों की आवश्यकता है।

स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि बिश्नोई पंथ युक्ति और मुक्ति का मार्ग है। आज मानवमात्र को गुरु जाम्भोजी के वचनों की पालना करनी चाहिए तभी यह सृष्टि बची रह सकती है। समारोह अध्यक्ष चौ. दुड़ाराम जी ने सामाजिक संगठन व एकता पर जोर दिया और कहा कि कलयुग में एकता ही एकमात्र शक्ति है। मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई ने अपने संबोधन में कहा कि बिश्नोई धर्म एक आदर्श है जो मनुष्य को जीने का ढंग सीखाता है। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं का वैश्विक प्रचार प्रचार किया जाए ताकि सारा विश्व उनकी शिक्षाओं का लाभ उठा सके। समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों व ओजस्वी विचार रखने के लिए सुमन मांझू को सम्मानित किया गया। समारोह में सीनियर मॉडल स्कूल, भिरडाना; आदर्श विद्या मन्दिर धांगड़; बाल भारती इंटरनेशनल स्कूल, फतेहाबाद के विद्यार्थियों ने भव्य प्रस्तुतियां दी।

इस अवसर पर बिश्नोई सभा, फतेहाबाद के प्रधान श्री भूपसिंह गोदारा, गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान श्री निहाल सिंह गोदारा, बिश्नोई सभा हिसार के पूर्व प्रधान श्री सुभाष देहडु, सेवकदल फतेहाबाद के प्रधान श्री हंसराज गोदारा, सेवकदल सिरसा के प्रधान श्री कृष्ण सिगड़, बिश्नोई सभा, डबवाली के प्रधान श्री कृष्ण जाजूदा, जीव रक्षा एवं पर्यावरण सभा के प्रधान श्री आत्माराम मांझू, बिश्नोई सभा टोहाना के प्रधान श्री आशाराम लोहमरोड़, महासभा के सचिव श्री सोमप्रकाश सिगड़, समाजसेवी श्री सतपाल गोदारा नीमड़ी व समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मंच संचालन डॉ. सुरेन्द्र कुमार खिचड़ ने किया।

-**विनोद काकड़,** धांगड़, फतेहाबाद

दिल्ली में धूमधाम से मनाया गया बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बिश्नोई धर्म का 532वां स्थापना दिवस, गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण संस्थान भवन, सिविल लाइन्स, नई दिल्ली में हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के तहत रात्रि जागरण में बिश्नोई समाज के ख्याति प्राप्त परम श्रद्धेय संत स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य एवं स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज के सान्निध्य में विशाल भजन संध्या का आयोजन रहा जिसमें समाज के विभिन्न गणमान्य एवं विशिष्ट महानुभवों की उपस्थिति बढ़-चढ़ कर दर्ज की गई।

रात्रि जागरण के पश्चात प्रातः वेला में परम श्रद्धेय स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य, अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा सबदवाणी के साथ ध्वजारोहण कर पाहल का आयोजन किया गया जिसमें समाज के वरिष्ठ समाजसेवी राजेन्द्र डेलू, ओमवीर सिंह IPS, अशोक कुमार (रिटायर्ड ए.डी.सी.), जगदीश चन्द व प्रेमसुख डेलू IPS, अशोक जी भादू, ए.सी.पी. दिल्ली पुलिस की उपस्थिति के साथ देश के भिन्न-भिन्न कोने से आये पर्यावरण प्रेमियों ने हिस्सा लिया। दिल्ली सभा के प्रधान हनुमान सिंह जी, (रिटायर्ड ए.सी.पी.) और कार्यकारिणी के सभी सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने दूर-दूर से पधारे पर्यावरण प्रेमियों का आभार व्यक्त किया तथा साधुजनों द्वारा समाज में फैल रही विभिन्न कुरीतियों को

जड़ से मिटाने की शपथ दिलवायी। कार्यक्रम का संचालन महेश धायल, एम्स नई दिल्ली द्वारा किया गया।

-**महेश धायल,** एम्स, नई दिल्ली

आसोज मेला मुक्तिधाम मुकाम : एक झलक

आसोज अमावस्या को मुकाम समराथल में भव्य मेला सम्पन्न हुआ। इस मेले में देशभर के श्रद्धालुओं ने भाग लिया। हरियाणा, पंजाब एवं सांचौर क्षेत्र के श्रद्धालुओं की संख्या अधिक रही। मेले की गहमागहमी अमावस्या से एक सप्ताह पूर्व ही प्रारम्भ हो गई। डॉ. गोवर्धनरामजी आचार्य एवं स्वामी सच्चिदानन्द जी आचार्य के मुखारविंद से चार दिवसीय जांभाणी हरिकथाओं का आयोजन हुआ। जिसमें हजारों भक्तों ने शिरकत की। कथाओं में परम गुरु जंभेश्वर भगवान के जीवन चरित का सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया गया। मुकाम समराथल में 28 सितम्बर से 30 सितम्बर तक समाज की विभिन्न संगठनों की संस्थाओं की बैठकों के कारण चहल-पहल का माहौल रहा। 30 सितम्बर को मेले के आयोजन के साथ ही मेले का विधिवत समापन हो गया, लेकिन श्रद्धालुओं का जमावड़ा मेले के दो दिन बाद तक लगा रहा।

महासभा सदन की बैठक: 28 अक्तूबर, 2016 को अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की आम सभा की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक के प्रारंभ में महासभा के कोषाध्यक्ष रामस्वरूप जी धारणियां ने फाल्गुन मेले से अब तक के वित्तीय आय-व्यय का ब्यौरा सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। जांभाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष तथा उत्तराखंड से महासभा सदस्य स्वामी कृष्णानंद जी आचार्य ने साहित्य के क्षेत्र में अप्रमाणिक सामग्री प्रकाशित करने पर चिन्ता प्रकट की तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष से इस विषय में ऐसी मनगढंत साहित्यिक सामग्री प्रकाशित करने वाले लेखकों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने का सुझाव दिया। महासभा के जोधपुर जिला प्रधान नारायणराम डाबड़ी ने 12 अगस्त को जोधपुर में महासभा द्वारा आयोजित वन्यजीव संरक्षक रैली का ब्यौरा पेश किया। महासभा के महासचिव विनोद धारणियां ने महासभा द्वारा जिला सभाओं को आबंटित किए गए फंड की जानकारी सदन को दी। डॉ. सरस्वती बिश्नोई ने प्रतिभा सम्मान समारोह के विधिवत आयोजन व प्रतिभाओं को पारितोषिक के लिए निश्चित राशि आबंटित करने का प्रस्ताव रखा।

खुले अधिवेशन में मंचासीन मुख्य अतिथि व अतिथिगण।

खुले अधिवेशन में उड़ी शहीदों को श्रद्धांजलि देते अतिथि व संत समाज।

मेले में उपस्थित श्रद्धालु जन।

सुभाष देहडू(हिसार) ने महासभा के कार्यों के लिए सभी सदस्यों से पूर्ण सहयोग का आह्वान किया। टाईगर फोर्स के अध्यक्ष व जोधपुर से महासभा सदस्य रामपाल भंवाल ने वन्यजीव संरक्षण के कार्यों में लगी संस्थाओं को महासभा द्वारा गंभीरता से सहयोग व संरक्षण की अपील की। जोधपुर से महासभा सदस्य रामनिवास बुधनगर ने मेला व्यवस्था में महासभा के सभी सदस्यों को सात-सात दिन का सहयोग देने का आह्वान किया। सेवकदल के प्रधान रामसिंह कस्वां ने महासभा के सहयोग से भोजनशाला में हो रहे निर्माण कार्यों की जानकारी दी तथा आपने सभी महासभा सदस्यों से सेवकदल में उनकी

सेवाएं देने का आह्वान किया। दिल्ली सभा के प्रधान हनुमानसिंह ने दिल्ली धर्मशाला से संबंधित प्रश्नों के जवाब देते हुए कहा कि धर्मशाला में बेहतरीन व्यवस्था बनाने के प्रयास किए जाते हैं। जोधपुर से महासभा सदस्य भोलाराम जंवर ने दिल्ली धर्मशाला में व्यवस्था बाबत सुझाव दिए। बलदेवराम सोऊ रामड़ावास ने जांभाणी साहित्यिक प्रकाशनों की त्रुटियों की तरफ सदन का ध्यान खींचा। जोधपुर से महासभा सदस्य मूलाराम लोळ ने समाज की पत्रिकाओं की स्टालों के लिए सम्मानजनक व बेहतरीन व्यवस्थाएं करने की तरफ सदन कर ध्यानाकर्षण किया।

महासभा सदन को सुनील नोखा, गंगाबिशन पंजाब, शिवचरण धायल जोधपुर सहित कई वक्ताओं ने संबोधित किया।

अंत में महासभा के राष्ट्रीय प्रधान हीराराम भंवाल ने सभी सुझावों पर अमल करने का विश्वास दिलाया व सभी महासभा सदस्यों से मेला व्यवस्था में सहयोग का आह्वान किया।

अकादमी बैठक: 29 सितम्बर को अपराह्न 3 बजे उत्तर प्रदेश धर्मशाला में अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य की अध्यक्षता में जांभाणी साहित्य अकादमी की बैठक आयोजित की गई। जिसमें वार्षिक प्रतिवेदन, वार्षिक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया व जांभाणी संस्कार शिविर, जांभाणी ज्ञान परीक्षा व अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने बारे विचार विमर्श किया गया।

जागरण : 29 व 30 सितम्बर की रात्री को स्वामी रामानन्द जी आचार्य के सान्निध्य में विशाल जागरण आयोजित किए गए जिसमें साधु-सन्तों, गायणाचार्यों व गायक कलाकारों द्वारा साखी व भजनों द्वारा गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया गया।

यज्ञ : 30 सितम्बर को प्रात: अमावस्या के अवसर पर मुकाम व समराथल धोरे पर 120 सबदों के सस्वर पाठ के साथ विशाल यज्ञ हुए। प्रात: से लेकर शाम तक श्रद्धालुओं द्वारा घी, खोपरे से आहुतियां दी गई।

खुला अधिवेशन : 30 सितम्बर को प्रात: 11 बजे अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा खुला अधिवेशन आयोजित किया गया। खुले अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धान्त सार्वकालिक है। विश्व की सभी समस्याओं का समाधान इन सिद्धान्तों में है। आज जरूरत इस बात की है कि हम इन सिद्धान्तों का पूर्ण मनोयोग से पालन करें। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल भंवाल ने कहा कि सबदवाणी पांचवां वेद है और हमें इसका अध्ययन करना चाहिए। आपने बताया कि महासभा शीघ्र ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग सैंटरों की शुरूआत करेगी।

श्री रामेश्वर लाल डूडी, नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान विधान सभा ने अपने संबोधन में कहा कि आज शिक्षा का युग है समाज को यदि आगे बढ़ना है तो स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। राजस्थान सरकार में संसदीय सचिव श्री लादूराम बिश्नोई ने सामाजिक एकता पर बल दिया तथा अंतरजातीय विवाह को एक बड़ी चुनौती बताया। हरियाणा सरकार के पूर्व संसदीय सचिव श्री दुड़ाराम जी ने सामाजिक संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। पूर्व विधायक श्री हीरालाल बिश्नोई ने कहा कि आज जाने-अनजाने समाज में अनेक बुराइयां पनप रही हैं। हमें उनको दूर करने का प्रयास करना चाहिए। समारोह को श्री हुकमाराम खिचड़, बीकानेर जिला प्रमुख श्रीमती सुशीला, डेयरी चेयरमैन श्री रामलाल गोदारा, टाइगर फोर्स प्रधान श्री रामपाल भंवाल, पूर्व नोखा प्रधान श्री भंवर लाल आदि ने भी संबोधित किया। मंच संचालन मास्टर मनोहर लाल व रूपाराम कालीराणा ने किया। खुले अधिवेशन में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को महासभा द्वारा सम्मानित किया गया। श्री राजेन्द्र जाणी जोधपुर द्वारा इन प्रतिभाओं को 50,000 रुपये की नकद राशि इनाम स्वरूप दी गई। इस अवसर पर बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल, पूर्व प्रधान श्री सुभाष देहडू, महासभा के महासचिव श्री विनोद धारणियां, कोषाध्यक्ष श्री रामस्वरूप धारणियां, सचिव श्री देवेन्द्र बूड़िया, श्री नारायण डाबड़ी, सहदेव कालीराणा, सेवकदल प्रधान रामसिंह कस्वां, गौशाला प्रधान सुल्तान जी धारणियां सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति व संत समाज उपस्थित थे। मेले में अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल व खम्मूराम जी की पर्यावरण टीम का कार्य सराहनीय रहा।

-मूलाराम लोळ

सदस्य, महासभा व सचिव जांभाणी साहित्य अकादमी

संभराथल धोरे में मनाया 532वां धर्म स्थापना दिवस

532वां बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस मुक्तिधाम मुकाम में समराथल धोरा महंत स्वामी रामकृष्ण ने जागरण सत्संग से प्रारम्भ किया।

मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानंद जी ने जाम्भोजी की महिमा, बिश्नोई पंथ की स्थापना पर विस्तृत उदबोधन दिया। उन्नतीस नियम मानव मात्र के जीवन जीने की सहज व सरल विधि है। 531 वर्ष पहले मानव सोच नहीं सकता था, उसी समय गुरु जाम्भोजी ने पर्यावरण व प्राकृतिक एवं वन्यजीव संरक्षण को आचार संहिता दी। स्वामी लक्ष्मीनारायण, स्वामी स्वरूपानन्द, स्वामी प्रेमदास, श्री रामरतन सीगड़, स्वामी हरिनारायण, श्री सहीराम खीचड़, श्री हनुमान धायल ने जाम्भोजी की साखियां, भजन व भावार्थ का उपदेश दिया।

23 अक्तूबर की सुबह मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्द जी के पावन सान्निध्य में मुक्तिधाम मुकाम से शोभा यात्रा निकाली गई। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के द्वारा प्रतिपादित उन्नतीस नियमों की पटिका, भगवा ध्वज लिए हुए जाम्भोजी के जयकारों के साथ मुक्तिधाम मुकाम से शोभा यात्रा को श्री सुल्तान धारणिया, श्री गंगाराम मुकाम, श्री नारायण गोदारा, श्री रामस्वरूप धारणियां कोषाध्यक्ष, श्री सुमेराराम खीचड़, श्री प्रहलाद गोदारा ने शोभा यात्रा को रवाना करवाया। बिश्नोई समाज के हजारों श्रद्धालु मुक्तिधाम मुकाम से समराथल धोरा तपोभूमि तक पैदल, कीर्तन गाते हुए गए। समराथल धोरा पर बिश्नोई समाज के परम पूजनीय संत महात्माओं द्वारा अमृतमयी सबदवाणी द्वारा हवन यज्ञ कर पाहल बनाया। सभी श्रद्धालुओं ने पाहल ग्रहण किया।

ठीक 531 वर्ष पूर्व श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने समराथल धोरा पर उन्नतीस नियमों की आचार संहित प्रदान कर बिश्नोई धर्म का प्रवर्तन किया था। मानव समाज को सद उपदेश देकर के धर्म के रास्ते पर लाये। मानव को जीवन जीने की विधि सहज सरल तरीका बताया। जीओ और जीने दो का मूलमंत्र दिया। प्राकृतिक पर्यावरण वन्यजीवों के संरक्षण का उपदेश उन्नतीस नियमों के द्वारा मानव समाज को दिया, जो आज मानव

के लिए उपयोगी है। अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवकदल भोजनशाला में सभी श्रद्धालुओं ने प्रसाद भोजन ग्रहण किया।

बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस के अवसर पर बिश्नोई समाज के गणमान्य महानुभावों ने जोधपुर वन्यजीव चिंकारा हिरण शिकार प्रकरण सलमान खान के हाईकोर्ट बरी फैसले के खिलाफ, राजस्थान सरकार द्वारा अतिशीघ्र अनुमति याचिका (एसएलपी) सुप्रीम कोर्ट में दायर करवाने व विधि सहयोग कार्यवाही हेतु अटोर्नी जनरल को नियुक्त करने पर श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार, श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ चिकित्सा स्वास्थ्य एवं विधि मंत्री राजस्थान सरकार का बिश्नोई समाज की तरफ से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

-विनोद धारणियां, महासचिव
अ.भा. बिश्नोई महासभा, मुकाम, बीकानेर

सामाजिक क्षति

महन्त रतिराम जी जाम्भा (शिष्य स्वामी भरतराम जी) का 5 अक्तूबर, 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। आप जाम्भोलाव धाम की आथुणी जांगा के महन्त थे। स्वामी रतिराम जी एक सरल हृदयी, मितभाषी संत थे। जाम्भाणी साखियों एवं भजनों के सुप्रसिद्ध गायक थे। बिश्नोई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आपने अथक प्रयास किए थे। जाम्भोलाव धाम पर आपने छ:मासी विशाल यज्ञ का आयोजन करवाया था। जाम्भोलाव धाम के मन्दिर के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ करवाने हेतु आपने विशेष प्रयत्न किए। गत एक वर्ष में आपने यज्ञ चेतना यात्रा के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों में विशाल यज्ञ आयोजित किए व लोगों को यज्ञ को दैनिक जीवनचर्या का अंग बनाने के लिए प्रेरित किया। आपने जाम्भा आश्रम में अनेक कमरों का निर्माण करवाकर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सराहनीय कार्य किया। गुरु जम्भेश्वर भगवान दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे। समाज आपके द्वारा की गई समाजसेवा को सदैव याद रखेगा।

अथाह समुद्र की तली कब मिलेगी?

अमर ज्योति के अक्तूबर अंक में स्वामी शिव ज्योतिषानन्द, अमजेर द्वारा लिखा गया लेख 'नेपाल में नौ बीसे' बहुत ही रोचक, ज्ञानवर्धक, एक नवीन खोज के रूप में पढ़ने को मिला। स्वामी जी का प्रयत्न तथा गहराई में जाकर तथ्यों सहित विवरण देना सराहनीय है। इससे नेपाल में बिश्नोई समाज व गुरु महाराज के शिष्यों के वृहद् क्षेत्र के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त हुआ।

बिश्नोई महासभा व इसके अधीन आने वाली अन्य संस्थाओं, शोधकर्त्ता व बिश्नोई समाज के विद्वानों के पटल पर खोज व वास्तविकता जानने के लिए बहुत बड़ा मुद्दा रख दिया। इस दिशा में स्वामी कृष्णानन्द जैसे निर्मोही विद्वान सन्तों द्वारा मंथन करके समाज के सामने एक सटीक वास्तविकता को बताने की जवाबदेही बनती है क्योंकि वे बिश्नोई समाज की एक साहित्यिक संस्था, जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही है, उसके अध्यक्ष व विश्व के एक नामी तीर्थस्थल में स्थित बिश्नोई समाज के मन्दिर के महन्त भी हैं।

कालान्तर में भी अनेक दंत कथाएं दाएं-बाएं से सुनने में आया कि अफगानिस्तान में भी पठानों के एक बहुत बड़े क्षेत्र में गुरु जम्भेश्वर महाराज के अनुयायियों का निवास है जो अपने ईष्ट को 'जंभोईया पीर' के रूप में मानते हैं। इसी प्रकार गत वर्ष मुकाम मेले में भी कुछ जिज्ञासु बता रहे थे कि उड़ीसा में एक बहुत बड़ा जम्भेश्वर महादेव का मन्दिर है।

इन किंवदंतियों की वास्तविकता व इसकी तह में कब कोई विद्वान या महासभा द्वारा अधिकृत प्रतिनिधि मण्डल जाकर हकीकत से रूबरू करवाएगा। इस समय शोध व साहित्य सृजन में लगे बिश्नोई विद्वान जैसे डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, डॉ. सुरेन्द्र बिश्नोई, डॉ. सोनाराम बिश्नोई, डॉ. किशनाराम बिश्नोई, डॉ. बनवारी लाल सहू, डॉ. सरस्वती बिश्नोई आदि-आदि व अन्य विद्वान जो बिश्नोई समाज व गुरु महाराज के संदर्भ में कुछ नवीन खोज की जिज्ञासा रखते हैं जैसे डॉ. बाबूराम, डॉ. ब्रह्मानन्द, डॉ. रोहताश सुथार आदि-आदि के लिए भी एक बहुत बड़ा साहित्यिक शोध का समुद्र है। जिसमें इन विद्वानों को ही गोते खाकर विश्व के सामने एक नवीन इबादत लिखनी है। जिसे उत्सुक व खोज करने वाले विद्वानों के लिए काफी सामग्री जैसे वहां के लोगों के ईष्ट में आस्था, प्रार्थना करने का स्वरूप, कब से कैसे गुरु महाराज के शिष्य बने उनकी वेशभूषा, उनकी भाषा आदि वृहद् विषय हैं।

स्वामी शिवज्योतिषानन्द द्वारा प्रस्तुत लेख में श्री जम्भेश्वर मन्दिर व चित्र का वर्णन व 29 नियमों को पालने में जैसे 30 दिन सूतक सहित सभी नियमों का पालन करते हैं। यदि ऐसा है तो वहां अविलम्ब जाकर वहां के लोगों का सहयोग लेकर वर्ष में दो बार या प्रत्येक अमावस्या को वहां मेला लगाना चाहिए व प्रचार-प्रसार करके तथ्य प्रस्तुत करे। वहां के स्थानीय धर्माचार्यों, विद्वानों व प्रमुख लोगों के साथ लेने से ही यह कार्य संभव होगा। प्रयत्न करने पर सब कुछ हो सकता है।

खेजड़ली में एक छोटा-सा मन्दिर था तथा ना कोई वहां प्रचार था, न प्रसार था, ना लोगों को कोई ज्ञान था। किसान बाहुल्य क्षेत्र था। लोग अपनी सामान्य दिनचर्या व्यतीत करते थे। परन्तु बिश्नोई समाज के पुरोधा, जत्थेदार श्री संतकुमार जी राहड़ की रगों में उनके पूजनीय पड़दादा सन्त श्री साहिबराम जी का रक्त प्रवाह हुआ और श्री संतकुमार जी ने निरन्तर पांच वर्षों तक उस क्षेत्र का दौरा किया। वहां के प्रमुख लोगों से सम्पर्क किया तथा बलिदानियों के नामों की एक 363 शहीदों की सूची बनाई व क्षेत्र के लोगों को जागृत किया। वहां पर मेले का आयोजन करने का प्रस्ताव महासभा के सामने प्रस्तुत किया। परन्तु कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। किन्तु वृद्ध शेर ने हार नहीं मानी व अपने शहीदों के ऋण से उऋण होने के लिए मेले के रूप में श्रद्धांजलि देना का विकल्प चुना। इस आवागमन में मुझे भी उनके साथ कई बार जाने का

अवसर मिला। सितम्बर मास में पड़ने वाले शहीदी दिवस पर खेजड़ली मेला लगाने की घोषणा श्री संतकुमार जी ने स्वयं ही कर दी। मेले का वह दिन भी आ गया और रात्रि जागरण प्रात: हवन दोपहर को खुला अधिवेशन हुआ। इस प्रथम मेले में हिसार से मैं व श्री राजाराम जी लाम्बा कालवास गये थे। वहां की व्यवस्था स्थानीय लोगों के साथ श्री बिराराम जी बाबल के नेतृत्व में चल रही थी। मंच पर स्वामी रामानन्द जी युवा संन्यासी ने मेला लगाने के लिए संतकुमार जी के स्तुत्य प्रयास की प्रशंसा की व खेजड़ली बलिदान का चरित्र-चित्रण जन समूह के सामने प्रस्तुत किया। इसी प्रकार नौ बीसी नेपाल के लिए श्री शिवज्योतिषानन्द जी को ही श्री संतकुमार बनना होगा।

-नरसीराम बिश्नोई
1135, सैक्टर 14, हिसार
मो. 9255567900

भारतीय संस्कृति और बिश्नोई समाज

भारतीय संस्कृति की सम्पूर्ण विश्व में अपनी विशेषताओं और श्रेष्ठता के कारण अनूठी पहचान है। भारतीय संस्कृति में अनेक वीर, महापुरुष तथा अनेक सम्माननीय व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने इस संस्कृति के गौरव को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक ऋषि, महात्माओं, साधु-सन्तों ने अपनी एकाग्र शक्ति तथा कठिन तप के द्वारा देवताओं को भी अपने पास बुला लिया था अर्थात् कठिन परिश्रम से असंभव कार्य को भी सम्भव बना लिया था। ऐसे महान विभूतियों ने भारत की भूमि पर जन्म लिया है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में सर्वोच्च एवं सम्माननीय संस्कृति मानी जाती है। भारतीय संस्कृति में 'बिश्नोई समाज' भी अपनो अनूठे इतिहास एवं पर्यावरण प्रेम के कारण प्रसिद्ध है। यह वो 'बिश्नोई समाज' है जिसने वृक्षों की खातिर अनेक बलिदानियों ने हंसते-हंसते जान दी है। यह एक अत्यन्त पर्यावरण प्रेमी समाज है जो अपने बच्चों से भी अधिक पर्यावरण एवं पशु पक्षियों का ख्याल रखता है। पर्यावरण प्रेमी के रूप में बिश्नाई समाज भारत में नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में बिश्नोई समाज अपनी एकता, सद्गुणों, शुद्धता, पवित्रता, सद्भावना तथा ईश्वर के प्रति श्रद्धा के लिए जाना जाता था। परन्तु वर्तमान पीढ़ी इसके संदर्भ में खिलवाड़ करती नजर आ रही है। आज बहुत से बिश्नोई लोग चोरी, डकैती, लूट आदि आपराधिक मामलों में लिप्त दिखाई दे रहे हैं। कुछ लोग पर्यावरण को भी क्षति पहुंचा रहे हैं। वो अपने गौरवमयी इतिहास को क्यों भूल रहे हैं। उन्हें अपने इस इतिहास को याद करना चाहिए। आज इस स्वार्थपूरित संसार का बिश्नोई समाज पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। आज बिश्नोई समाज के लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं। दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझ नहीं पा रहे हैं। आज अगर किसी व्यक्ति पर कोई विपदा आती है तो दूसरे लोग उसका साथ न देकर उलटे खुश होते हैं। क्या ऐसा था हमारा बिश्नोई समाज ? आज 29 नियम केवल दिखावे मात्र ही रह गये लोग इसकी पालना करने के बजाय गाड़ियों के पीछे लिखने में उपयोग करते हैं तथा अपने आपको सच्चा बिश्नोई मानते हैं क्योंकि वो यथार्थ से परे हैं। वो बिश्नोई की परिभाषा नहीं जानते। वो बाहरी तौर पर ही बिश्नोई शब्द को जानते हैं। वो अपनी जाति की प्रधानता रखते हैं। वो जाति के आधार पर ही अपने आपको बिश्नोई मानते हैं। परन्तु 29 नियम की पालना नहीं करते क्योंकि 29 नियम पालने वाले ही सच्चे बिश्नोई कहलाते हैं। अत: सम्पूर्ण बिश्नोई समाज से मेरा निवेदन है कि श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के बताए नियमानुसार जीवन जीवें। सभी आपस में एकता रखें। एक-दूसरे का सम्मान करें तथा इस प्रकार हमें एक बार फिर सम्पूर्ण विश्व के सामने बिश्नोई समाज को गौरवान्वित करना होगा। जिससे विश्व के इतिहास में बिश्नोई समाज का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो जाए। इस समाज की प्रगति का जिम्मा समाज के युवा वर्ग पर है। युवा वर्ग को मेरा संदेश है। नशे से दूर रहे तथा समाज के अन्य लोगों को भी इससे दूर रहने की प्रेरणा दे।

आप कमाओ आप खाओ, यह प्रकृति है।
दूसरा कमाए आप छिन के खाओ, यह विकृति है।
आप कमाओ और दूसरों को खिलाओ, यह भारतीय संस्कृति है।

-सचिन कुमार सिंवर
सुपुत्र श्री सुखराम सिंवर
गांव बज्जु, जिला बीकानेर (राज.)
मो. : 9660306278

जम्भकथा

वनदना श्री गुरु पद कमल, सच्चिदानंद स्वरूप।
जग तारण कारण प्रभु, प्रकटे धर नर रूप॥
निराहार सत रूप थे सत् गुरु जम्भ करतार।
अपने भक्तन के हितु, लीन्ह मनुज अवतार।
शत-शत प्रभु मैं नमन करूँ, पकड़ो बांह कर्त्तार।
सत बुद्धि मुझको दीजिये, 'अटल' होय भव पार॥
राजस्थान मरु प्रदेश, एक जनपद को नागौर कहते हैं।
जिसमें पीपासर एक ग्रास बसा, जहां पवांर लोहट जी रहते हैं॥
ये धर्म प्रिय सुशील सदाचारी, ग्राम के एक सम्पन्न व्यक्ति थे।
बुद्धि मति सुशील पत्नी उनकी, हंसा जी उनको कहते थे।
धर्म प्रेम में दोनों रहते रत, विचार पवित्र महान् उनके थे।
लेकिन न थी संतान कोई, जिससे मन में दुख मानते थे॥
दुर्दिन जब मानव पर आते हैं, बुद्धि भी काम न देती है।
सही कार्य भी उल्टे होते, नहीं कुछ भी पार बसाती है॥
जब मानव के शुभ दिन आते, गलत कार्य सही हो जाते हैं।
लोहट के साथ ऐसा ही हुआ, विधि के विधान न जाने जाते हैं॥

एक बार मरु देश में, पड़ा भयंकर काल।
त्राहि-त्राहि मचने लगी, हुए सभी बेहाल॥

बिना वर्षा वहां पानी नहीं, पीने का मिलता था।
करें क्या सोचते सब ही, नही मन धीरज धरता था॥
गये सब गऊवों को लेकर, आश्रम अन्यत्र जहां पाया।
चले लोहट भी गऊवें लेकर, वास छापर में था पाया॥
चराते गाय दुखी मन से, नहीं संतान थी कोई।
यही थे सोचते मन में, नहीं आशा है, अब कोई॥
अचानक थी चली आँधी, न सूझा मार्ग जंगल में।
गया हो अस्त है भानु, घटा छाई है अम्बर में॥
लगी पड़ने वहां वर्षा, गए घिर (लोहट जी) वन में।
बैठकर एक वृक्ष के नीचे, बिताई रात जंगल में॥
चले प्रातः ही उठ करके, वे निज विश्राम स्थल को।
मार्ग में जोधाजाट मिला, वह देखकर कहने लगा इनको॥
मैं सगुनकर चला था घर से, परन्तु मार्ग में कहां से आ गया।
जा रहा था बाजरी बोने में, पर तूने मेरा अपसगुन किया॥
न होगा खेत में पैदा कुछ भी, यदि मैंने खेत को बोय दिया।
हे धर्त निपूते पाजो तू, प्रातः ही कहां से आय गया॥
खेत बो बीज भी व्यर्थ करूँ, कुछ भी पैदा नहीं होवेगा।
यह कह वापिस घर को चला, कटु वचन कह लोहट को त्रास दिया।
सोचा लोहट ने निज में, यह जीवन व्यर्थ है अब मेरा।
ग्लानि हो गई मन में, बड़ा ही दुर्भाग्य है मेरा॥
मुझ से लोगों को घृणा बहुत, संसार में रहना है व्यर्थ मेरा।
ऐसा जीवन किस काम का है, जहां होता है अपमान मेरा॥
अब नहीं जाऊँगा मैं घर को, जीवन ही वन में बिताऊँगा।
वृक्षों के नीचे वास करूं, ईश्वर में ध्यान लगाऊँगा।
एक वृक्ष के नीचे बैठ गए, मन को ईश्वर में लगाया है।
खाना-पीना सब त्याग दिया, सच्चे मन से विष्णु को ध्याया है॥
अन्तर्यामी विष्णु ने जान लिया, लोहट मेरा ध्यान लगाए है।
साधु का वेश बना करके, वे लोहट के पास पधारे हैं॥
योगी ने लोहट से आन कहा, किस कारण ध्यान लगाए रहे।
क्या कोई विपदा आई तुम पर, गृह त्याग यहां जो आए रहे॥
आँख खुलते ही एक योगी देखा, लोहट ने करबद्ध प्रणाम किया।
लोहट ने साधु को अपना, सारा ही वृतान्त बतलाय दिया॥
योगी ने लोहट की बात सुनी, करो न चिंता आशीर्वाद दिया।
मत घबराओ मन में अपने, इच्छा पूर्ण होगी बतलाय दिया॥

साधु कथन-

सताया है भूख ने मुझको, करो तुम तृप्ति मेरे मन की।
पिलओ कुछ दूध ही मुझको, जिससे क्षुधा मिट जाएगी मन की॥
साधु को बात सुनकर लोहट, करबद्ध वह कहने लगे उनसे।
यहां नहीं गऊ पास है कोई, दूध दूं लाकर मैं कहां से॥
एक औसर चुग रही पास होई, योगी ने उन्हें बतला दिया।
कहा! लाओ दुहकर तुम इसको, यह सुन लोहट ने उत्तर दिया॥
यह बिन ब्याही ही औसर है, ये दूध नहीं दे सकती है।
आपकी इच्छा मैं कैसे पूर्ण करूं, मेरी बात समझ में न आती है॥
योगी ने कहा श्री लोहट से , मेरी बात में शंका ना करना।
यह दूध अवश्य देगी तुमको, न मन में कुछ शंका करना॥
साधु का कथन सुन लोहट, औसर के पास वह चले गए।
जाकर हाथ को उस पर फेरा, फिर दुहने उसको बैठ गए॥
न विचलित हुई वह खड़ी रही, दूध आसानी से उसने दिया।
उठ चले वहां से लोहट जी, जो दूध योगी को भेंट किया॥
कुछ दूध योगी ने पान किया, शेष लोहट को पिला दिया।
साधु ने कहा घर जाओ अपने, पूर्ण होगी इच्छा आशीर्वाद दिया॥
तेरे मन को मिटे दुविधा,पूर्ण साधु ने सुनाई है।
स्वयं मैं जन्म लूं आकर, नहीं इसमें मिताई है॥
उसी समय हंसा को भी, एक बाला योगी दिखाई दिया।
सखियों के पास से उठकर, उसने साधु का सत्कार किया॥
निज व्यथा सुनाई है उसने, योगी ने स्वयं विचार कहा।
अब नहीं करो मन में चिंता, पूर्ण होगी इच्छा आशीर्वाद दिया॥
यह कह योगी रम गया, चलेकर पहुंचा अपने धाम।
विष्णु ने युक्ति सोच समझ, नभ में छा दी घटा घनश्याम॥
वर्षा अच्छी हो गए वहां, हरियाली सर्वत्र छाई है।

गोवल वास बिता सब घर आए, सबने मिल खुशी मनाई है॥

बदी अष्टमी भद्रपद, सम्वत पंद्रह सौ आठ।
कृतका नक्षत्र दिन सोम है, सभी मना रहे ठाठ॥

सभी मना रहे ठाठ, पीपासर बजी बधाई है।
नगरी में खुशी मना रहे, हंसा ने ललना जाई है॥
हर्षित हो सभी कहते आकर, प्रभु की अनुपम माया है।
अवतरित हुए श्री विष्णु जी, जाम्भेश्वर नाम धराया है॥
दर्शन करने सब देव चले, मन में अपार सुख पाया है।
शीघ्र लौट हमें दर्शन देना, गुरु से वचन फरमाया है॥

वन्दना श्री गुरु पद कमल, सच्चिदानन्द स्वरूप।
जग तारण कारण प्रभु, प्रगटे घर नर रूप॥
निराहारी सत रूप है, सत गुरु जम्भ करतार।
अपने भक्तिन के हितू, लीन्हों मनुज अवतार॥

वर्ष सात गुरु मौन रहे, मुख से कुछ नहीं कहते हैं।
हुई मात-पिता को अति चिंता, वे ईश से ध्यान लगाते हैं॥
लोगों ने कहा श्री लोहट से, एक भौंपा नागौर में आया है।
वह पूर्व देश का रहने वाला, बड़ा करामाती व चातुर है॥
हंसा ने सुन कहा लोहट से, कुछ जन का मुझसे कहते हैं।
नागौर में आया है जो पंडित, आप क्यों ना उसे बुलाते हैं॥
हंसा दुखी हृदय कहे, लोहट को समझाय।
बालक कुछ बोले नहीं, करिये कोई उपाय॥
करिये कोई उपाय, शीघ्र नागौर को जाओ।
तांत्रिक कोई आया वहां, उसे साथ ले आओ॥
अटल कहे विज्ञ बहुत, यदि पूर्ण हो जागी मंशा।
मुंह मांगा धन उसे, दक्षिणा में देगी हंसा॥
पीपासर से चल दिए लोहट, मन अपने में रहे विचार।
ऐसी क्या करनी हो गई, जिससे सब विधि हुए लाचार॥
सब विधि हो गए लाचार, नहीं कुछ बात समझ में आई।
ढलती उम्र में जन्मा पुत्र, वह बिल्कुल न जुबां हिलावै॥
नागौर में जाकर लोहट ने, पंडित को शीश नवाया है।
फिर कर बद्ध हो पंडित को, सब ही वृतान्त बताया है॥
सुनकर पंडित ने लोहट कथन, दोनों ने ही प्रस्थान किया।
जब पहुंच गए वह पीपासर, एकत्रयज्ञ का सम्मान किया॥
पंडित खेमकरन ने पीपासर से, गोबर से स्थान लिपवाया है।
एक सौ आठ चौमुख दीप बना, सबमें ही घी भरवाया है॥
चौसठ छेद का एक कलश मंगा, जितना जल आया भरवाया है।
फिर जाम्भो जी को बुलवा कर, सामने जमी पर बैठाया है॥
पंडित ने दीपक जलाते हुए, सब देवों को याद किया।
सारा ही परिश्रम व्यर्थ गया, वहां जला एक भी नहीं दीया॥
वह देवी का जाप लगा करने, जम्भ पर उड़दों को फेंक रहा।
रूठा है देव कोई भारी, जो कुछ भी नहीं बतलाय रहा॥
यदि दीपक एक भी जल जावे, तब यह बालक बोल जाये।
इस पर है कोई बड़ा देव, जिस पर न असर कुछ हो पाये॥

जाम्भो जी का सबको चमत्कार दिखाना

पंडित को देखा परेशान बहुत, प्रात: से दोपहर होय गया।
काम न आई उसकी ठग विद्या, था सर उसका चकराय गया॥
चुपचाप उठे जाम्भो वहां से, घड़े के पास आये हैं।
लेव वह कच्चा करवा, वे कुएं के ऊपर पठाये हैं॥
वह कच्चा करवा जो लेकर आए, उसमें कच्चे सूत को बांध लिया।
कुएं में उसे लटकाय कर, जल भर कर उसे निकाल लिया॥
फिर उसी स्थान पर आकर, जल को दीपकों में डाला है।
बजाई चुटकी गुरु जी ने, हुआ दीपकों का उजाला है॥

ग्राम वालों ने देखा यह अद्भुत दृश्य।
पंडित कर जोड़ नत मस्तक हुआ॥
आवागमन चक्र से मैं कैसे छुटूं।
पंडित का गुरु जी से प्रश्न हुआ॥

(जम्भ कथन - सबद १)

कहां जम्भेश्वर ने पंडित से, क्यों मानव मन भ्रमित करते हो।
उस परमपिता परमेश्वर को, नहीं सच्चे मन से भजते हो॥
पहचानों पहले उस गुरु को, जिसने निज मुख उपदेश दिया।
शीलव्रती तपी विद्या धारी, जिसने अनहद ध्वनि नाद किया॥
जिसने संसार की रचनाकर, कल्याणार्थ वेद बनाए हैं।
वह गुरु पहचानों हे पंडित, जिसको माया सब भरमाये हैं।
जिसका न पार कोई पाया, रुद्र रूप हो सर्वत्र समाया है।
मानव देह समाया जैसे रुधिर, त्यों चेतन ज्योति समाया है॥
गुरु आप स्वयं संतोषी हैं, जीव का पालन पोषण करते हैं।
महा रसीली वाणी द्वारा, श्रोता को मुग्ध कर देते हैं॥
ज्यों मिट्टी के कच्चे बर्तन में , दूध-पानी न रूक सकता है।
लेकिन अग्नि में पक कर के, हर वस्तु धारण कर सकता है॥
तैसे मलीन अंत: करण में, सतज्ञान नहीं रूकने पाता।
पर अग्नि रूपी सतज्ञान से ही, ज्ञान रूपी अमृत है पाता॥
दही से मक्खन जब काढ़ लिया, बस छाछ शेष रह जाता है।
मानव की भी है यही दशा, न आत्म ज्योति जानी जाती है॥
ज्यों खुशराणी पत्थर द्वारा, लोहे का जंग छूट जाता है।
वैस ही सतगुरु सतसंग से, अज्ञान ठहर नहीं पाता है॥
पानी से भरी परवाल ज्यों, त्यों ही मानव तन जान।
एक ही छेद के कारने , सब खाली हो जाय परवाल॥
मानव देह से जीव निकल, जब चला यहां से जाता है।
सतगुरु मिटाते मानव दुख को, सतज्ञान ही दुख का त्राता है॥
जैसे मिट्टी के कच्चे बर्तन में, कृष्ण चरित बिन जल न रह सकता।
उसी तरह गुरु कृपा बिना, मन का मल नहीं कट सकता॥

उदयवीर सिंह पुत्र श्री शिवचरन सिंह
एस.ई.178, शास्त्री नगर
गाजियाबाद (यू.पी)

जांभाणी साहित्य के विकास में आलमजी का योगदान

मध्यकालीन राजस्थानी और हिन्दी काव्यधारा में जांभाणी काव्य परंपरा का अपना विशेष स्थान और पहचान रही है । इस काव्य परंपरा की नींव बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जांभोजी ने डाली थी जिसे परवर्ती कवियों ने पुष्पित और पल्लवित किया । मध्यकालीन समाज के ताने बाने में गेय काव्य अर्थात् गीत, साखी, हरजस, पद, भजन आदि के प्रति लोक रूचि का ध्यान रखते हुए सभी भक्त कवियों और संतों ने गेय काव्य में अपने भावों को अभिव्यक्त किया।

जांभाणी पंथ में हुजूरी तथा परवर्ती काव्य परंपरा में महाकवि आलमजी का विशेष योगदान रहा है। आलमजी उच्च कोटि के कवि होने के साथ साथ संगीत कला में भी पूर्ण निपुण थे जिसका प्रभाव उनकी काव्य रचना में मौजूद संगीतात्मकता और नाद सौन्दर्य में स्पष्ट देखा और अनुभूत किया जा सकता है। महाकवि आलमजी के साहित्य पर चर्चा करने से पहले उनका संक्षिप्त परिचय जानना हमारे लिए आवश्यक है।

आलमजी का जन्म तत्कालीन जोधपुर रियासत के बंधड़ा गांव में विक्रम संवत् 1530 के आसपास वैश्य कुल में हुआ माना जाता है। आपके पिता श्रीमान रायमलजी अग्रवाल अपने समय के प्रसिद्ध व्यापारी थे तथा माता अंतरा देवी धार्मिक विश्वास वाली महिला थी। आपके जन्म से संबंधित ये दोहा जन जन में आज भी विख्यात है–

'सम्वत पनरासे तीस में, बंधड़ा नगर अग्रवाल कुल खास।
माता अंतरा पिता रायमल, जहां जन्में आलमदास।'[1]

आलमजी बाल्यकाल से ही साधु संतों के साथ रहने एवं भजन कीर्तन में विशेष रुचि रखते थे। यही कारण था कि अतिशीघ्र संगीत विद्या में उन्होंने निपुणता हासिल कर ली। भारतीय संगीत की प्रसिद्ध राग रागिनियों का आलमजी को विशेष अभ्यास था जिसके बलबूते अनेक राजकीय दरबारों में उन्होंने जांभाणी संगीत की प्रस्तुति देकर प्रचार–प्रसार किया। संगीत के साथ साथ एक दुर्लभ संयोग ये था कि आलमजी महान कवि भी थे। उन्होंने अनेकों साखियों, भजनों, हरजसों की रचनाओं से जांभाणी साहित्य को विशेष योगदान दिया। उनके द्वारा रचित साखियां और हरजस आज भी भक्तों के कण्ठों के हार है। किशोरावस्था तक आते आते आलमजी को गुरु जांभोजी का आशीर्वाद मिल चुका था जिनसे प्रभावित होकर आलमजी गुरु जांभोजी की शिष्य मंडली में शामिल हो चुके थे जहां आजीवन पीड़ित मानवता की सेवा करते रहे।

लोक विश्वासों और किंवदंतियों के अनुसार आलमजी जांभोजी के अत्यन्त प्रिय और लाडले शिष्यों में से एक थे।

आलमजी जांभोजी के उपदेशों तथा साखियों आदि को लिपिबद्ध करने का कार्य किया करते थे। गुरु जांभोजी जहां भी जाते थे आलमजी को अपने साथ रखते थे । जब गुरु महाराज ने अपनी मुंहबोली बहन उमाबाई का रोटू गांव में भात भरा था तो आलमजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस भात में कुंकुमपत्री लिखकर भिजवाने की जिम्मेदारी आलमजी ने ही निभाई थी। आलमजी जीवनपर्यन्त गुरु जांभोजी के साथ भ्रमण कर पंथ का प्रचार प्रसार करते रहे। जांभोजी के अंतर्धान होने के बाद आलमजी को ये संसार नि:सार सा लगने लगा और वे घूमते घूमते जोधपुर जिले की वर्तमान ओसियां तहसील के भीकमकोर गांव में पहुंचे जहां वि.सं. 1610 में जीवित समाधि लेकर परलोक गमन किया। उनकी समाधि से संबंधित ये दोहा आज भी प्रसिद्ध है –

भीकमकोर धर्म की गादी जहां आलम लिवी समाधि।
कस्वें थे जाट अनादि लिवी पाहल मिटी सब व्याधि।1।

उपर्युक्त संक्षिप्त जीवन परिचय से ये बात तो स्पष्ट हो जाती है कि गुरु जांभोजी के हुजूरी शिष्यों में आलमजी का महत्वपूर्ण स्थान था और उन्होंने ना केवल जांभाणी साखियों और हरजसों की रचना की थी बल्कि अपनी मधुर वाणी में विभिन्न राग रागिनियों में उन्हें आम जनता से लेकर राजदरबारों तक प्रस्तुत

भी किया था। जांभोजी रै भक्तां री भक्तमाळ में हुजूरी कवियों और भक्तों की सूची में आलमजी का वर्णन इस प्रकार है–

जो सुरजन हुवा सुजाण, ध्यायौ विसन मिटाया मांण।
केसो आलम किया बखाण, कथा कीरतन गाया जाण॥ [2]

तत्कालीन सामन्ती समाज में जनता सारी निरक्षर थी। उसे काव्य सिद्धांतों और साहित्य का ज्ञान न के बराबर था। ऐसे में भक्तिकालीन संतों ने गेय साहित्य के माध्यम से सरस भाषा में जनता के बीच अपनी बात रखी। महाकवि आलमजी ने भी साखियों और हरजसों के माध्यम से अपनी रचनाएं आम जनता के बीच रखी। बिश्नोई पंथ में प्रचार प्रसार के लिए जागरण का प्रचलन आज भी कायम है जिसमें जांभाणी पंथ का प्रचार प्रसार साखी और भजनों के माध्यम से किया जाता है। आज भी आलम जी की साखियां उसी उत्साह और सरसता के साथ गाई और सुनी जाती है।

बिश्नोई पंथ में जागरण का आरम्भ आलमजी की साखियों की मधुर स्वर लहरी के साथ ही किया जाता है। इनमें जुमले की साखी भी शामिल है। आलमजी ने अनेक साखियां और हरजस लिखे हैं जिनकी निश्चित संख्या बता पाना तो कठिन है परंतु उपलब्ध साहित्य के अनुसार लगभग पंद्रह साखियां इनकी प्रचलित हैं। कुछ प्रमुख साखियां इस प्रकार है जो काव्य कला का भी उत्कर्ष दखाती है –

'साधे मोमणे कियो छै अलोच, जमो रचाइयौ।
इण जुमले ने पूजेला किरोड, गुरुजी फरमावियो।
दिल का दुसमण पाल, तो रल मिल जुमले आइए।
मोमिणो मेलि मन की भ्रांत, तिमिर चुकाइए।' [3]

आलमजी की शिक्षा दीक्षा के बारे में कोई प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती है परंतु जीवनानुभव और काव्याभिव्यक्ति का इन्हें जबर्दस्त ज्ञान था। इनकी साखियों में गहरी दार्शनिकता और रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। आत्मा परमात्मा के दर्शन और मिलन को व्याकुल रहती है और ये व्याकुलता इस हद तक पहुंच जाती है कि अगर ईश्वर से मिलन नहीं होगा तो उनके विरह में वे तड़प-तड़प कर जल से निकाली मछली की तरह प्राण त्याग देंगे। एक साखी में ऐसी ही अभिव्यक्ति के दर्शन –

'मेलो कीजे माधवा तेरा जन कोड कराय।
वां मिलिया हम जीवौं बिन मिलियां मर जाय।
बाल सनेही म्हारो सायबौ अति ही पियारो पीव।
हरि मुख देखण के कारणै तलफत म्हारो जीव।
देखे भाई नागर नंद रो कान्हवो मेरो परम दयाल।
आलम प्रभुजी रो लाडलो गिरधर लाल गवाल।' [4]

भक्तिकालीन काव्य में अनेक भरतीय काव्य की काव्य रूढियों और प्रतीकों का प्रयोग किया गया है जैसे सुआ, मधुकर, कूप, बुलबुला, सपना आदि का प्रतीक रूप में प्रयोग कर संतों ने अपनी बात कही है।

भक्तिकाल में सर्वाधिक चर्चित और प्रसिद्ध प्रतीक भंवरा ही रहा है स्वयं जांभोजी से लेकर कबीर सूरदास मीराबाई, दादूदयाल, रैदास आदि संतों ने भंवरे को घुमंतु और अस्थिर मानसिकता के प्रतीक रूप में वर्णित किया है। आलमजी ने भी भंवरे का प्रयोग अपनी साखी में बड़े सुंदर ढंग से किया है और वे अपना संदेश देने में भी सफल रहे हैं –

'चल मधुकर वहां देसडे, जहां आपणों नही कोय।
जिण खण्ड सूर नहीं उगो, मुवा न सुणियो कोय।
अच अमिय अति नां बरस, मन मधुकर होय सुरंग।
उड आलम मधुकर भंवर, मिल्यौ गुरु जंभ अचंभ।' [5]

इस प्रकार से साखियों में प्रतीकात्मकता का प्रयोग करते हुए अत्यंत सरस शब्दावली में काव्य रचना की है जो आज भी जांभाणी गेय साहित्य में नींव की ईट मानी जाती है।

साखियों के साथ साथ बिश्नोई समाज और पंथ में हरजसों का बडा महत्व है ये हरजस लोक जीवन की पहचान हैं। हरजस अर्थात् हरि के यश का गुणगान करना आलमजी द्वारा रचित हरजस जनमानस की जुबान पर बडे सरस ढंग से मौजूद रहते हैं। साथ ही साथ इन हरजसों में जीवन जीने का तरीका और उपदेश भी मौजूद रहते हैं। कवि आलम जी के द्वारा एक हरजस में ईश्वर की भक्त वत्सलता और भेदभाव रहित छवि के दर्शन इस प्रकार होते है –

'दुरयोधन का मेवा त्याग्या, साग विदर घर पाईयै।

टूटी-सी छान मा घन बरसै, प्रीति के पिलंग बिछाइयै।
तम तो भाख विदर जी पै कीन्हौं, मेरे भी आंगन आइयै।
नार कहे प्रभु सुन गुरु नायक, अपनो नांव बताइयै।'[6]

'दुरयोधन जग छाडि के, आय अरोग्यो साग।
सुव सवी भुंयजल तर्‌या, धनि धनि विदर को भाग।
पंच सातां नव बारहा, करि तेतीसां जोड।
प्रभु अलमै मेलो कियो, भगत बछल रिणछोड।'[7]

हरजस लोक साहित्य और लोक गीतों के रूप में जनमानस में प्रचलित है। श्रीमती कमला रत्नम के अनुसार 'लोकगीत मानव समाज के शैशव की उपज है। दिखावे से कोसों दूर तथाकथित प्रगति की पकड़ से पहले मनुष्य ने अपने भावों को गीतों के माध्यम से प्रकट करना सीख लिया था। ग्रामीण अंचल के परिवेश में गांवों की मिठास भरी बोली में पककर निकले गीतों की अपनी ताजगी और मिठास कुछ और ही होती है। लोक साहित्य और लोकगीतों की भाषा सीधे धरती से उगे रसीले फल के समान होती है। लोक गीत केवल सत्य और उस सत्य से उत्पन्न जीवन के आनन्द की अभिव्यक्ति के ही योग्य है। छल छद्म के लिए उनमें कोई स्थान नहीं हैं और यही उसकी विशेषता और अर्थवत्ता है।'[8]

आलमजी द्वारा रचित हरजस जांभाणी लोक के कंठों के हार हैं। इनमें लोकरंजन के साथ-साथ लोकमंगल और जीवन के गूढ़ संदेश भी मौजूद हैं। अनेक हरजसों में गुरु जांभोजी की लीलाओं का गुणगान सरस ढंग से किया गया है। आलम जी ने लोहट घर अवतार का वर्णन एक रूपक में बांधकर सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है -

'हरि लियो अवतार, आयो घर रै पुंवार के।
धन्य लोहट रो भाग, जां घर किसन पधारिया।
धन्य तिथ धन्य ओ वार, हांसल माता लोहट पिता।
रीष ब्राह्मण ब्रह्मचार, जोति जगावै ज्योतिषी।'[9]

आलम जी की काव्य कला का महत्वपूर्ण नमूना 'रंगीला' नामक रचना मानी जाती है। रंगीलो में इस संसार की रंगबिरंगी छवि को नि:सार बताते हुए ईश्वर के साथ एकाकार करने का संदेश कई उदाहरणों प्रतीकों और रूपकों के माध्यम से दिया गया है। विषय वासनाओं और मायामोह से दूर रहकर ईश्वर भक्ति का संदेश संत साहित्य की पहचान माना जाता है। इसी बात को पुष्ट करती आलमजी की रंगीलो के उदाहरण-

'पांच बखत करि बंदगी, व्रत अमावस तीस।
देव दसुध छूटै नहीं, सहीय विसवा बीस।'[10]
'देस सुरंगो पार को, मोमीण मीत वसाय।
अख खैण वर कामणी, बैठा केल कराय।'[11]
'मिलहै पियारै साजणां, सोजे सुजाण।
चाल पियारै ब्रम्ह देस नै, ज्यौं आया रयमाण।'[12]

महाकवि आलम जी उच्च कोटि के संगीतकार भी थे इसका जिक्र हम पूर्व में कर चुके हैं। तत्कालीन समय में राजदरबारों में संगीत की प्रतियोगिताएं हुआ करती थी तथा दरबारों में विशेष संगीतज्ञों की नियुक्ति भी हुआ करती थी। कुल मिलाकर संगीत और संगीतज्ञों का सम्मान किया जाता था। भ्रमण के दौरान एक बार जांभोजी की शिष्य मंडली जैसलमेर पहुंची जहां राजदरबार में राजा ने उनका स्वागत किया। जब संगीत पर चर्चा शुरू हुई तो आलमजी और राजदरबार के संगीतज्ञों में एक प्रतियोगिता रखने का निर्णय लिया गया। इस संगीत प्रतियोगिता की ये शर्त रखी गई कि जो जीत जाएगा वह हारने वाले का गुरु होगा। जब प्रतियोगिता में आलमजी ने अपनी राग रागिनियों की मधुर तान छेड़ी तो समस्त राजदरबारी दांतों तले उंगली दबा बैठा। आलमजी ने सर्व प्रथम दीपक राग का उच्चारण कर वहां रखे दीपक जला दिए। उसके बाद मेघ मल्हार राग कर बादल बरसाए अन्त में राग बिलावल का अनूठा गायन किया जिससे पास में रखी पत्थर की शिला पिघल गई। आलमजी ने पिघली शिला में अपने मंजीरे सहित अन्य वाद्ययंत्र गाड़ दिए तथा दरबारी घमंडी गायकों को चुनौती देते हुए बोले कि मैंने तो गाड़ दिए हैं आप अपनी रागिनी से इन्हें निकालकर दिखाओ तब राजदरबार के संगीतज्ञ आलमजी के चरणों में गिर पड़े और उनके शिष्य बन गए। इस ऐतिहासिक घटना का पूरा वर्णन साहबरामजी ने अपने ग्रंथ जम्भसार में दिया है -

'आलम जेसलमेर पधारा, राज कलावंत आए सारा।
आलम से चर्चा चल गएउ, रागणियों की महिमा कहेउ।
हारे सो चेले बण ज्यावै, मूंड मुंडाय संग तेहि घ्यावै।'[13]

'आलम दीपक रागहु गावा, बिन अगनी बहु दीप जलावा।
करतही राग पत्थर पिगलावा, मजीरा तोही मांहि बगावा।
मैं गाडे तुम लेहु निकालो, नित उठो अगाडी चालौ।
आठ कलावंत उठतहि भए, आलम जी के चेले ठए।'[14]

आलम जी ने लोकानुभव एवं अपने हृदयोद्‌गारों को प्रकट करने के लिए जांभोजी और अन्य हुजूरी कवियों की तरह ही लोकभाषा राजस्थानी का प्रयोग किया। सम्पूर्ण जाम्भाणी काव्य परंपरा तत्कालीन मरूभाषा में ही रचित है। राजस्थानी लोकजीवन में रची बसी भाषा थी अत: उसी भाषा में सहज सरल अभिव्यक्ति संभव थी इसलिए आलमजी ने अपने समस्त काव्य में लोक भाषा एवं लोकशैली का विशेष ध्यान रखा है साथ ही अनेक प्रतीकों लोकोक्तियों तथा मुहावरों एवं रूपकों के माध्यम से अपने काव्य को रोचक बनाया है। जांभोजी एवं परवर्ती जांभाणी रचनाकारों की भाषा के बारे में डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने जांभाणी साहित्य और जांभोजी की भाषा के बारे में लिखा है- जांभोजी की भाषा ठेठ मरू भाषा है वह मरूप्रदेश के तत्कालीन ग्रामीण समाज की बोलचाल की भाषा है। उनकी वाणी का परिवेश गांवों के लोगों के दैनिक वातावरण का है। उनके परिचय और समझ का जो क्षितिज है उसी की सीमा के भीतर उन्हीं की बोलचाल की भाषा और शैली में जांभोजी ने अपनी वाणी मुखरित की है।'[15] इसी परम्परा का निर्वाह परवर्ती एवं हुजूरी संपूर्ण जांभाणी परम्परा के रचनाकारों ने किया है।

उपर्युक्त समस्त विवेचन से ये बात स्पष्ट हो जाती है कि जाम्भाणी काव्य परम्परा में आलमजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जाम्भाणी संगीत परम्परा को आलमजी की अमूल्य देन रही है। संगीत के साथ-साथ उच्च कोटि के कवि होना एक दुर्लभ संयोग है। उनकी रचनाओं का फलक बड़ा विस्तार लिए हुए और उज्ज्वल है। उनकी रचनाओं में गुरु जांभोजी की लीलाओं के साथ-साथ तत्कालीन समाज की दशा के दर्शन भी होते हैं। आज पांच शताब्दियों से अधिक समय बीत जाने पर भी आलम जी का काव्य और संगीत उतना ही भव्य और प्रासंगिक बना हुआ है जितना उनके समय में था और भविष्य में भी इसी तरह दु:खी मानवता का पथ प्रदर्शित करता रहेगा। उनके द्वारा उचित साखी हरजसों की स्वर लहरियां सदैव गूंजती रहेगी और वातावरण में अपनी मिठास घोलती रहेगी।

संदर्भ सूची-

1. परम भक्त श्री आलमजी- सं. किशनलाल अग्रवाल, पृ. 8
2. बिश्नोई पंथ और साहित्य- सं. डॉ. बनवारी लाल सहू, पृ. 101
3. परम भक्त श्री आलमजी-सं. किशनलाल अग्रवाल, पृ. 30
4. परम भक्त श्री आलमजी-सं. किशनलाल अग्रवाल, पृ. 31
5. परम भक्त श्री आलमजी- सं. किशनलाल अग्रवाल, पृ. 33
6. पोथो ग्रंथ ज्ञान- सं. आचार्य कृष्णानंद, पृ. 306
7. पोथो ग्रंथ ज्ञान - सं. आचार्य कृष्णानंद, पृ. 307
8. बिश्नोई लोकगीत- सं. डॉ. बनवारी लाल सहू, कमला रत्नम द्वारा लिखित भूमिका से।
9. परम भक्त श्री आलमजी-सं. किशनलाल अग्रवाल, पृ. 57
10. पोथो ग्रंथ ज्ञान - सं. आचार्य कृष्णानंद, पृ. 304
11. पोथो ग्रंथ ज्ञान - सं. आचार्य कृष्णानंद, पृ. 305
12. पोथो ग्रंथ ज्ञान - सं. आचार्य कृष्णानंद, पृ. 305
13. जंभसार भाग दो - संत साहबराम, पृ. 235
14. जंभसार भाग दो - संत साहबराम, पृ. 236
15. जांभोजी; डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 48

-डॉ. मनमोहन लटियाल
सांवतसर, बीकानेर, राजस्थान
मो.: 9999206695

मुलतान से मुरादाबाद और सिरसा से सांचौर तक-वैदिक भूमि

भगवान श्री जाम्भोजी द्वारा संस्थापित बिश्नोई पंथ को वैदिक मार्ग कहा जाता है। वैदिक काल में लोग यज्ञ करते, ज्ञानार्जन करते और वन्य जीवों के संग, वृक्षों से आच्छादित प्रदेशों में रहना पसन्द करते थे। यह बिश्नोई जीवन शैली से मेल खाता है। विद्वानों का मत है कि यह वैदिक संस्कृति सरस्वती नदी के किनारे फली-फूली थी। हम धर्मशास्त्र और इतिहास में सरस्वती नदी का उल्लेख पढ़ते हैं। कहते हैं कि प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। वहां गंगा और यमुना तो दृष्टिगोचर होती है पर सरस्वती लुप्त है। पिछले कुछ वर्षों में सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज के बाद लोगों की सरस्वती नदी के प्रति भी जिज्ञासा बढ़ी। सरस्वती नदी शोध-प्रकल्प के वरिष्ठ संशोधक एवं निर्देशक डॉ. एस. कल्याण रामन ने 'सरस्वती नदी कोष' नामक सात खंडों में प्रकाशित ग्रन्थ का संकलन और प्रकाशन किया। इन्होंने सन् 1995 में चेन्नई में 'सिन्धु-सरस्वती प्रतिष्ठान' की स्थापना की। बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति, बेंगलौर ने 'पुण्य सलिला सरस्वती' का सन् 2004 में प्रकाशन किया। जानकी नारायण श्रीमाली/ चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली ने सन् 2013 में सरस्वती की कहानी छोटी पुस्तिका का प्रकाशन किया। अमेरिका की राष्ट्रीय वैमानिकी और अन्तरिक्ष प्रबन्धन संस्थान 'नासा' के बाद भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के जोधपुर स्थित क्षेत्रीय सुदूर संवेदनशील सेवा केन्द्र ने सर्वप्रथम भू-उपग्रह छायाचित्रों से सरस्वती शुष्क प्रवाह मार्ग की खोज की। सन् 1982 में कुरुक्षेत्र में डॉ. सतीश मित्तल के नेतृत्व में 'सरस्वती शोध केन्द्र' की स्थापना की गई। सदियों से विस्मृत यह विषय पुनः चर्चित हो गया। जगह-जगह संगोष्ठियों का आयोजन होने लगा। सन् 2006 में जैसलमेर के जिला कलक्टर डॉ. के.के. पाठक ने 'सरस्वती मरू अमृता' राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया। विद्वानों ने भारतीय इतिहास के प्रस्थान बिन्दु को सुनिश्चित करने के लिए लुप्त वैदिक सरस्वती नदी की शोध का प्रस्ताव रखा। काफी शोध के बाद सभी विद्वानों ने यह निश्चय किया कि वर्तमान घग्घर नदी ही प्राचीन सरस्वती प्रतीत होती है, इसके लिए सन् 1985 में हिमाचल प्रदेश से लेकर हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात तक लगभग चार हजार कि.मी. की यात्रा की गई।

लेखकद्वय श्रीमाली जी की पुस्तक 'सरस्वती की कहानी' के अनुसार वेदों में सरस्वती को महानदी कहा गया है, यह सिन्धु नदी की माता है तथा सतलुज (शतुद्रि) व्यास (विपासा), रावी (इरावती) और चिनाव (चन्द्रभागा) आदि इसकी सहायक नदियां हैं। सबसे पहले सन् 1921 में रावी नदी के तट पर हड़प्पा में खुदाई की गई तो 'हड़प्पीय सभ्यता' प्रकट हुई। सन् 1922 में सिंधु नदी के तट पर मोहनजोदड़ो में खुदाई की गई तो सिन्धु घाटी सभ्यता जैसी समृद्ध सभ्यता से विश्व परिचित हुआ। राजस्थान के कालीबंगा में खुदाई से प्राप्त सभ्यता के अवशेषों को देखकर सारा संसार चमत्कृत हो उठा, इस खुदाई से 40 से 20 हजार वर्ष पुरानी सभ्यता का पता चलता है। कालीबंगा 'सरस्वती सभ्यता' के महान केन्द्र के रूप में जाना गया।

इन उपरोक्त पुण्यभाग शोधकर्ताओं के कठिन परिश्रम से सरस्वती नदी के प्राचीन मार्ग और इसके किनारे बसे नगरों की खोज शुरू हुई। ऋग्वेद में देवी सरस्वती जो वाणी की अधिष्ठात्री है, सरस्वती नदी और सरस्वती नगरी का उल्लेख मिलता है। इसे उपजाऊ भूमि वाली, सदानीरा, जन-जन की आश्रयस्थली, उत्तम ऋषियों, सिद्धों और देवों के निवास करने वाली बताया गया है। भौगोलिक विश्वकोश (नन्दलाल डे) में इस नगरी को भौगोलिक रूप में सत्यापित किया गया है। श्री डेन, सी.एस. ओल्डहेम की शोध के आधार पर इस नगरी को हरियाणा के वर्तमान नगर सिरसा के रूप में चिन्हित किया है। अन्य अंग्रेज विद्वानों ने भी इसकी पुष्टि की हैं वे इसे सरस्वती पत्तन मानते हैं। महाकवि कालिदास ने इसे प्रसिद्ध वेदपीठ बताया है। महाकवि माघ ने इसे पवित्र ब्राह्मणों की नगरी तथा महाभारत ने सारस्वत ऋषि की नगरी कहा है।

जैनों के 'सरस्वतीगच्छ' और फारसी इतिहासकार फरिश्ता (1560-1620) के ग्रन्थ 'रिवत्ता-ए-सरसुती' में इस नगरी का वर्णन है। यह नगरी वेदकाल से निरन्तर

युग-युग तक सार्थक सारस्वत पीठ बनी रही। किन्तु अल-बीरूनी (973-1048ई.) के अनुसार महमूद गजनवी ने 10वीं शताब्दी में इसे ध्वस्त कर दिया। फलतः यहां के संस्कृत विद्वान कश्मीर और वाराणसी आदि सुदूर केन्द्रों की ओर पलायन कर गये। मुस्लिम यात्रियों और इतिहासविदों से भी सिरसा नगर की पहचान 'सरस्वती नगर' के रूप में हुई है। फरिश्ता के अनुसार महमूद गजनवी और मौहम्मद गौरी (1150-1206) के निर्णायक युद्ध भटिंडा और आसपास हुए। प्रसिद्ध मुस्लिम यात्री इब्न-बतूता (1304-1369 ई.) मुल्तान से अबोहर और ओढ़ां (प्राचीन नगर अयोधन) होते हुए सरसुती नामक विशाल नगर में पहुंचा, जहां से हाँसी होते हुए वह दिल्ली गया। तैमूर लंग (1336-1405) अपनी सेनाओं के साथ अयोधन से प्रयाण करके कोटली होते हुए सुरसती नगर पहुंचा। तैमूर ने सुरसती में जनसंहार किया और वहां से फतेहाबाद और टोहाना (प्राचीन बौद्ध अवशेष नगर) पहुंचा। फिरोजशाह भी एक बार मुल्तान से अयोधन होते हुए सुरसती पहुंचा।

इन मध्यकालीन प्रमाणों से प्रमाणित होता है कि सरस्वती नगर, सिरसा ही था। ब्रिटिश अभिलेखों में सरस्वती के खण्डहरों के पास 'सरसुत' नामक एक छोटा-सा ग्राम था। जे. विल्सन ने सिरसा के आसपास छः सौ थेड़ों (पुरास्थलों) की पहचान की तथा लिखा कि हमें यहां सभ्यता की स्थापना-उत्कर्ष और विध्वंस के प्रमाण मिलते हैं। यह भारत के प्राचीनतम स्थानों में से एक है। ब्रिटिश पुरातत्ववेता सर अलग्जेंडर कलिंघम (1814-1893) के अनुसार एक स्थानीय जनश्रुति है कि सरस्वती नगर का 21 बार ध्वंस हुआ है। सरस्वती नगर, सभ्यता के हृदय देश में स्थित है। इसके चारों ओर स्थित कालीबंगा, बणावाली, सीसवाल, भादरा, नोहर, सूरतगढ़, मानसा (ऋग्वेदिक नगर मानुस), अग्रोहा, रोड़ी, गोगामेडी-गोरखटीला, टोहाना से इसके केन्द्रीय महत्व का पता चलता है। बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि सरस्वती विशाल नदी के रूप में प्रवाहित होकर समुद्र में मिलती थी, व्यापारी समुद्र तक जाने के लिए इस नदी मार्ग में नौकायन करते थे।

जब विद्वानों ने सरस्वती नदी के प्रवाह मार्ग की खोज की तो उन्हें सात लाख से एक लाख वर्ष पूर्व के अवशेष प्राचीन सरस्वती और लवणावती (लूणी नदी) की घाटियों में फैले हुए दिखाई दिए। अधिकांश पुरास्थल हरियाणा के हिसार, फतेहाबाद, सिरसा तथा राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जोधपुर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलों में मिले। 1980 तक ऐसे 1400 पुरास्थलों का सर्वेक्षण किया गया जो बहावलपुर (पाकिस्तान) से लेकर हरियाणा- राजस्थान के इन जिलों को जोड़ता हुआ उत्तरप्रदेश तक गया। यह बेहद रोचक और चौंकाने वाली बात है कि यह वही क्षेत्र है जहां बिश्नोई समाज के अधिकांश लोग निवास करते हैं। महत्वपूर्ण पुरास्थल सिरसा के आसपास का क्षेत्र तथा हनुमानगढ़, पीलीबंगा, कालीबंगा, रंगमहल, सूरतगढ़, खाजूवाला लूणकरणसर, डीडवाना, पोखरण, पचपदरा, मेड़ता, पीपाड़, लूणी, कल्याणपुर, शिव और पाकिस्तान के बहावलपुर से सिन्ध क्षेत्र से होते हुए असुरराज हिरण्यकश्यप की राजधानी, प्रह्लाद की नगरी मुल्तान तक जाते हैं। अजीब संयोग है यह क्षेत्र मुल्तान से लेकर हरियाणा-राजस्थान के इन जिलों से होता हुआ पश्चिमोत्तर उत्तर प्रदेश तक जाता है। बिश्नोइयों को प्रह्लादपंथी भी कहा जाता है, प्रह्लाद को दिए वचनों के कारण ही भगवान श्री जाम्भोजी का अवतार हुआ था। मुल्तान से लेकर मुरादाबाद और सिरसा से सांचौर तक का जो क्षेत्र विशेषज्ञों ने चिन्हित किया है, वह वैदिक सभ्यता और संस्कृति का लाखों वर्षों से साक्षी रहा है जिसके केन्द्र में सरस्वती नदी रही है। इन पिछले लाखों वर्षों में इस क्षेत्र ने अनेकों बार प्रलय और सृजन को देखा होगा और सृजन के अवसर पर प्रत्येक बार किसी अवतार ने यहां वैदिक संस्कृति का संस्थापन किया होगा। कलियुग में इस महत्ती जिम्मेवारी को श्री जाम्भोजी ने उठाया। आज से दो हजार वर्ष पूर्व जब यज्ञ हिंसा का कारण सिद्ध होने लगे तो महात्मा बुद्ध आदि ने इनका बहिष्कार किया जिसके फलस्वरूप इस धरती के यज्ञ की अग्नि बुझ सी गई। सरस्वती नदी के सूखने का जो समय माना गया है वह भी लगभग दो हजार वर्ष पूर्व का है। इस नदी के तट पर महर्षि याज्ञवल्क्य, दधीचि, परशुराम, पाराशर और कण्व के आश्रम थे। सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'वैदिक सम्पत्ति' में उल्लेख है कि सरस्वती (सिरसा) नगर के निवासी महर्षि कण्व ने मिश्र देश के मलेच्छों को संस्कृत सिखायी थी, जहां उनके दस हजार शिष्य थे। इन्हीं कण्व के आश्रम में शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था, जो

दुष्यन्त की पत्नी और चक्रवर्ती सम्राट भरत की माता थी। ऐसी देवभूमि पर जब यज्ञों का स्वरूप भ्रष्ट होने लगा और भारत में बढ़ते बौद्ध धर्म के प्रभाव से यज्ञ लगभग बन्द ही हो गए थे, तब लगता है सरस्वती ने अपनी धारा को समेट लिया था और यह क्षेत्र वीरान हो गया था, सदानीरा यह नदी लुप्त हो गई और घग्घर आदि के रूप में बरसाती नदी बन कर रह गई।

सदियां बीतने के बाद श्री जाम्भोजी ने इस क्षेत्र में अवतार लिया और यज्ञ की अग्नि को पुनः प्रज्ज्वलित किया। बिश्नोई पंथ प्रवर्तन के बाद के काल में जब हम देखें तो जिस क्षेत्र की हम चर्चा कर चुके हैं। पश्चिमोत्तर उत्तर प्रदेश, अखण्ड पंजाब और राजस्थान के बिश्नोई निवासित परगनों में एक साथ हजारों घरों में यज्ञ हवन होने लगा। बहावलपुर का क्षेत्र पाकिस्तान में जाने के बाद भी इस बाकी बचे हुए क्षेत्र में किसी उपग्रह आदि की पारदर्शी तकनीक से देखना सम्भव होता तो प्रातःकाल की वेला में बिश्नोइयों के घरों में होते हुए हवन के कारण एक साथ हजारों जगह हवन होता दृष्टिगोचर होता। उस चित्र को देखकर निश्चिय ही ऐसा लगता कि यह वैदिक सभ्यता और संस्कृति की भूमि पुनः जागृत हो गई है और सरस्वती की भी इच्छा होती अब यहां दोबारा आना चाहिए। शायद यह सब कारण बने हों तथा पुनः बहने का सरस्वती का सत्संकल्प काम कर गया हो जिसके कारण भारत पर शासन करने वाले राजनेताओं की बुद्धि में देवी सरस्वती ने निवास किया था जिसके परिणामस्वरूप पजांब के फिरोजपुर से लेकर राजस्थान के जैसलमेर तक एक नदी बहने लगी, नाम दिया गया 'इन्दिरा गांधी नहर'। यह वही क्षेत्र था जो सरस्वती के विलोपन के बाद उजड़ गया था। पुनः हराभरा हो गया और फसलें लहलाने लगीं। हिमालय का जल एक बार फिर मरूस्थल बने इस क्षेत्र को सींचने लगा।

'सरस्वती सिन्धु सभ्यता' में जहां-जहां पर पुरास्थलों की खुदाई की गई, मुख्य रूप से ये चीजें अवश्य मिलीं- पत्थर पर उत्कीर्ण खेजड़ी का वृक्ष, हवन कुण्ड, शवों को दफनाने के स्थान, बैलगाड़ी, तालाब, वर्तमान में इस क्षेत्र के गांवों में पाए जाने वाले घरों के जैसे घर, महिलाओं के आभूषण आदि। ये सब बिल्कुल बिश्नोई रहन-सहन से मेल खाते हैं। जो लोग शव दफनाने को लेकर बिश्नोइयों का सम्बन्ध मुसलमानों से जोड़ने का प्रयास करते हैं, वे कृपा ध्यान दें कि इस सभ्यता के लोग शवों को दफनाते थे जबकि मुस्लिम धर्म का आविर्भाव इसके हजारों साल बाद हुआ है। खुदाई से छोटे-बड़े, विशाल हवन कुण्ड मिलना सिद्ध करता है कि ये लोग अग्नि पूजक थे और पवित्र अग्नि में अपवित्र शव को जलाना इन्हें कदापि स्वीकार नहीं था। इसलिए ये शवों को भूमि दाग ही देते थे। **'ले काया वासंदर होमो, ज्यूं ईंधण की भारी (दोष चड़ैलो भारी)'** (सबद-86)।

गुरु जाम्भोजी ने कहा है- **'मोरा उपख्यान वेदूं।'** सबद-14। श्री जम्भवाणी को सबदवाणी, झीणीवाणी, वेदवाणी, ब्रह्मवाणी आदि से सूचित किया जाता है। ये सब वेद के सूचक हैं। जाम्भाणी संतों ने इसे पांचवां वेद भी कहा है- **'पांचवों वेद सांभळि सबद'** (अल्लूजी कविया)। वेद अनादि है, ये किसी व्यक्ति विशेष द्वारा रचित नहीं हैं। सबदवाणी में इसे अमृतवाणी भी कहा है, वेद का ज्ञान अमृतत्व प्रदान करता है। श्री जाम्भोजी के स्वधाम गमन के 288 साल बाद गुजरात में राजकोट के पास मोरवी में स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ और आश्चर्य की बात है कि उनका कार्यक्षेत्र भी यह वैदिक प्रदेश ही बना, उनके द्वारा संस्थापित 'आर्य समाज' इस क्षेत्र में खूब फलाफूला। आर्य समाज ने वैदिक शिक्षा और हवन यज्ञ का बहुत प्रचार किया है। जनश्रुति है कि एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती उत्तर प्रदेश के बिश्नोई क्षेत्र में आए और बिश्नोइयों का अचार-विचार देखकर कहा कि मैं जिस कार्य को करने निकला हूँ श्री जाम्भोजी उसे सदियों पहले कर गए। मुंशी रामलाल जी बिश्नोई सन् 1939 में लिखित पुस्तक में उल्लेख करते हैं कि आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती माने हुए वैदिक विशारद हुए और उन्होंने वेदों के विपरीत चलने वाले सभी मत- मतान्तरों का खण्डन किया, परन्तु कहीं भी या अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में बिश्नोई पंथ पर कोई भी आक्षेप नहीं किया। स्वामी दयानन्द जी जोधपुर, बीकानेर, मुरादाबाद, मेरठ, बिजनौर, इटावा आदि स्थानों में गये जहां उनका सम्पर्क बिश्नोइयों से हुआ, परन्तु कोई भी बात बिश्नोइयों की खण्डन योग्य नहीं पाई। भक्त चेतराम जी स्वामी जी से कुम्भ मेले के अवसर पर मिले थे और बिश्नोई पंथ की जानकारी दी थी जिस पर स्वामी

दयानन्द जी ने प्रसन्न होकर कहा था- 'भारतीय पुण्य भूमि में वैदिक सद्पंथ के अंकुर का ह्रास नहीं हुआ है।'

नगीना (उ.प्र.) के बिश्नोई परिवार में जन्मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी और रोहतक (हरियाणा) के पास बहुमोखरा ग्राम के जाट परिवार में जन्मे स्वामी ईश्वरानन्द जी गिरी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से वैदिक शिक्षा ग्रहण की और बिश्नोई समाज में धर्म का प्रचार-प्रसार किया। स्वामी ईश्वरानन्द गिरी वेद, व्याकरण, धर्मशास्त्र के प्रकाण्ड पंडित थे। इन्होंने सन् 1892 ई. में सबदवाणी की प्रथम पुस्तक भी प्रकाशित करवाई थी, जिस पर इन्होंने टीका भी लिखी थी। सन् 1898 ई. में इनकी प्रकाशित पुस्तक 'श्री जम्भसंहिता' में 29 धर्म नियमों पर विशद पाण्डित्यपूर्ण टीका की गई है। स्वामी ब्रह्मानन्दजी भी वेदों के बहुत बड़े विद्वान थे। इन्होंने सन् 1901 ई. में श्री जाम्भोजी का जीवन चरित्र 'श्री जम्भदेव चरित्र भानु' लिखकर प्रकाशित करवाया तथा बाद में सन् 1914 में 'साखी संग्रह प्रकाश' छपवाई। स्वामी दयानन्द सरस्वती की परम्परा में हुए स्वामी रामदेव ने अनेक अवरोधों को पार करते हुए योग को प्रमुख रखते हुए वैदिक धर्म का डंका सारे विश्व में बजा दिया है, इनका भी जन्म, शिक्षा और मुख्य कर्मक्षेत्र यह वैदिक भूमि ही रही है। स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा कि कन्याकुमारी से अल्मोड़ा तक यदि एक सीधी रेखा खींची जाये तो इसका पूर्वी भाग बिल्कुल अनार्य है, असभ्य है, रंग भी काले भूतों जैसा, फिर वेद-विरोधी, पर्दा प्रथा, विधवा नारियों को जलाना आदि अनार्य प्रथाएं और पश्चिम की ओर देखो, सभ्य, आर्य, पौरुष युक्त कैसे आश्चर्य की बात है। पश्चिम भारत के भाग के पुरुष सब सुन्दर, स्त्रियां सब रूपवती गांव सब स्वच्छता के नमूने, बड़े स्वास्थ्यकर तथा समृद्ध है।

स्वामी जी का तात्पर्य यह था कि पश्चिमी भारत में आर्य संस्कृति तथा वैदिक धर्म अब भी सुप्रतिष्ठित तथा जीवन्त है, जबकि पूर्वी भारत में यह अपनी जड़ें नहीं जमा सका है। स्वामी जी के जीवनकाल में भी आसाम-बंगाल तथा पूर्वी क्षेत्र में पतनशील बौद्धधर्म के प्रभाव से तंत्र-मंत्र तथा वामाचार का काफी प्रभाव था और सनातन वैदिक परम्परा लुप्त हो चुकी थी। अत: बची-खुची इस परम्परा को देखने समझने के लिए स्वामी जी ने राजस्थान में भ्रमण किया। खेतड़ी नरेश उनके शिष्य थे और वे खेतड़ी में लम्बे प्रवास करते थे। दुर्भाग्य से स्वामी विवेकानन्द का बिश्नोई समाज से कोई सम्पर्क नहीं हुआ, उनके साहित्य में कहीं इसका जिक्र नहीं है। अगर स्वामी विवेकानन्द बिश्नोई परम्परा को देख पाते तो निश्चय ही वे प्रभावित होते और वे भी स्वामी दयानन्द सरस्वती के समान ही उद्गार प्रकट करते। बिश्नोई समाज से उनका ना मिल पाने का एक कारण यह भी रहा होगा कि बिश्नोइयों का एकांतप्रिय, सुदूर ढ़ाणी खेतों में रहना तथा अपने विशिष्ट आचार-विचार, खानपान के कारण दूसरे लोगों से दूरी बनाकर रहना। स्मरण रहे कि बिश्नोइयों की जीवनशैली वैदिक ऋषि परम्परा के अनुकूल रही है। स्मृति, पुराण आदि दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि वही वैदिक ऋषि-मुनियों का क्षेत्र है, जहाँ कृष्ण मृग स्वच्छंता से विचरण करते हैं। उपरोक्त चिन्हित क्षेत्र सिरसा से सांचौर तक है। वहां ये आपको स्वभाविक रूप से स्वच्छंद विचरण करते हुए मिलेंगे।

अभी एक सर्वेक्षण में पता चला है कि भारत के अन्य राज्यों को देखते हुए सबसे कम मांसाहार करने वाले लोगे इसी क्षेत्र में रहते हैं। दूसरे राज्यों का प्रतिशत जहाँ 80 से 98 तक है, वहीं इस क्षेत्र का प्रतिशत 30 के आसपास है। ये युगों के वे वैदिक संस्कार ही हैं जो इन लोगों को अभक्ष्य भोजन में अरूचि पैदा करते हैं।

सम्पूर्ण विश्व में भारत को पुण्य भूमि कहा जाता है। दुनिया के कोने-कोने से लोग शांति, योग, अध्यात्म की तलाश में भारत आते हैं और इस पावन भूमि भारत में भी उपरोक्त वैदिक भूमि अति पवित्र है और इस भूमि पर बिश्नोई समाज को रहने का सौभाग्य प्राप्त है। यह भूमि तो स्वाभाविक रूप से मोक्षदायिनी है। थोड़ी सी साधना ही यहाँ अनन्त फल प्रदान करती है। आवश्यकता है इस भूमि की महत्ता को पहचान कर इसका लाभ लेने की, पवित्र भूमि को शत्-शत् नमन करते हैं।

-विनोद जम्भदास कड़वासरा
गांव हिम्मतपुरा, तह. अबोहर (पंजाब)
फोन : 94176-81063

रेवाड़ी विश्वविद्यालय में वील्हो जी पर संगोष्ठी आयोजित

महान जांभाणी कवि और बिश्नोई पंथ के थंभ संत वील्होजी के 400वें गताब्दी वर्ष के अवसर पर जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर और हिन्दी विभाग, इन्दिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी के संयुक्त तत्वावधान में 15 अक्तूबर, 2016 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'संत साहित्य को वील्होजी का अवदान' विषय पर केन्द्रित इस संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के 'विवेकानन्द संगोष्ठी कक्ष' में हुआ, जिसका उद्घाटन सत्र प्रात: 10.30 से 12 बजे तक आयोजित हुआ। सत्र का प्रारम्भ हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर रामसजन पाण्डेय के स्वागत भाषण से हुआ। संगोष्ठी का बीज वक्तव्य देते हुए प्रोफेसर देवेन्द्र कुमार सिंह गौतम, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने वील्होजी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा उनकी वाणी को संत साहित्य की अमूल्य निधि बताया। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री रामसिंह बिश्नोई, आई.पी.एस. (से.नि.) ने संत वील्होजी सहित सभी जाम्भाणी कवियों पर शोधकार्य को बढ़ावा देने का आग्रह किया। जाम्भाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानंद जी आचार्य ने संगोष्ठी के आयोजन के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन का आभार प्रकट करते हुए मांग की कि वील्होजी की वाणी को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, उनकी वाणी पर शोध हेतु विश्वविद्यालय में शोधपीठ स्थापित की जाए तथा विश्वविद्यालय के किसी शैक्षणिक भवन का का नाम वील्होजी के नाम पर रखा जाए। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने उद्बोधन में संत साहित्य की सुदीर्घ परम्परा में संत वील्होजी के योगदान को अमूल्य बताया व उनकी वाणी को पथ प्रदर्शक के रूप में स्थापित किया। इस सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफेसर एम.पी. बंसल, कुलपति, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय ने कहा कि रेवाड़ी संतों की भूमि है और संत वील्होजी का जन्म इस भूमि पर हुआ, यह गौरव का विषय है। उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए रेवाड़ी शहर में स्मारक बनवाने का प्रयास करेंगे। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. मदनलाल ने कुलपति महोदय की आज्ञा से घोषणा की कि वील्होजी की वाणी विश्वविद्यालय के नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल की जायेगी, विश्वविद्यालय में जो भी नया भवन बनेगा उसका नाम वील्होजी के नाम पर रखा जाएगा, विश्वविद्यालय में वील्होजी पर शोधकार्य प्रारम्भ किया जाएगा। इन घोषणाओं का सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. जागीर नागर ने किया। संगोष्ठी के उद्घाटन से पूर्व सभी अतिथियों द्वारा पौधारोपण किया गया। इस सत्र में श्री चंद्रप्रकाश IAS, आयुक्त रोहतक का संदेश डॉ. बलबीर सिंह ने पढ़कर सुनाया।

संगोष्ठी में पौधारोपण करते कुलपति महोदय एवं अतिथिगण।

संगोष्ठी का शुभारम्भ करते स्वामी कृष्णानन्द जी एवं कुलपति महोदय।

संगोष्ठी उपस्थित विद्वतगण एवं श्रोतागण।

इस संगोष्ठी का बौद्धिक सत्र अपराह्न 12.30 से 2.00 बजे तक आयोजित हुआ। डॉ. बाबूराम, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय इस सत्र के मुख्य अतिथि थे तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. ब्रह्मानन्द पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने की। इस सत्र में डॉ. अशोक कुमार सभ्रवाल, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, डॉ. सिद्धार्थ राय अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़, डॉ. मदन सैनी राजकीय महाविद्यालय, नोखा (बीकानेर) ने विशिष्ट वक्ता के रूप में भाग लेकर वील्होजी के साहित्य पर चर्चा की। इस सत्र का संचालन डॉ. सविता ने किया।

सायं 3 से 5 बजे तक संगोष्ठी का समापन सत्र आयोजित

हुआ, जिसमें विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. मदन लाल ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. भंवर सिंह सामौर, पूर्व प्राचार्य, चुरु ने इस सत्र की अध्यक्षता की। मुख्य अभियन्ता श्री सुजानाराम बिश्नोई व श्री बलदेवाराम सहू, रामड़ावास इस सत्र के विशिष्ट अतिथि थे। डॉ. रोहताश कुमार, राजकीय महाविद्यालय, जीन्द तथा डॉ. कृषणलाल बिश्नोई, बीकानेर ने इस सत्र में विशिष्ट वक्ता के रूप में भाग लिया। इस सत्र का संचालन डॉ. अर्चना ने किया।

इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के जांभाणी साहित्य प्रेमियों के साथ-साथ दो सौ से अधिक विभिन्न महाविद्यालयों के प्राध्यापकों व शोधार्थियों ने भाग लिया तथा अनेक स्तरीय शोधपत्र भी प्रेषित किए। बाहर से पधारे प्रतिभागियों हेतु आवास व यातायात प्रबंधन में श्री रामसिंह बिश्नोई, आई.पी.एस., से.नि.; श्री छोटूराम भादू XEN से.नि.; श्री अजमेर गोदारा, महासचिव, गुरु जम्भेश्वर सेवकदल व डॉ. बलबीर सिंह सुथार, श्री सुखराम बिश्नोई, जेल अधीक्षक ने विशेष सहयोग किया।

संगोष्ठी के अन्त में जाम्भाणी साहित्य अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा उपायुक्त रेवाड़ी व मुख्यमंत्री हरियाणा के नाम ज्ञापन प्रेषित कर मांग की गई कि वील्होजी के नाम पर रेवाड़ी शहर में कोई स्मारक स्थापित किया जाए। इस संगोष्ठी में हरियाणा के जांगड़ा समाज ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

कांठ में संस्कार शिविर का आयोजित

किशोर वर्ग में संस्कार आरोपण के लिए जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर व गुरु जम्भेश्वर ट्रस्ट, कांठ द्वारा एक प्रान्तीय जांभाणी संस्कार शिविर का आयोजन श्री बिश्नोई मन्दिर बिशनपुरा, कांठ मे 12 से 14 अक्तूबर तक किया गया जिसमें 14 से 17 वर्ष की आयु वर्ग वाले कुल 56 बच्चों ने भाग लिया। शिविर में सूर्य नमस्कार, चन्द्र नमस्कार प्राणायाम योग के साथ आचार्य कृष्णानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा प्रतिदिन हवन किया गया। कार्यक्रम के मध्य जो सत्र चले उनमें स्वामी प्रणवानन्द जी, हरिद्वार; श्री ऋषिराज सिंह, गुजरात; श्री संजीव कुमार, हिरनपुरा; डॉ. ओमराज सिंह, पट्टीवाला; श्री दिनेश पहलवान, हनुमान अखाड़ा, कांठ; श्री जितेन्द्र कुमार कांठ, श्री योगेन्द्र कुमार मुरादाबाद, श्री राजवीर सिंह बिश्नोई महमूदपुर माफी आदि के प्रवचन हुए। शिविर के समापन पर स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने सबको आशीर्वाद दिया और एक शिक्षित नागरिक बनने, भगवान जम्भेश्वर जी के 29 नियमों को याद करने और पालन करने के लिए आह्वान किया। श्री सी.पी. सिंह, इंस्पेक्टर दिलावर सिंह, कुंवर सुरेन्द्र सिंह बिश्नोई के अतिरिक्त ट्रस्ट के सभी सदस्यों का व बिश्नोई समाज का खानपान की व्यवस्था व प्रतिभागियों के रहन-सहन में भरपूर सहयोग रहा।

-राजवीर बिश्नोई

डी.सी.एम. इंटर कॉलेज, कांठ

संस्कार शिविर में बच्चों को प्रमाण-पत्र देते स्वामी राजेन्द्रानन्द जी।

शिविर कक्षा में उपस्थित बच्चे व स्वामी कृष्णानन्द जी।

बिश्नोई छात्रावास में कम्प्यूटर लैब व पुस्तकालय का शुभारम्भ

बाड़मेर: शहर के विष्णु कॉलोनी में स्थित बिश्नोई छात्रावास में 23 सितम्बर को भामाशाहों के सहयोग से कम्प्यूटर लैब व पुस्तकालय का शुभारम्भ किया गया। पुस्तकालय का शुभारम्भ करते हुए मुख्यातिथि जिला परिषद के मुख्य लेखाधिकारी मंगलाराम बिश्नोई ने कहा कि विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग कर अपना बौद्धिक विकास करे तथा शैक्षिक गुणवता में वृद्धि करे। इस अवसर पर उन्होंने पुस्तकालय में पुस्तकें भी भेंट की। कार्यक्रम की अध्यक्षता चेयरमैन मार्केटिंग धोरीमन्ना गोरधनाराम कड़वासरा ने की। प्रोफेसर आदर्श किशोर जाणी विशिष्ट अतिथि थे। छात्रावास के कम्प्यूटर लैब में ढाका यूथ ग्रुप, भजनलाल जांगू, सुभाष पुनिया बाड़मेर टूल्स, प्रकाश गुल्ले की बेरी, बिहारी लाल नोखा द्वारा एक-एक कम्प्यूटर सेट भेंट किए गये। साथ ही इस दौरान कई भामाशाहों ने पुस्तकालय को पुस्तकें व कम्प्यूटर लैब के लिए प्रिंटर, कुर्सी टेबल भेंट करने की घोषणा की।

अबोहर (पंजाब) में बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस मनाया

531वां बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस बहुत ही धूमधाम व हर्षोल्लास से बिश्नोई मन्दिर अबोहर में मनाया गया। 22 अक्टूबर को रात्रि जागरण मेहराणा धोरा के महंत मनोहरदासजी शास्त्री ने लगाया। 23 अक्टूबर कार्तिक वदि अष्टमी को प्रात: हवन, पाहल के उपरांत ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक श्री सुनील जाखड़ थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता सांचोर के लोकप्रिय विधायक श्री सुखराम बिश्नोई ने की, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि हनुमानगढ़ की एएसपी श्रीमती निर्मला बिश्नोई, एडीजे लुधियाना श्री राजेश कड़वासरा, डिप्टी ब्रिगेड कमांडर श्री राज बिश्नोई, खालसा कालेज की चेयरपर्सन श्रीमती हरबक्स कौर थे। बिश्नोई सभा पंजाब प्रधान श्री गंगाबिशन भादू ने स्वागत संबोधन में अतिथियों, गणमान्य लोगों और श्रद्धालुओं का स्वागत करते हुए सभी को बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए बताया की आज से 35 वर्ष पूर्व सन 1981 में सर्वप्रथम अबोहर बिश्नोई मन्दिर में बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस मनाना शुरू किया था। स्वागत सम्बोधन पश्चात पधारे हुये अतिथियों के अभिभाषण हुये जिसमें निर्मलाजी ने समाज में फैले हुए नशे रूपी कोढ़ को समाप्त करने की जरूरत बताई व इसके लिये कदम उठाने के लिये अपील की। लोकप्रिय विधायक श्री सुखराम जी ने जाम्भाणी परम्परा पर बोलते हुये वर्तमान समय में समाज में शिक्षा, संस्कार सिंचन, जैविक खेती व पर्यावरण संरक्षण, गोरक्षा की महत्ती आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मैं एक दिन पूर्व ही इस क्षेत्र में आ गया था और कई गाँवों का भ्रमण किया तो मैंने पाया की लोग फसलों में अंधाधुँध रासायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं, इससे बीमारियों का प्रकोप बढ़ रहा है जो लोगों के जीवन को दुष्कर बना रहा है, जमीन, हवा, पानी आदि सब प्रदूषित हो गया है। मनुष्य की औसत आयु भी कम हो गई है, मुझे यहाँ बताया गया की गांव भर में सतर साल से अधिक आयु वाले बहुत कम मिलते है। जब से मनुष्य सुविधाभोगी होकर हाथों से कार्य करने में आलस्य करने लगा, वह भी उसके स्वास्थ्य के लिये खतरनाक साबित हुआ है। उन्होंने बताया कि हमें घरों में देसी किस्म की गायें रखनी चाहिए और उन्होंने देसी गायों के दूध, घी, मूत्र आदि की खासियत के बारे में भी बताया। सुखरामजी ने कहा की प्रकृति के साथ सामंजस्य करके, उसे बिना कोई नुकसान पहुँचाये, उसका पोषण करते हुए जीवन जीना ही तो जाम्भाणी परम्परा है और हमें इस परम्परा की रक्षा करनी है। मुख्य अतिथि श्री सुनील जाखड़ ने बिश्नोई धर्म की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे एक उत्तम जीवन शैली बताते हुए कहा कि इसमें ही विश्व का कल्याण निहित है, उन्होंने श्रीजाम्भोजी के बताए मार्ग पर चलकर पर्यावरण प्रदूषण मुक्त संसार बनाने का आह्वान किया उन्होंने कहा कि श्रीजाम्भोजी का उपदेश किसी समुदाय विशेष के लिये नहीं हैं वह तो चराचर जगत के लिये हैं, आज विश्व में पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिये बड़े-बड़े

समारोह को संबोधित करते मुख्य अतिथि श्री सुनील जाखड़।

समारोह को सम्बोधित करते अध्यक्ष श्री सुखराम बिश्नोई।

सम्मेलन हो रहे हैं पर श्रीजाम्भोजी ने तो हमें पांच सौ साल पूर्व ही सचेत कर दिया था, हमें यह देखकर संतोष भी होता है कि विश्व कोई तो ऐसा समाज है जो पर्यावरण संरक्षण के लिये समर्पित है। एडवोकेट रामस्वरूप जी ने बिश्नोई समाज को अल्पसंख्यक सूची में शामिल करवाने के लिये प्रयास करने की बात कही।

डिप्टी ब्रिगेड कमांडर राज बिश्नोई ने समाज के बच्चों को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते हुये यथासम्भव सहयोग का विश्वास दिया। एडीजे राजेश कड़वासरा ने समाज के युवाओं को सुन्दर भविष्य निर्माण करने के लिये लगन और निष्ठा के साथ कठिन परिश्रम करने पर बल दिया। अरविन्द गोदारा ने क्षेत्र में शिक्षा के पिछड़ेपन को इंगित करते हुए स्थानीय विधायक से अबोहर में राजकीय महाविद्यालय व खुईयां सरवर में राजकीय चिकित्सालय खोलने का अनुरोध किया जिसे विधायक ने सरकार आने पर पूरा करने का आश्वासन दिया। पंजाब के जीव रक्षा बिश्नोई सभा प्रधान आर.डी. बिश्नोई ने नवम्बर में चंढीगढ से शुरू होकर पंजाब के सभी जिलों से होती हुई मेहराणा धोरा पहुँचने वाली तेरह दिवसीय 'शहीद अमृतादेवी बिश्नोई पर्यावरण जनचेतना यात्रा' के बारे में बताया। कार्यक्रम को साहबराम बिश्नोई, अक्षय डेलू, एडवोकेट राजाराम थालौड़ ने भी सम्बोधित किया। मेहराणा धोरा स्थित झमकू देवी स्कूल के बच्चों ने खेजड़ली-बलिदान नाटक प्रस्तुत किया। अतिथियों ने अपने कर-कमलों से शिक्षा, खेल आदि में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने बच्चों एवं सेवक दल के सदस्यों को पुरस्कार वितरण किया। मंच संचालन विनोद जम्भदास ने किया। बिश्नोई समाज

की चिर प्रतिक्षित मांगों- 'शहीद अमृता देवी बिश्नोई के नाम पर राज्य स्तरीय पुरस्कार शुरू करने, खेजड़ली-बलिदान का पाठ स्कूली पाठ्यक्रम में लागू करने, किसी विश्वविद्यालय में श्रीजाम्भोजी के नाम पर पीठ स्थापित करने, बिश्नोइयों को ओबीसी वर्ग में शामिल करवाने आदि से मुख्य अतिथि को अवगत करवाया गया तथा वर्तमान सरकार द्वारा खेजड़ली शहीद स्मारक बनाए जाने पर सरकार का हृदय से आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर बिश्नोई सभा पंजाब के पूर्व प्रधान सुरेन्द्र गोदारा, सेवक दल प्रधान राधेश्याम गोदारा, जिला सभा श्रीगंगानगर के प्रधान सुभाष कड़वासरा, स्वामी कृष्णदास फलाहारी, स्वामी मनमोहनदास हिम्मतपुरा, रमेश राहड़, रमेश खीचड़, संजय डेलू, बुधराम भाम्भू, कुलवंत बागड़िया, प्रेम बागड़िया, विष्णु गोदारा, अमित गोदारा, विष्णु थापन, सुशील बैनीवाल, राममूर्ति भादू, विष्णु धत्तरवाल, रामकुमार डेलू, हवासिंह पूनियां, सलौद बिश्नोई, सतपाल थापन, एडवोकेट कृष्णलाल, संजय भादू, विजेन्द्रपाल, नवीन पूनियां, सरपंच सुशील कड़वासरा, रवि गोदारा, राजेंद्र डेलू आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

- अरविंद गोदारा
मैनेजर एक्सिस बैंक, मलोट

कालवास में गुरु पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

15 अक्तूबर, 2016 को श्री बिश्नोई संत आश्रम (कुटिया) कालवास जिला हिसार में स्वामी भागीरथ दास आचार्य जाजीवाल धोरा (जोधपुर) के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। शाम को श्री गुरु जमभेश्वर भगवान के विशाल जागरण का आयोजन किया गया। जागरण की शुरूआत स्वामी भागीरथ दास आचार्य ने ज्योति प्रज्ज्वलित कर की व गुरु महाराज की आरती के साथ ही जागरण आरम्भ हुआ। बाद में सन्त राजू राम जी, सन्त सुदेवानन्द जी, सन्त श्री सुखदेव मुनि व आशूराम गायणाचार्य ने गुरु महाराज की साखी, लूर व भजनों से सबको भाव-विभोर कर दिया। जागरण सुनने वाले श्रोताओं की संख्या इतनी अधिक थी कि डेढ़ एकड़ में बना पण्डाल भी छोटा पड़ गया। श्रद्धालुओं के देखने व सुनने में असुविधा न हो इसके लिए जगह-जगह स्क्रीन की व्यवस्था की गई। शाम 5 बजे से ही लोग अपने-अपने घरों से दूध लाने लगे और आठ बजे तक 15 क्विंटल दूध कुटिया में आ गया। फिर खीर बननी आरम्भ हुई। खीर बनाने में राजस्थान से आए सेवक तथा नरसीराम, सीताराम, बीट्टू, कृष्ण, संदीप आदि सेवकों का विशेष सहयोग रहा। रात 12.15 बजे स्वामी भागीरथ दास आचार्य ने खीर वितरण की। सबसे पहले खीर श्रीमती जसमा देवी धर्मपत्नी बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल ने ली। यह कार्यक्रम सुबह चार बजे तक चलता रहा। महिला व पुरुषों की अलग-अलग लाइनों की व्यवस्था की हुई थी। इस खीर उत्सव में लगभग 15000 श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

गुरु पूर्णिमा पर आयोजित जागरण में उपस्थित संतगण एवं श्रद्धालुगण।

सुबह श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की सबदवाणी का विशाल हवन हुआ तथा पाहल का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने स्वामी जी के हाथों से पाहल ग्रहण किया। बाहर से आए हुए श्रद्धालु जैसे पंजाब, दिल्ली, राजस्थान आदि के ठहरने व भोजन की व्यवस्था श्री गुरु जम्भेश्वर स्कूल के सभी स्टाफ कर रहे थे। इस पूरे उत्सव की व्यवस्था बनाने में श्री संजय लाम्बा सरपंच, श्री राधेश्याम लाम्बा व विकास लाम्बा, दलीप गोदारा, बलवन्त लोहमरोड़ तथा समस्त कालवास निवासियों ने सहयोग किया। व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए कालवास के सरपंच संजय लाम्बा ने सभी का आभार प्रकट किया।

-संदीप गोदारा
कालवास, हिसार (9466371529)

आवश्यक सूचना

अमर ज्योति के जो आजीवन सदस्य दिवंगत हो चुके हैं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे इसकी सूचना अमर ज्योति कार्यालय को दें तथा अमर ज्योति की नवीन सदस्यता ग्रहण कर लें ताकि अमर ज्योति का ज्ञान दीप उनके घर-आंगन में जलता रहे। शीघ्र ही ऐसे आजीवन सदस्यों की अमर ज्योति भेजी जानी बंद हो जाएगी जो दिवंगत हो चुके हैं।

-सम्पादक

VIGYAN DHARA

A Modern Science Gurukul for IIT/NEET

NEET/IIT-JEE

11th & 12th

2 Yrs. Residential Program

HOSTEL FACILITY

TRANSPORT FACILITY

Result NEET-2016

KARANDEEP
ROLL NO. 85802082

SUMIT
ROLL NO. 82102618

AKSHAT GOYAL
ROLL NO. 81005792

ANKIT BENIWAL
ROLL NO. 82104859

RADHIKA JINDAL
ROLL NO. 60501117

AKHIL

NITISH
ROLL NO. 85800370

RUHANI
ROLL NO. 60502210

PALLVIKA
ROLL NO. 81420113

PARMOD YADAV
ROLL NO. 82103032

 # 197-C, LAJPAT NAGAR, HISAR ✆ 9812073815-16

KRISHNIA CLASSES

A Venture of VIGYAN DHARA

हरियाणा का सर्वश्रेष्ठ कोचिंग संस्थान

HSSC | HTET | VLDD | B.Sc.Agri. | AIPVT

RESULT-2016

1st Rank GENERAL

PARMOD YADAV
Roll. No. 14663
B.Sc. Agri. (4Yr)

1st Rank GENERAL

NEERU
Roll. No. 2503
B.Sc. Agri. (6Yr)

1st Rank GENERAL

SUMIT
Roll. No. 1413
VLDD

DIRECTORS

Dr. Surender Poonia

Mr. N.S. Panghal

Mr. Raman Sharma

Rishi Nagar, Hisar.
Mob : 97280-82170-72

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

AN ISO 9001:2008
CERTIFIED INSTITUTE

सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता तथा
परिणाम को समर्पित संस्थान

राजेश बिश्नोई
(मानद् निदेशक)

ग्राम - चन्दनपुरा
तहसील - लोहावट (जोधपुर)
मो. 9828619248

- पिछली सभी भर्ती परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाला राजस्थान का एकमात्र संस्थान
- स्थायी, चयनित, लोकप्रिय व अनुभवी विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा गहन अध्यापन
- बेहतर प्रबन्धन
- सर्वोत्कृष्ट एवं वैज्ञानिक रीति से तैयार महत्त्वपूर्ण सारगर्भित नोट्स
- सीमित सीटें
- उचित फीस में सम्पूर्ण कोर्स
- सप्ताहिक OMR शीट्स पर टेस्ट तथा OMR मशीन द्वारा परिणाम
- ऑनलाईन टेस्ट की सुविधा भी उपलब्ध
- पुरस्कार
- निःशुल्क रिविजन कोर्स

IAS | RAS
व्याख्याता | II Grade शिक्षक
REET | SI/कॉन्स्टेबल
Jr. Accountant | पटवार
SSC/BANK | ग्राम सेवक
रेलवे | LDC

आदर्श क्लासेज™

सिटी बस स्टेण्ड, जालोरी गेट चौराहा, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2626226, मो. 9828268309, 9828860121
website : www.adarshclasses.in • e-mail : adarashclasses@gmail.com

CreativePoint

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 नवंबर, 2016 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।